# शिक्षा की खोज में

# शिक्षा की खोज में

अनुवादक

हरिश्चन्द्र विद्यालङ्कार

प्रकाशक

नेशनल एकाडमी

६, अंसारी मार्केट, दरियागंज, दिल्ली

प्रकाशक
नेशनल एकाडमी,
९, अंसारी मार्केट, दरियागंज, दिल्ली

प्रथम संस्करण : नवम्बर १९६४
मूल्य : ७५ पैसे

मुद्रक
नया हिन्दुस्तान प्रेस,
चांदनी चौक, दिल्ली-६

# विषय-सूची

## दो शब्द

फर्वरी १९६३ में बलगारिया से अफ्रीकी छात्रों की विदाई के कारण, साम्यवादी देशों में उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले बहुसंख्यक छात्रों की ओर ही केवल नहीं, अपितु वहाँ बहुत-सों के अनुभवों में आईं कठिनाइयों तथा निराशाओं की ओर भी, फिर से लोगों का ध्यान आकृष्ट हो गया। अपना अध्ययन समाप्त करने से पूर्व ही साम्यवादी 'गुट' को छोड़ने वाले ये पहले विदेशी छात्र नहीं हैं। सोवियत संघ, हंगरी, चेकोस्लोवाकिया तथा रूमानिया से विविध राष्ट्रों के छात्र पहले भी इसी प्रकार विदा हो चुके हैं। परन्तु वे चाहे जिस देश को छोड़कर गए हों, उनके अनुभवों में पर्याप्त समानता है। इन अनुभवों में से कुछ विशेष-विशेष का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है।

# आधार सामग्री

जिन छात्रों के अनुभव इस लेखमाला में प्रस्तुत किए गए हैं, उन सभी ने अपनी कहानियाँ विविध प्रकाशनों तथा भेंटों में सुनाई थीं। इस लेखमाला के प्रमुख आधार इस प्रकार हैं :—

आडेरोग्बा अजाम्रो—यह नाइजीरियाई तथा ब्रिटिश कम्यूनिस्ट पार्टी का एक भूतपूर्व सदस्य यूरोप की अपनी एक व्यावसायिक यात्रा के समय उड़ा लिया गया था। इसने पूर्वी जर्मनी में छः वर्ष बिताये—इस अवधि में यह बॉल्जन के 'इण्टरनेशनल सौलिडैरिटी स्कूल" 'ड्रेस्डन टैक्निकल हाईस्कूल' तथा 'लीपज़िग युनिवर्सिटी' में अध्ययन करता रहा। इसकी पुस्तक "शेर की पीठ पर" (On the Tiger's Back) १९६२ में 'जार्ज एलेन एण्ड अनविन, लन्दन' ने प्रकाशित की थी।

एंड्रयू आर. अमर—यह एक युगांडाई है जो १९५९ में स्वयं अपनी किसी जुगत से मास्को जा पहुँचा था और वहाँ उसको 'मास्को युनिवर्सिटी' के आयुर्विज्ञान संकाय में प्रवेश मिल गया था। यहाँ इसने विश्वविद्यालय का एक वर्ष पूरा किया। इसकी पुस्तक "मास्को में छात्र",

(Student in Moscow) का प्रकाशन 'एम्परसैंड लिमिटेड, लन्दन' ने १९६१ में किया था।

महदी इस्माईल—इस सोमालियाई को प्रेग-स्थित 'हाईस्कूल ऑव इकोनॉमिक्स' में साढ़े तीन वर्ष बिता लेने के पश्चात् चेकोस्लोवाकिया से, दिसम्बर १९६१ में निकाल दिया गया था। इसकी पुस्तक 'विद्रोही प्रेग में' (Rebel in Prague) को एम्परसैण्ड लिमिटेड, लन्दन ने १९६२ में प्रकाशित किया था।

एवरेस्ट मुलेकेजी—यह युगांडाई १९५९ में मास्को युनिवर्सिटी में प्रविष्ट हुआ था, वहाँ से यह एक वर्ष के पश्चात् 'वाशिंगटन स्टेट युनिवर्सिटी' में प्रविष्ट होने चला गया। इसका "मास्को में मेरा छात्र-जीवन" (I Was a 'Student' in Moscow) शीर्षक लेख 'रीडर्स डाइजेस्ट' के ब्रिटिश संस्करण में नवम्बर १९६१ में प्रकाशित हुआ था।

चुक्वुएमेका ओकौंक्वो—इस नाइजीरियाई ने कनाडा के किसी विश्वविद्यालय से स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की थी, बाद में यह १९५७ से १९६० तक 'मास्को युनिवर्सिटी' में पढ़ा। सोवियत संघ में इसके अनुभवों के सम्बन्ध में एक लेखमाला लोगोस के 'संडे टाइम्स' में अक्तूबर तथा नवम्बर १९६० में प्रकाशित हुई थी।

एन्थोनी जी. ओकौत्वा—नाइजीरिया के गवर्नर जनरल डा० एजिकिवे (Dr. Azikiwe) का बहनोई है। इसने मास्को के नये विश्व विद्यालय 'फ्रेंडशिप युनिवर्सिटी' में तीन महीने गुजारे और फर्वरी १९६१ में यह लन्दन में रूसियों का काम करने के लिए वहाँ से चला आया था। 'मास्को ने मुझे अफ्रीका में विद्रोह करने का प्रशिक्षण दिया' शीर्षक इसका लेख (Moscow Trained Me for Revolt in Africa) लन्दन के 'संडे टेलिग्राफ़' में १६ जुलाई १९६१ में प्रकाशित हुआ था।

# भूमिका

जब युगांडा के एवरेस्ट मुलेकेजो को यह बताया गया कि मास्को यूनिवर्सिटी में अध्ययन करने के लिए उसको एक छात्रवृत्ति का दिया जाना स्वीकार कर लिया गया है, तब उस पर जो प्रतिक्रिया हुई उसको उच्चशिक्षा-प्राप्ति के लिए संसारव्यापी भूख का प्रतीक माना जा सकता है :

"हमें यह विश्वास हो ही नहीं सकता था कि हमारे साथ यह होगा। शिक्षा तो अफ्रीकियों के लिए परमात्मा के चमत्कार-सरीखी वस्तु है। अपने लिए तथा अपने देशों के लिये प्रतिष्ठा प्राप्ति का एकमात्र मार्ग शिक्षा-प्राप्ति है।..."

देर से बहुत से देश विदेशी छात्रों को सुविधायें प्रदान करते आ रहे हैं। विदेशी छात्रों को सुविधाएँ देने वाले देशों की सूची में १९५६ में एक उल्लेखनीय नाम बढ़ा। सोवियत संघ ने पहली बार (इसी वर्ष) विदेशी छात्रों को लेना शुरू किया। इसके बाद दूसरे साम्यवादी देशों ने भी वैसा ही किया।

विदेशी छात्रों का सोवियत संघ में अन्तःप्रवेश धीरे-धीरे शुरू हुआ; फिर तो बाढ़ ही आ गई। आज सोवियत संघ तथा दूसरे साम्यवादी देशों में ६५ राष्ट्रों के लगभग १६००० छात्र शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

संयुक्तराज्य अमरीका, ब्रिटेन, पश्चिमी जर्मनी तथा फ्रांस के उच्च शिक्षा-संस्थानों में दूसरे देशों के छात्रों की अनुमानित संख्या १,५७,००० की तुलना में यह भले ही बहुत साधारण-सी संख्या है। फिर भी पहले की सोवियत नीति से तो यह पर्याप्त प्रगति की सूचक संख्या है और विकासमान राष्ट्रों की प्रगति में इसका योगदान हो सकता था।

परन्तु दुर्भाग्य की बात यह है कि पोलैंड के अतिरिक्त शेष साम्यवादी देशों ने जो सुविधाएँ प्रदान की हैं तथा शिक्षा का जो स्तर उन्होंने रखा है—वे आशानुकूल सिद्ध नहीं हुए हैं। इस पुस्तक में आशाओं तथा वास्तविकताओं में विद्यमान अन्तरों का वर्णन उन छात्रों ने किया है जो सोवियत संघ, पूर्वी यूरोप तथा चीन में अध्ययन कर आए हैं।

# १

# छात्रवृत्ति का प्रलोभन

साम्यवादी देश जो शिक्षा प्रदान करते हैं तथा जो लाभ एवं सुविधाएँ वे पेश करते हैं, उनके कई पहलुओं पर वे बहुत बल देते हैं; जिस विधि से वे अपनी छात्रवृत्तियों का प्रचार करते हैं उससे तो सचमुच ऐसा लगता है कि उन्होंने इस विषय में दूसरे देशों से प्रतियोगिता की भावना शुरू कर दी हो।

इस पुस्तक में जिन छात्रों के नाम दिए गए हैं उनका अनुभव यह था कि अत्यधिक प्रबल अनुरोध राष्ट्रीय तथा आदर्श निष्ठाओं के आधार पर किया गया और छात्रवृत्ति के रूप में दिए जाने वाले भत्तों तथा अधिकतर विश्वविद्यालयों द्वारा स्वीकार्य प्रवेश के निम्न स्तरों का पर्याप्त ढोल पीटा गया।

उन्हें यह भी पता चला कि कार्यक्षम छात्रों की भर्ती तथा साम्यवादी ऑफ़र (प्रस्ताव) का प्रचार करने में विविध प्रकार के सरकारी अधिकारी तथा माध्यम कारिन्दे नियुक्त थे।

यह सब पश्चिमी राष्ट्रों की तथा संयुक्तराष्ट्र सरीखी सार्वभौम माध्यम संस्थाओं की नीति से एकदम विरुद्ध है—ये जो छात्रवृत्तियां पेश करते हैं उनका प्रचारद्वारा तथा शीत युद्ध के दबे स्वर से विज्ञापन नहीं किया जाता और छात्रवृत्तियां वास्तविक सांस्कृतिक एवं विद्योचित प्रयोजनों से ही दी जाती हैं।

वह किस प्रकार खिंचकर वहां गया इस बात का वर्णन करते हुए नाइजेरिया के चुक्वुएमेका औकोंक्वो ने लिखा है :

"अत्यन्त उग्र साम्यवादी प्रचार ने साम्यवाद को सभी उपनिवेशी जनताओं के आत्म-निर्णय के लिए किए गए संघर्ष के साथ जोड़ दिया था—इस प्रचार के अनुसार साम्यवाद से ही आत्मनिर्णय के लिए किए गए संघर्ष में उपनिवेशियों को सफलता मिलनी थी। प्रचार के माध्यम से यह वचन दिया जाता था कि अन्तर्जातीय मेल-मिलाप, सार्वभौम भ्रातृत्व, शांति तथा मित्रता साम्यवाद से प्राप्त होंगे।

"मैंने इन सारी बातों पर विश्वास कर लिया और (कनाडा में) स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण कर लेने के बाद...घर लौटने तक की अभिलाषा इतनी प्रबल नहीं रही जितनी कि रूस को, उस स्वर्ग भूमि को, जहाँ कि मार्क्स तथा लेनिन के आदर्शवादों ने अनोखा प्रकाश फैला दिया था, देखने की उत्कट इच्छा।"

सोमालियाई महदी इस्माइल, जो चेकोस्लोवाकिया में साढ़े तीन वर्ष तक पढ़ा और दिसम्बर १९६१ में—"जिन-जिन बातों का वे समर्थन करते थे, उन सभी में अपना विश्वास गँवा कर"—वहाँ से निकाल दिया गया था, चेकोस्लोवाकिया की यात्रा करने से पूर्व साम्यवादी था—लिखता है :

"मुझे पक्का निश्चय हो गया था कि मनुष्य द्वारा मनुष्य का सभी प्रकार का शोषण, सब प्रकार का भेदभाव तथा वर्गविरोध चेकोस्लोवाकिया से बाहर किया जा चुका है; पूंजीपति पद्धति के ध्वंसावशेष पर

फलती-फूलती प्रगतिशील अर्थ-व्यवस्था का निर्माण कर लिया गया है। उन्हें जो सफलता मिल चुकी थी उसको मैं देखना तथा सोमालिया में ऐसी ही प्रगति कैसे की जा सकती है, इस बात को सीखना चाहता था।"

अनुदानों की उदार क्रम व्यवस्था पर—जो प्रायः भ्रामक सिद्ध होती है—लगातार बल दिया जाता है। जो छात्र स्वतन्त्र संसार के विश्वविद्यालयों के प्रवेश स्तरों तक पहुँचने में असफल रहे हों अथवा जिन्हें अपनी शिक्षा का आर्थिक भार उठाने में पर्याप्त जोर लगाना पड़ा हो—उनके लिए यह एक प्रमुख विचारणीय विषय रहता है।

सत्ताईस वर्षीय नाइजीरियाई एन्थोनी औकोत्चा जब लन्दन में अध्ययन कर रहा था तो वहाँ सोवियत दूतावास का एक द्वितीय सचिव लियोनिद् ए० रोगोव इसमें दिलचस्पी लेने लगा। यह आर्थिक तंगी में था, परन्तु सोवियत एजेण्ट ने इसे बताया कि यह तो कोई समस्या ही नहीं है: "मास्को की नई 'फ्रेंडशिप युनिवर्सिटी' में अध्ययनार्थ अफ्रीकी तथा एशियाई छात्रों को हजारों बन्धन-मुक्त छात्रवृत्तियाँ शीघ्र ही प्रस्तुत की जा रही हैं। श्री रोगोव ने...कहा, यदि तुम्हारे सरीखे व्यक्ति को उचित प्रशिक्षण दिया जाए तो वह अफ्रीका में राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन की भारी सेवा कर सकता है। तुम्हारी सहायता करने की मैं पूरी चेष्टा करूंगा।"

युगांडा के एवेरेस्ट मुलेकेजी के साथ भी यही बीती: "काहिरा स्थित सोवियत दूतावास से सम्बद्ध एक नवयुवक सांस्कृतिक सहकारी ने सिगरेट का धूंआ छोड़ते हुए मास्को स्टेट युनिवर्सिटी की छात्रवृत्ति के साथ मिलने वाले आश्चर्यजनक लाभों को गिना डाला। हमें छः वर्ष के अध्ययन के लिए वायुयान से मास्को ले जाया जाएगा। हमें ६०० रूबल (विनिमय की दर के अनुसार ३६० पौंड) प्रति मास खान-पान के लिए, ३००० रूबल कपड़ों के लिए तथा आठ सप्ताह की वार्षिक छुट्टी के लिए ३०० रूबल मिलेंगे, साथ ही प्रति वर्ष निःशुल्क घर की यात्रा की सुविधा रहेगी।"

इसके भर्ती एजेण्ट ने इसे बताया कि "सोवियय संघ आपको यह सब इसलिए प्रदान करता है कि···उपनिवेशी शासन से संघर्ष करने वाले आप सभी लोगों से उसे प्रेम है।" उसने साथ ही यह कहा—"बदले में हम केवल इतना ही चाहते हैं कि आप लोग अपने लिए स्वतन्त्र रूप से अपने भाग्य की रूपरेखा बना लेने का ज्ञान प्राप्त कर ल।"

कार्यक्षम छात्रों से सम्पर्क स्थापित करने के लिए साम्यवादी देश विविध युक्तियों से काम निकालते हैं। सोमालिया के महदी इस्माइल ने लिखा है :

"ऐसे साम्यवादी एजेण्ट संसार भर में विद्यमान हैं जिनका काम ही छात्रवृत्तियाँ प्रस्तुत करना है···साम्यवादी दूतावासों के सहकारी इण्टर-नेशनल यूनियन ऑफ स्टुडेण्ट्स' (IUS), 'दि वर्ल्ड फेडरेशन ऑफ डेमोक्रेटिक यूथ' (WFDY) तथा 'दि वर्ल्ड फेडरेशन ऑफ ट्रेड यूनियन्स' (WFTU) सरीखे साम्यवादी अग्रणी संगठनों तथा इनसे सम्बद्ध अथवा इनके लक्ष्यों से सहानुभूति रखने वाले अन्य संगठनों के प्रतिनिधि।" इन अग्रणी संगठनों द्वारा आयोजित युवक-महोत्सव सरीखे समारोह—जिनमें प्रायः गैर-साम्यवादी तथा कम उत्साही समर्थक सम्मिलित होते हैं—भर्ती के लिए लोकप्रिय आधार बने रहते हैं।

नाइजेरिया के एन्थोनी औकौत्चा सरीखे विकासमान देशों से आए छात्रों को तब भर्ती किया गया जब कि वे पश्चिमी देशों की राजधानियों में अध्ययन कर रहे थे। औकौत्चा तथा उनकी पत्नी (नाइजीरिया के गवर्नर जनरल डा० एजिकिवे की बहिन) की भेंट सोवियत दूतावास के सहकारी रोगोव से १९६० में लन्दन के एक होटल में आयोजित एक प्रीतिभोज में हुई। इस प्रीतिभोज में वे 'एफ्रो-एशियन स्टुडेण्ट्स लीग' के सदस्य के नाते उपस्थित थे। दूतावास में बाद की भेंटों में रोगोव ने पति-पत्नी की विचारधारा तथा उनकी राजनीतिक स्थिति में विशेष अभिरुचि प्रकट की और इन्हें अपना जीवन-वृत्त लिखने को कहा :

"मेरी पत्नी का यह उल्लेख करना स्वाभाविक ही था कि वह डा० एज़िकिवे की बहिन है। मेरा कोई उल्लेखनीय सम्बन्धी नहीं था परन्तु मैंने यह लिखा कि मेरा पहले लैफ्टविंग डाईनैमिक पार्टी से सम्बन्ध था; मेरी पत्नी ने मुझे ज़िक के अधिक नरम दल, 'दि नेशनल काउन्सिल ऑफ नाइजीरिया एण्ड कैमरून' में सम्मिलित होने की प्रेरणा दी थी। हमने जो कुछ लिखा उसको भी रोगोव ने बड़ी दिलचस्पी से पढ़ा।"

कुछ महीने बाद ओकौत्चा-दम्पती मास्को जाने वाले टीयू-१०४ वायुयान में लन्दन से बैठे। वे 'फ्रैण्डशिप युनिवर्सिटी' में साढ़े तीन महीने बिता पाए कि रूसियों ने उन्हें वापस लन्दन भेज दिया। यहाँ ओकौत्चा को दूसरे अफ्रीकी तथा एशियाई छात्र भर्ती करने थे। वह लौट कर रूस कभी नहीं गया।

लन्दन-स्थित चेकोस्लोवाकियाई सांस्कृतिक सहकारी द्वारा चित्रित चेकोस्लोवाकिया के चित्र को देखकर प्रलोभन में फंसकर चेकोस्लोवाकिया पहुँचे महदी को भी कार्यक्षम सम्भाव्य छात्रों से सम्पर्क करने के लिए पुनः ब्रिटिश राजधानी लन्दन की यात्रा पर भेजा गया। १९५९ में की गई इस यात्रा में उनकी भेंट एक ऐसे अफ्रीकी 'पिछलग्गू' से हुई जो गुट में छात्रों को फंसाने के काम में साम्यवादियों की मदद करता है। उसने अपने आपको अफ्रीकी छात्र-सभा का सभापति तथा महामन्त्री बताया। मुझे पता लगा कि उत्तरी लन्दन में स्थित उसके कमरे का, दो सचिवों का, एक मोटरकार का व्यय और साथ ही उसको कुछ भत्ता भी 'ब्रिटिश साम्यवादी दल' देता है। इसके बदले वह लन्दन-स्थित अफ्रीकी संगठनों की गतिविधियों का विवरण देता है और साम्यवादी शिक्षा से लाभ उठा सकने वाले संस्कार्य तथा 'प्रगतिशील' नवयुवक अफ्रीकियों को ढूंढ कर लाता है।"

यह जानकर कि महदी का प्रेग-स्थित 'इण्टरनेशनल युनियन ऑफ स्टुडेण्ट्स' के मुख्यालय से कुछ सम्बन्ध है, इस 'पिछलग्गू' ने वहाँ जाकर

अध्ययन करने की इच्छा रखने वाले दस अफ्रीकी नवयुवकों की मदद करने के लिए कहा। 'इण्टरनेशनल युनियन ऑव स्टुडेण्ट्स' के चेकोस्लोवाकियाई सभापति जीरी पेलिकन के नाम एक पत्र लिए महदी प्रेग लौट आया और अन्त में छात्रवृत्तियों के सम्बन्ध में विचार-विमर्श के लिए उसको 'इण्टरनेशनल युनियन ऑव स्टुडेण्ट्स' के उप सभापति एत्तायेब अबू गिडारी के पास भेज दिया गया।

"गिडारी ने मुझ से पूछा कि ये दस नवयुवक साम्यवादी हैं या नहीं, मुझे बाधित होकर यह मानना पड़ा कि वे साम्यवादी नहीं हैं, मैंने यह सोचा ही नहीं था कि इस स्वीकृति का कुछ महत्व होगा; मैंने 'इण्टरनेशनल युनियन ऑव स्टुडेण्ट्स' असोसियेशन के वे प्रकाशन पढ़ रखे थे जिनमें बताया गया था कि युनियन अफ्रीका को कितनी सहायता देती है और मैंने यह समझ रखा था कि यह बिना शर्त तत्काल सहायता पेश करेगी।

"परन्तु गिडारी ने खेद प्रकट करते हुए कहा कि जो लोग 'प्रगतिशील' नहीं हैं उनके लिए छात्रवृत्ति प्राप्त कर सकना बहुत कठिन होगा, मैंने उत्तर दिया—रंगरूट अभी तो सर्वथा नवयुवक तथा राजनीतिक दृष्टि से अपरिपक्व ही हैं; यदि उन्हें ठीक-ठीक चलाया गया तो सम्भव है कि वे साम्यवाद को ग्रहण कर लें...। इसके उत्तर में मैं उससे केवल इतना ही कहलवा पाया कि वह प्रार्थना-पत्र पर अभी और विचार करेगा। परन्तु छात्रवृत्तियां कभी स्वीकृत नहीं हुईं।"

इस सम्बन्ध में सुदृढ़ चालबाजियाँ तथा छल-कपट भी बरते गये हैं। ब्रिटिश कम्यूनिस्ट पार्टी का एक भूतपूर्व सदस्य नाइजीरियाई अाडेरोग्बा अजाओ अपने किसी व्यापारिक काम से हम्बर्ग गया हुआ था कि वहाँ साम्यवादी एजेण्टों ने—अपने आपको किसी सीमेण्ट फैक्टरी के प्रतिनिधि बता कर—बर्लिन जाकर कोई ठेका पूरा करने के लिए मना लिया। उसे बर्लिन न ले जाकर पूर्वी जर्मनी के मैग्डेबर्ग में ले जाया

गया और लगभग छः महीनों तक जेल में डाले रखा। बाद में वह बॉत्ज़न स्थित इण्टरनेशनल सौलिडैरिटी स्कूल ड्रेस्डेन टेक्निकल हाईस्कूल तथा लीपज़िग युनिर्वासिटी में पढ़ा; यहां उसे नाइजीरिया लौटने पर राजनैतिक सक्रिय कार्य के लिए प्रशिक्षित किया गया।

सन् १९६१ में चेकोस्लोवाकिया में चल रही अपनी शिक्षा को अध-बीच में छोड़ कर चले आने वाले चार छात्रों में से एक, 'इवान मेट्टोस' ने बताया है कि उसे किस प्रकार धोखा दिया गया। ब्राजील में उसने राजनीतिक कार्यों में कोई हिस्सा नहीं लिया था, तो भी 'इण्टरनेशनल युनियन ऑफ स्टुडेण्ट्स' के प्रतिनिधि उससे मिले और इटली में अध्य-यन के लिए छात्रवृत्ति प्रस्तुत की। रोम पहुँचने पर उससे कहा गया कि छात्रवृत्ति लेने के लिए उसे प्रेग जाना होगा। और एक बार वहाँ पहुँच जाने पर तो साम्यवादियों ने उसको वहां ठहरने के लिए मना लिया।

आजकल साम्यवादी, पश्चिमी राजधानियों में भर्ती करने पर कम बल देते हैं। संसार भर में, विशेषकर अफ्रीका में, अतिरिक्त स्वतन्त्र राष्ट्रों के उठ खड़े होने के कारण तथा उनके साथ साम्यवादी देशों के राजनयिक सम्बन्धों की स्थापना के कारण, भर्ती के लिए उन्हें एक नया विशाल क्षेत्र मिल गया है। साम्यवादियों को यूरोप की राजधानियों में सम्पर्क में आए छात्रों के ऐसे मामले भी देखने को मिले हैं कि कुछ लोग अपने अध्ययन की उदार पृष्ठभूमि के कारण तथा पर्याप्त व्यवहारकुशल राजनीतिक विचारधारा के कारण (साम्यवादी) प्रचार तथा शिक्षा की सैद्धान्तिक भूमिकाओं के चक्कर में नहीं फंसे और इसीलिए गुट को छोड़ गए।

और इस बात से साम्यवादी चिन्तित हो उठे हैं; कारण यह है कि असन्तोष का प्रभाव स्थानीय छात्रों तथा उन विदेशी छात्रों के दृष्टि-कोण पर पड़ना अनिवार्य था जो सीधे 'गुट' में पहुँच गए थे तथा साम्य-

वादी शिक्षा को शीघ्र ग्रहण कर सकते थे। परिणाम यह हुआ कि साम्यवादियों का रवैया अब सीधी भर्ती करने का अधिक है। मास्को स्थित 'फ्रैण्डशिप युनिवर्सिटी' अब प्रचार पत्रिकाओं तथा मास्को रेडियो की विविध विदेशी-भाषा-सेवाओं के माध्यम से प्रार्थना-पत्र सीधे मंगवाती है।

परन्तु महदी इस्माइल के कथनानुसार : "अब भी बहुत-सी एजेन्सियाँ हैं जो छात्रवृत्तियों के विषय में वस्तुतः निर्णय तथा आदेश देती हैं; उदाहरणार्थ, साम्यवादी सरकारें, अग्रणी संगठन तथा दूसरी विशाल सार्वजनिक संस्थाएं—इनसे प्रायः उस समय काम लिया जाता है जबकि राजनयिक कारणों से सरकारी स्तर पर छात्रवृत्तियों का निर्णय करना दूरदर्शिता नहीं होती।"

उसको 'सोमाली ट्रेड्स युनियन कॉनफेडरेशन' के लिए "पैट्रिस लुमम्बा युनिवर्सिटी', 'दि सोवियत-अफ्रीकन फ्रैण्डशिप सोसाइटी', 'दि मास्को यूथ फोरम आफिस' तथा 'एशियन पीपल्स सोलिडैरिटी काउंसिल' की सोवियत कमेटी ने १६ छात्रवृत्तियों का वचन दिया था। सोवियत सरकार द्वारा प्रवर्तित छात्रवृत्तियाँ उनको इस कारण नहीं दी गईं कि वे उस 'ग्रेटर सोमाली लीग' के लिए सुरक्षित थी, जो उसके कथनानुसार साम्यवादी गुट द्वारा समर्थित तथा गर्भरूप सोमाली साम्यवादी दल के रूप में नियन्त्रित थी। अन्त में उसको छात्रवृत्तियां मिली ही नहीं, कारण यह था कि सोमालिया स्थित सोवियत राजदूत का यह आग्रह रहा कि सभी सोवियत छात्रवृत्तियां लीग के समर्थकों को मिलनी चाहिएं।

कभी-कभी साम्यवादी यह दावा करते हैं कि वे संयुक्त राष्ट्रीय शिक्षा-विज्ञान तथा संस्कृति-संगठन (यूनेस्को) के माध्यम से छात्रवृत्तियाँ सुलभ बना रहे हैं। महदी लिखता है कि "मुझे 'यूनेस्को' द्वारा ही छात्रवृत्ति दी गई थी, परन्तु एक बार चेकोस्लोवाकिया में सुरक्षित पहुँच जाने पर

(मेरी छात्रवृत्ति के) 'यूनेस्को' द्वारा प्रवर्तित होने के विषय में मैंने कुछ नहीं सुना।"

अपने परिवार की तथा कैनेडा में जिस रूसी प्रवासी प्रोफ़ेसर की अध्यक्षता में उसने अध्ययन किया था उस प्रोफ़ेसर की वकालत पर नाइजीरियाई चुक्वुएमेका ओकोंक्वो को भी रूस में अध्ययन के लिए एक संयुक्त राष्ट्रीय छात्रवृत्ति मिल गई थी। परन्तु उसके दल के अधिकतर सदस्य इतने भाग्यशाली सिद्ध नहीं हुए: वे "वैध काग़जातों तथा पारपत्रों के विना ही आए थे। सोवियत अधिकारियों ने उन्हें मुद्रांकित कागजातों के पुर्जे ही केवल पकड़ा दिए थे...।" जिस छात्र के पास उचित कागज़ नहीं होते वह रूसियों की दया पर निर्भर रहता है, उसके साथ वे अपनी इच्छानुसार निष्ठुर व्यवहार कर सकते हैं—उसकी उपस्थिति तक से इन्कार किया जा सकता है।"

युगांडा के एन्ड्रयू अमर ने, जो मास्को में अध्ययनार्थ किसी छात्रवृत्ति के लिए स्वतः प्रार्थनापत्र देने के उद्देश्य से १९५९ में लन्दन से जलयान द्वारा गया था, वीसा के लिए सोवियत दूतावास में प्रार्थना-पत्र दिया: "मुझे यह जान कर आश्चर्य हुआ कि तनिक-सी भी देरी नहीं लगी। वस्तुतः तो ऐसा लगा कि मेरे अवैध पारपत्र के कारण रूसी वीसा शीघ्र मिला...। ऐसा लगता है कि सोवियत अधिकारियों को यह बात वहुत भाती है कि आपके पास ऐसा पारपत्र हो कि जो सर्वथा व्यवस्थित न हो।"

एक दूसरे छात्र महदी के पास भी यात्रा के लिए आवश्यक काग़ज़ात नहीं थे; लन्दनस्थित चेक सांस्कृतिक (दूतावास) सहकारी का जहाँ तक सम्बन्ध था, महदी के मार्ग में इससे कोई बाधा नहीं पड़ी: "मैं अगस्त १९५८ में सहकारी के निर्देशानुसार वायुयान से ज़ूरिच को चला; मेरे पास कोई 'चेक'-वीसा नहीं था, तो भी एक 'चेक' वायुयान में मुझे चढ़ा दिया गया जो वहाँ हमारी प्रतिक्षा में ही था और मैं शीघ्र ही प्रेग

पहुँच गया। 'चेक' अधिकारियों ने इस व्यवस्था की योजना इतनी चतुराई से बनाई थी कि मैं १९५९ में अपने पारपत्र के नवीकरण के लिए लन्दन लौट सका; ब्रिटिश अधिकारियों को यह पता भी नहीं चला कि मैं एक वर्ष तक लौह आवरण के पीछे रह आया हूँ।"

प्रमाणों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अलग-अलग सरकारें अपने नवयुवकों को 'गुट' की यात्रा करने से रोकने की कितनी ही चेष्टा क्यों न करें साम्यवादियों को भाग निकलने का एक न एक मार्ग मिल ही जाएगा।

औकाँक्वो अफ्रीकी मार्गों के सम्बन्ध में जो दावा करता है, वही शायद, दूसरे महाद्वीपों के मार्गों के सम्बन्ध में भी सच हो : "इस समय अफ्रीका में तीन ऐसे केन्द्र हैं जहाँ से रूस के लिए अवैध प्रस्थान की व्यवस्था आसानी से की जा सकती है, इनके नाम हैं, मिश्र, गिनी तथा घाना।" उसके कथानुसार तो कई नाइजीरियाई तीर्थ-यात्रियों के वेश में सूडान की यात्रा करके पारपत्र के बिना ही सोवियत संघ में पहुँच गए हैं। केन्याई भी इसी प्रकार खारतूम की ओर बढ़ते हैं।

यूरोप में, ज़ूरिच के अतिरिक्त, रोम का प्रयोग भी सोवियत संघ अथवा पूर्वी यूरोप पहुँचने के लिये आधारशिला के रूप में किया जाता है। चेकोस्लोवाकिया में रहते हुए महदी को यह बात ज्ञात हुई कि साम्यवादी-समर्थक सोमालियाई छात्र किस प्रकार अवैध रूप से लाए गए थे।

"लगभग सभी रोम के मार्ग से आए। जो पहले ही रोम में अध्ययन कर रहे होते हैं और जिनके पास पारपत्र होते हैं उनको इटली की कम्यूनिस्ट पार्टी संभालती है। स्विट्ज़रलैंड में घुसने के लिए उन्हें वीसा की आवश्यकता नहीं पड़ती (यहाँ वे मेरी ही भांति किसी चेक वायुयान पर सवार हो सकते हैं—उनसे कोई पूछताछ नहीं की जाती)। इटली की कम्यूनिस्ट पार्टी का संगठन बहुत कुशल है : नवयुवकों के चल पड़ने का समय हो जाने पर उन्हें स्टेशन पर तथा गाड़ी के एक विशेष डब्बे में

पहुँचा दिया जाता है; वहाँ उन्हें अपना सामान पहले ही रखा हुआ मिलता है तथा अपने लिए एक सीट सुरक्षित मिलती है। यह सारा काम रेलों पर काम करने वाले इटली के कम्यूनिस्टों के द्वारा संपन्न होना संभव हो जाता है, इस व्यवस्था के कारण छात्र सन्देहास्पद मात्रा में सामान लिए दिखाई नहीं देते और यात्रा आरम्भ कर देते हैं।"

काहिरा स्थित सोमालियाई छात्र 'अधिकारियों को सूचना तो यह देते हैं कि वे घर जा रहे हैं, परन्तु वस्तुतः वे रोम अथवा प्रेग को चल पड़ते हैं...। छात्रों को संभव है तीन-तीन महीने की लम्बी अवधि तक भी रोम में प्रतीक्षा करनी पड़ जाए और उनके सभी खर्च—होटल में निवास के व्यय समेत—इटली की कम्यूनिस्ट पार्टी उठाती है।"

अध्ययन के लिए साम्यवादी प्रस्ताव का एक दूसरा प्रलोभन बहुत से नवयुवकों के लिए यह रहता है कि वहाँ प्रवेश के लिए आवश्यक योग्यताओं का मान प्रायः निम्न रहता है। बहुत से छात्र इसी बात पर साम्यवादी छात्रवृत्तियाँ स्वीकार करते हैं, कारण यह है कि, यद्यपि उनमें से बहुत थोड़े ही इस बात को स्पष्ट रूप से स्वीकार करते हैं तथापि बहुत सों को, स्पष्ट ही, यह आशा नहीं थी कि वे स्वतन्त्र संसार के विश्वविद्यालयों की मांग के अनुसार प्रवेश की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकेंगे।

'मास्को फ्रैंडशिप युनिवर्सिटी' के १९६१-६२ के प्रवेश नियमों में यह निहित है कि प्रार्थी के पास 'माध्यमिक शिक्षा प्रमाण पत्र' होना चाहिए। जिन युवकों ने अपनी माध्यमिक शिक्षा समाप्त नहीं की है "उन्हें विश्वविद्यालय के प्रारम्भिक विभाग में प्रवेश मिल सकता है, जिससे कि वे एक से लेकर तीन वर्ष तक की अवधि में सामान्य माध्यमिक शिक्षा की पूर्ति कर सकें।"

इस नियम का क्या अर्थ है—इस सम्बन्ध में 'फ्रैंडशिप युनिवर्सिटी' को छोड़कर जाने वाले प्रथम छात्रों में से एक औकौत्चा ने दो टिप्पणियाँ की हैं। पहले तो छात्रों की योग्यता देख कर उसको अचम्भा हुआ: "मेरी

सम्मति में उनमें से किसी की भी योग्यता छठी कक्षा के स्तर की नहीं थी।" फिर यह बात बतलाते हुए कि उसने छात्रवृत्तियों के लिये नाइजीरियाई छात्रों के चुनाव के सम्बन्ध में परामर्श देना कैसे माना था, वह लिखता है : "जब मैं प्रार्थियों की शैक्षणिक योग्यता के आधार पर चुनाव करने की सलाह देता तब मेरी सलाह की प्रायः उपेक्षा कर दी जाती थी। मैंने इस बात की ओर सचिव का ध्यान आकर्षित किया। उसने उत्तर दिया कि विश्वविद्यालय ऐसे छात्रों को भर्ती करना चाहता है कि जिनके मन ताजा हों—वे पहले ही पश्चिमी जीवन-पद्धति के शिकार न हो चुके हों।"

१९५९ में प्रेग से प्रकाशित "स्टडी इन चेकोस्लोवाकिया" (Study in Czechoslovakia) में बताया है कि चेकोस्लोवाकिया के विश्वविद्यालयों तथा वहाँ की कला-अकादमियों में प्रवेश पाने के लिए क्या योग्यताएँ होना आवश्यक है। अर्थात् "चेकोस्लोवाकियाई बारह वर्षीय (ग्यारह वर्षीय) माध्यमिक विद्यालयों अथवा तकनीकी विद्यालयों की शिक्षा के स्तर के बराबर माध्यमिक विद्यालय की पूरी-पूरी शिक्षा।" यहाँ इस बात का कुछ भी उल्लेख नहीं है कि किसी वास्तविक परीक्षा के प्रमाण-पत्र की आवश्यकता है या नहीं।

अदन के एक छात्र एम० सलीन ने चेकोस्लोवाकियाई अधिकारियों को बताया कि वह सामान्य विषयों में काहिरा में दिये जाने वाले एक डिप्लोमा की परीक्षा में बैठा था परन्तु विदेशी भाषाओं (फ्रांसीसी भाषा) की योग्यता की आवश्यकता को पूरा न कर सकने के कारण वह उसको नहीं प्राप्त कर सका। तो भी इस छात्र को तत्काल ही 'चार्ल्स युनिवर्सिटी' ने भर्ती कर लिया—'स्टडी इन चेकोस्लोवाकिया' में इस युनिवर्सिटी को "चेकोस्लोवाकिया का प्राचीनतम तथा प्रसिद्धतम विश्वविद्यालय" बताया है।

१९५७ के मास्को युवक समारोह में उपस्थित होने के पश्चात् एक २७ वर्षीय भारतीय छात्र वी० बत्रा को पूर्वी जर्मनी में अध्ययन के लिए फुसला लिया गया था—उसको भी ऐसी ही शिथिलता मिली :

"...बहुत से युवक जो केवल कभी-कभी ही किसी प्रारम्भिक पाठशाला में पढ़े होंगे, पूर्वी जर्मनी में आए तो न उनके पास कोई प्रशंसा पत्र था न ही कोई प्रमाणपत्र। 'मेरे काग़जात स्वतंत्रता संग्राम में खोए गए'—इस स्पष्टीकरण के पश्चात् उन्हें और कोई स्पष्टीकरण नहीं देना पड़ा। इसका परिणाम यह हुआ कि विश्वविद्यालय में पढ़ने वालों की बाढ़-सी आ गई; कारण यह है कि प्राथमिक कक्षाओं तक पढ़े-लिखे लोग भी आज पूर्वी जर्मनी से विश्वविद्यालय की डिग्री लेकर जा रहे हैं।"

यह शिथिलता साम्यवादी शिक्षा की एक प्रमुख त्रुटि को सूचित करती है। कुछ मामलों में भले ही प्रवेश स्तर के पक्ष में तर्क दिया जा सकता हो, साक्ष्य से पता चला है कि इससे स्नातकीय स्तर भी नीचे गिरे। परिणाम यह हुआ कि डिग्री अथवा डिप्लोमा का मूल्य घट गया।

# २

# कक्षा में विष-प्रयोग

विदेशी छात्रों को यह पता चल गया है कि 'गुट' में दी जाने वाली शिक्षा, स्वतन्त्र संसार में दी गई शिक्षा से कई बातों में भिन्न है—विशेषकर इस बात में कि गुट में दी गई शिक्षा के साथ-साथ मार्क्सवाद तथा लेनिनवाद को मस्तिष्क में बैठाया जाता है, यह कड़ी इतनी गुप्त रहती है कि अधिकतर छात्र शिक्षा तथा सिद्धांतशिक्षा में कोई भेद नहीं कर पाते।

यह कोई नई बात भी नहीं है, कारण कि साम्यवादी प्रायः यह स्वीकार करते हैं कि दोनों साथ-साथ चलती हैं और यह कि सिद्धान्त-शिक्षा का अधिक महत्व है—और वे विदेशी छात्रों पर इसको आरोपित करने के अपने लक्ष्यों को भी साफ-साफ बता देते हैं।

१७ नवम्बर १९६० को मास्को फ्रेंडशिप युनिवर्सिटी का उद्घाटन करते हुए दिए गए अपने भाषण में भी ख्रुश्चेव ने आग्रहपूर्वक कहा था

—"हम इनमें से किसी छात्र पर अपनी राजनीतिक निष्ठाओं तथा अपने आदर्श को लादेंगे नहीं," परन्तु उसने आगे कहा—"यदि ऐसा हो जाए कि कुछ छात्रों को शताब्दी का यह रोग, साम्यवाद, लग जाए तो उसके लिए हमें दोष मत देना।"

चेकोस्लोवाकिया के शिक्षा तथा संस्कृति मन्त्रालय के डा० ल्यूडेक हेल्यूव्स ने अपने मन्त्रालय की पत्रिका 'वीसेका आकोला' (Vyseka Aikala) के १९५९ के प्रथम अंक में लिखा था—"हम यह बात का पूरा भरोसा कर लेना चाहते हैं कि हमारे विदेशी अतिथि घर लौटने पर न केवल प्रमुख विशेषज्ञ ही हों अपितु चेकोस्लोवाकिया के भक्त, मित्र तथा समाजवादी (अर्थात् साम्यवादी) विचारों को मानने वाले भी हों।"

छात्र इसको कैसा समझते हैं ? मायाजाल से मुक्त करने वाली अपनी अवस्थिति के पश्चात् १९६० में मास्को युनिवर्सिटी छोड़कर गए सात सोमालियाई छात्रों ने लिखा था।

"जो कोई यह सोचेगा कि 'फ्रेंडशिप युनिवर्सिटी' में पढ़ाए गए पाठ्य-विषयों को ध्यान से पढ़ लेने के बाद वह एक अच्छा इंजीनियर, अच्छा चिकित्सक, एक अच्छा प्रशासक, एक अच्छा शिल्पी बन जाएगा उसको गहरी निराशा हाथ लगेगी—वह तो अपना समय व्यर्थ ही गंवा रहा होगा। विश्वविद्यालय के पाठ्य-विषय इस प्रकार रखे गए हैं कि मार्क्सवादी सिद्धान्तशिक्षा के अतिरिक्त दूसरे किसी पाठ्य-विषय को सीखने का समय रूसी भाषा के आरम्भिक ज्ञान को उपलब्ध करने से अधिक नहीं मिलता।"

यद्यपि यह कथन कुछ-कुछ अत्युक्ति-सा लगता है तथापि साम्यवादी देशों में विदेशी छात्रों को कठिनाइयाँ ठीक भाषायी रुकावट के साथ ही शुरू हो जाती हैं।

जबकि स्वतंत्र संसार के विश्वविद्यालयों में प्रविष्ट होने वाले छात्र प्रायः राष्ट्रीय भाषा—अंग्रेजी अथवा फ्रांसीसी—अथवा शायद जर्मन,

इटालवी अथवा स्पेनी भाषा जानते हैं, 'गुट' देशों में प्रविष्ट होने वाले छात्रों को एक नई तथा कठिन बोली सीखने का काम करना पड़ता है —रूसी अथवा चीनी भाषा सीखने में तो उन्हें नई वर्णमाला भी सीखनी पड़ती है।

परन्तु सोवियत अधिकारी इस समस्या की उपेक्षा करते हैं। सोवियत समाचार समिति 'तास' ने ४ जुलाई १९६१ को फ्रेंडशिप युनिवर्सिटी के प्राध्यापक सेरगी रूम्यान्त्सेव की इस गर्वोक्ति को प्रचारित किया था कि जो छात्र अभी कुछ महीने पहले यहां आए थे उन्होंने रूसी भाषा पर अधिकार प्राप्त कर लिया है और अब वे अपना अध्ययन शुरू करने के लिए तैयार हैं।

परन्तु बहुत से छात्रों का अनुभव यह है कि भाषायी रुकावट कष्टप्रद है—कुछ को तो यह पूरी तरह चकरा देती है। मारीशस से आए एक छात्र कैनसामी नाराना-पिल्ले ने फ्रेंडशिप युनिवर्सिटी की अपनी पढ़ाई केवल एक ही महीने बाद नवम्बर १९६० में यह शिकायत करके छोड़ दी थी कि रूसी भाषा पढ़ाने के साथ-साथ साम्यवादी सिद्धान्त भी पढ़ाए जाते हैं और यह कि सोवियत राजधानी में स्थित और बहुत से छात्रों के समान ही उसे भी यह आशा थी कि अंग्रेजी अथवा फ्रांसीसी के माध्यम से पढ़ाया जाएगा।

रूसी भाषा की शिक्षापद्धतियों पर एन्ड्रयू अमर ने बड़ी सूझ-बूझ की बात यह लिखी है:

"प्रवक्ता के मुंह से सुनी जिस पहली बात पर मुझे आश्चर्य हुआ वह यह थी: रूस में आने से पहले कभी सीखी प्रत्येक बात को भूल जाओ।" हमने शीघ्र ही यह समझ लिया कि इसका अभिप्राय यह है कि हम उस प्रत्येक बात को भूल जाएँ जो हमने एक पश्चिमी "पूंजीवादी" देश में सीखी थी। इस कुछ-कुछ चौंका देने वाली निषेधाज्ञा का जो कारण बताया गया वह यह था कि चूंकि रूसी भाषा इतनी कठिन

भापा है कि हमें शुरू से ही उसी पद्धति से सोचना होगा जिससे कि रूसी सोचते हैं ,मानों नए सिरे से पढ़ना सीख रहे हों।"

यद्यपि अमर को कतिपय भाषायी लाभ दिखाई दे सके, तथापि इसको यह बात भी समझ में आई कि यह छात्रों की समझ का "कुछ-कुछ अकारण अपमान है, जबकि इसका यह अर्थ निकलता है कि हमने अपनी मातृ-भूमियों तक में जो कुछ सीखा है वह भी जानने-योग्य नहीं ही था और प्रत्येक अवस्था में उससे तो हीन ही था जो कि रूस हमें सिखाना चाहता है।"

अमर तथा उसके साथियों को रूसी पद्धति का लक्ष्य समझते देर नहीं लगी :

"पहले पहल हमें रूसी इतिहास से सम्बद्ध तथा क्रांतिकारी नेताओं की सरल कहानियाँ रूसी भाषा में सुनाई गईं अथवा पढ़नी पड़ीं—अध्यापक पहले सरल वाक्यों की पृष्ठभूमि में रूपरेखा बनाते और फिर इस रूपरेखा की तुलना हमारे अपने देश की दशाओं से करते और अवश्य ही इस बात का निश्चय दिलाते कि दोनों में कई समानताएँ हैं। फिर वे हम से पूछते कि तुम नहीं चाहते कि तुम्हारे देशों में कुछ क्रांतिकारी नेता हों। इस प्रकार हमको चाहने अथवा न चाहने में से कुछ भी सम्मति बताने को बाध्य किया जाता था—यह बहुत ही फूहड़ तथा भद्दा तरीका था।"

"यह पद्धति केवल सिद्धांत-शिक्षण और हमारी विचारधारा ढालने में ही नहीं बरती जाती थी परन्तु हमारे विद्यमान विचारों तथा झुकावों का पता लगाने का काम भी इससे लिया जाता था...। इस प्रकार छात्रों को छाँटकर, उनकी शिक्षा सम्बन्धी योग्यताओं के आधार पर तो नहीं, उनकी राजनीतिक स्थिति के अनुसार, उन्हें विभिन्न वर्गों में बांट लिया जाता था।"

एक महीने बाद अमर ने एक नई कपट-योजना पकड़ी :

"अब हमें बताया गया है कि अब हमारा शब्द भण्डार बढ़ेगा; हम सामान्य तत्कालीन भाषा के शब्दों का प्रयोग करेंगे। इस प्रयोजन से हमें दैनिक समाचार-पत्रों के ध्यान से चुने हुए परिच्छेद दिए गए हैं। इस अभ्यास का उद्देश्य हमारे अपने देशों के विषय में सम्मति देना तो नहीं है अपितु तथाकथित 'पूंजीवादी' देशों की निन्दाओं के रूप का निर्णय करना है।"

भाषा सिखाने के सिलसिले में सधाने की इस प्रक्रिया का दूसरा पहलू महदी इस्माइल ने चेकोस्लोवाकिया में देखा था। भाषा अध्यापक द्वारा की गई "स्वतन्त्र संसार की जीवन-यापन प्रणाली" की 'हंगामी तोड़-मरोड़' को महदी ने इस रूप में लिया :

'जिस व्यक्ति को अंग्रेजों की समृद्धि का अनुभव था उसकी दृष्टि में तो उस (भाषा-अध्यापक) के दावे हास्यास्पद थे परन्तु मेरी छोटी-सी कक्षा के दूसरे छात्र—जिसमें तीन अरब, दो ईरानी, एक भारतीय तथा एक आयरलैंड का था—और जो अपनी मातृ-भूमियों से सीधे चेक-राज धानी में आ गये थे—उस (अध्यापक) के शब्द, बिना ही प्रश्नोत्तर के निगल गए। बाद में जब मुझे तोड़-मरोड़ के और प्रमाण भी मिल गए तो मैं इस परिणाम पर पहुँचा कि साम्यवादी जानबूझकर मन में कोई लक्ष्य रखकर, झूठ बोलते हैं। वे यह जानते थे कि उनके बहुत से श्रोता उनकी असत्यता को जान लेंगे। परन्तु वे भी तो साम्यवादी अथवा उनके समर्थक हैं और यदि उन्हें भावी घटनाओं में अपना अभिनय निभाना है तो उन्हें भी निर्बाध रूप से तथा संकोच छोड़ कर झूठ बोलना सीखना होगा। प्रत्यक्ष ही, झूठ बोलने वाले को प्रशिक्षित करने की सर्वोत्तम विधि यही है कि उसको अपने निजी झूठों से सहमत होने की आदत डाली जाए।"

महदी ने 'चेक भाषा सीखने में एक बहुमूल्य वर्ष नष्ट किया'—अन्त में उसको केवल इतना ही पता लगा कि यह भाषा "अर्थशास्त्र के पाठ्य-

क्रम के उपयुक्त नहीं है। परिणामतः प्रेगस्थित हाईस्कूल ऑव इकोनामिक्स' में मेरा पहला आधा वर्ष दुर्बोध्य—विशेषकर तब, जब कि पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग किया जाता था—के विरुद्ध संघर्ष के रूप में ही बीता।"

भारतीय बत्रा ने पूर्वी जर्मनी के विदेशी छात्रों के हितार्थ स्थापित संस्था में जर्मन भाषा सीखी—यहाँ "मंजे हुए मस्तिष्क शोधक प्रचार-पुस्तिकाओं, भाषणों तथा प्रदेश भर में घूम-घूमकर" विदेशियों को सिद्धांत शिक्षा देते थे। 'बत्रा' का कहना है कि जर्मन भाषा की पाठ्य-पुस्तकों में पश्चिम के विरुद्ध तथा पूर्व की प्रशंसा में सब प्रकार की प्रचार-सामग्री थी। पहले ही दिन से हमें रूसियों से प्रेम रखने तथा अमरीकियों से घृणा करने की बात ऐसे पढ़ाई गई जैसे कि बच्चों को सिखाई जाती है। परीक्षाओं में (विषयों का) विशिष्ट ज्ञान "मस्तिष्क-शोधन में सफलता की मात्रा से कम महत्व का" था।

और भी अधिक समय बर्बाद करने के उदाहरण, विशेषकर चीन-स्थित विदेशी छात्रों में, सामान्यतया मिलते हैं। १९६० के मध्य में वैज्ञानिक विषयों का अध्ययन करने के लिए चीन गए चार सूडानी नवयुवकों को खारतूम से चलने से पहले बताया गया कि चीनी भाषा सीखने के लिए एक वर्ष बहुत होगा। पेकिंग पहुँचते ही उन्हें सूचना दी गई कि वैज्ञानिक अध्ययन शुरू करने लायक चीनी भाषा का ज्ञान प्राप्त करने में उन्हें कम से कम दो वर्ष लगेंगे। बाद में वे इस नतीजे पर पहुँचे कि तीन वर्ष आवश्यक होंगे।

इसके अतिरिक्त चीनी अधिकारियों ने यह आग्रह करके कि उन्हें पहले एक वर्ष तक मार्क्सवादी संस्कृति, चीन का इतिहास तथा साम्यवादी सिद्धान्तों का अध्ययन करना चाहिए, उन्हें टालने की कोशिश की। इस प्रकार उन्हें यह दिखाई दिया कि चीन में ७-८ वर्ष बिताने पड़ेंगे जबकि उनके वे समकालीन जो स्वतन्त्र संसारके विश्वविद्यालयों में अध्य-

यन करने गए थे तीन से पांच वर्ष की अवधि के भीतर ही परीक्षाओं में उत्तीर्ण हो जाएँगे। इस अवस्था में अन्यत्र अध्ययन के लिए उनका चीन छोड़ कर चले जाना सर्वथा स्वाभाविक ही था।

यद्यपि ऐसा प्रतीत होता है कि सोवियत संघ ने भाषा-शिक्षण की आधुनिक पद्धतियाँ प्रचलित कर दी हैं, परन्तु 'गुट' के सभी देशों में तो ऐसी बात नहीं है। पन्द्रह महीने बाद नवम्बर १९६१ में, पेकिंग छोड़ कर गए चाइली छात्र मैनुएल मिगोन ने यह बताया कि उसको कोई भी भाषा पाठ्य-पुस्तक उपलब्ध नहीं हुई—केवल बुरी तरह से प्रतिलिपि की गईं, लगभग अपाठ्य पर्चियाँ ही मिलीं। मिगोन का अध्यापक अशुद्ध फ्रांसीसी बोली में पढ़ाता था; शिकायत करने पर उसको एक स्पेनी भाषा-भाषी चीनी दे दिया गया, इसकी योग्यता कुछ अच्छी थी।

मिगोन लिखता है कि चीन में विदेशी छात्रों को डराने वाली बात अध्ययन की सभी शाखाओं में व्याप्त 'अविच्छिन्न प्रचार' की थी। चीनी अक्षर तक भी ऐसे वाक्यों में सिखाए गए—"आओ समग्र संसार के उत्पीड़क भयानक उत्तर-अमरीकी साम्राज्यवाद से लोहा लेने के लिए हम सब एक हो जाएँ।" उसके नाटक-अध्ययन के साथ इसकी भला क्या संगति है—इस प्रकार आश्चर्य प्रकट करने पर मिगोन क्षन्तव्य ही ठहरता है।

विदेशी छात्रों के मार्ग में चीनी भाषा बड़ी-बड़ी समस्याएँ खड़ी कर देती है। स्कैंडिनेविया के एक छात्र ने बताया कि उसको प्रतिदिन २५-३० नये अक्षर सीखने पड़ते थे—एक भाषा विशेषज्ञ के कथनानुसार यह बहुत ही अधिक कठिन कार्य है। एक कामचलाऊ शिक्षित चीनी का शब्दकोश कम से कम ७००० अक्षरों का होता है।

साम्यवादी विश्वविद्यालय, अवश्य ही, भाषा-समस्या को समझते हैं और यूरोपीय भाषाओं के माध्यम से पढ़ा सकने वाले अध्यापकों की संख्या बढ़ाने का इधर कुछ यत्न भी किया गया है।

अपने भाषा पाठ्यक्रम की समाप्ति पर जो विदेशी छात्र, उसका विषय कुछ भी क्यों न हो—इस आशा से चैन की सांस लेता है कि अब शास्त्रीय अध्ययन में लगा देने पर सिद्धान्तशिक्षण तथा प्रचार के उतने अवसर उपस्थित नहीं होंगे, उसकी इस भ्रांति का निवारण बड़े दुःख से होता है। बन्ना लिखता है :

"वास्तविक विश्वविद्यालय में प्रविष्ट होते ही पक्षपातपूर्ण व्यवहार की इतिश्री हो जाती है···सब काम इतने नीरस लगते हैं कि उत्साह क्षीण होने लगता है···ड्रेस्डन-स्थित टेक्नीकल युनिवर्सिटी में तकनीकी इतनी नहीं सिखाई गई जितना कि सैद्धांतिक तथा व्यावहारिक साम्य-वाद सिखाया गया।"

प्रत्येक छात्र को मार्क्सवाद-लेनिनवाद, राजनीतिक अर्थशास्त्र, वैज्ञा-निक समाजवाद, रूसी भाषा तथा उच्च सैनिक प्रशिक्षण के प्रारम्भिक ज्ञान में इण्टर परीक्षाएँ देनी होती थीं। इन परीक्षाओं से "यह तो पता नहीं चलता था कि परीक्षार्थी एक इंजीनियर बन सकता है या नहीं, यह ज़रूर पता चल जाता था कि परीक्षार्थी का अपनी निजी मत-स्वातंत्र्य पर्याप्त दब गया है या नहीं।"

'फ्रेंडशिप युनिवर्सिटी में अन्तर्राष्ट्रीय कानून के अध्ययनार्थ प्रविष्ट नाइजीरियाई ओकौत्चा ने अपने पहले पाठ का वर्णन इस प्रकार किया है :

"एक स्थूलकाय, मध्य वयस्क प्राध्यापक मंच पर खड़ा हो गया। कुछ-कुछ टूटी-फूटी अंगरेजी में···वह ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल तथा इसकी मानी हुई प्रत्येक बात की बुराई करने लगा और यह दिखाने लगा कि पश्चिमी प्रजातन्त्र की अब कोई उपयोगिता नहीं रह गई है।

"वह मार्क्सवादी-लेनिनवादी तत्वज्ञान का स्पष्टीकरण तथा ईसा-यत की कटु आलोचना करता रहा। उसने घोषणा कर दी कि अफ्रीका में तुम्हारा काम यह है कि तुम वहाँ लोकप्रिय मोर्चा संगठित करना तथा लूट-खसोट करने वाले साम्राज्यवादियों को महासागर में ढकेलना

सीखो। प्राध्यापक पूरे तीन घंटे तक यही कुछ कहता रहा•••।"

"राजनीतिक विज्ञान" रूप औषधि की ये बड़ी-बड़ी मात्राएँ एक पखवाड़े तक दी जाती रही—इसके बाद छात्रों से कहा गया कि वे व्याख्यानों पर टिप्पणियाँ लिखें : "अकेले मैंने ही प्राध्यापक के तर्कों को चुनौती दी और जब हमारी टिप्पणियां पढ़कर सुनाई गईं तब उसने बड़ी उदासी से मुझे कहा कि ब्रिटिश शिक्षा का प्रभाव अभी तक तुम्हारे मन पर से नहीं हटा, तुम्हें व्याख्यान और अधिक ध्यान देकर सुनना चाहिए।"

अन्तर्राष्ट्रीय कानून पर तो कभी विचार-विमर्श तक भी नहीं हुआ—इस तथ्य से परेशान औकौत्चा ने युनिवर्सिटी के रैक्टर (कुलपति) से शिकायत की तो उसने कहा—"एक अन्तर्राष्ट्रीय विधिवक्ता को राजनीतिक दृष्टि से जागरूक होना आवश्यक है। कक्षा में लौटकर नियत पाठ्यक्रम का अनुसरण करो और अपनी शंकाओं को खिड़की के रास्ते से बाहर फेंक दो।"

मास्को में औकौत्चा से पहले आया अमर, उसको शायद यह विश्वास दिला देता कि वह अपना समय व्यर्थ नष्ट कर रहा है : "•••बहुत से विदेशी छात्रों को विशेषकर मेरे साथी अफ्रीकियों तथा स्वयं मुझको पक्का निश्चय हो गया है कि रूसी इस बात के लिए उत्सुक नहीं हैं कि हम बहुत-सा सीख लें अपितु वे इतना ही चाहते हैं कि उनकी सम्मति के अनुसार हमारे लिए जो उचित है उसमें से कुछ हम सीख जावें।" अमर का कहना है कि रूसी प्राध्यापकों ने एक ही विषय तथा एक ही पाठ को लगातार कितने ही दिनों तक दुहराया और कहा कि छात्र इस प्रकार विषय को पूरी तरह समझ लेंगे और जब उन्हें साथी देशवासियों तथा दूसरों को पढ़ाना होगा तो पाठ्य-पुस्तकें देखने की आवश्यकता नहीं होगी। अमर यह भी कहता है :

"अन्तर्राष्ट्रीय कानून एक वह विषय है जो सम्भवतः विशेष रूप से चुने हुए उन विदेशी छात्रों के अतिरिक्त सभी के लिए सर्वथा निषिद्ध है

जिन पर रूसी अपने विचारानुसार भरोसा रख सकते हैं। रूसी यह समझते हैं कि इस विषय से उनके अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक मोर्चे की बहुत अधिक पोल खुलने की सम्भावना है।"

सिद्धान्तशिक्षण तथा प्रचार पर बल देने से विदेशी छात्र उकता तो जाता ही है, साथ ही, वह जिन तथ्यों तथा ज्ञान को उपार्जन करने की आशा रखता है उनके अभाव के कारण क्रुद्ध भी हो उठता है।

मास्को युनिवर्सिटी में अपने अध्ययन के सम्बन्ध में मुलेकेज़ी कहता है :

"प्रत्येक पाठ्य-विषय के साथ सिद्धान्तशिक्षण का गठबन्धन है। प्राध्यापक इस प्रकार के वाक्यों में प्रश्न पूछते हैं जिससे उन्हें पता लग जाए कि साम्यवाद के प्रति हम उदासीन हैं अथवा हम उसके समर्थक हैं। हमारे उत्तरों के अनुसार ही हमारा मूल्य लगाया गया तथा उनके अनुसार ही हमारे साथ व्यवहार हुआ। प्राध्यापक हमें बड़ी चतुराई से सुझाते थे कि हमें साम्यवादी विचारधारा के विरोधी अफ्रीकी नेताओं को हटा देना चाहिए। जब मैंने कक्षा में बैठना इसलिए अस्वीकार कर दिया कि मैं तो तथ्य जानना चाहता हूँ, सिद्धान्त नहीं; तो मुझे युनिवर्सिटी से निकाल देने की धमकी दी गई।"

अमर के साथ भी ऐसा ही हुआ : व्याख्यान का विषय था—"साम्यवाद क्या है ?" और हमें विश्लेषण के लिए यह मूलभूत स्थिर सिद्धान्त दिया गया : "साम्यवाद, सोवियत शक्ति तथा प्रोत्साहन के योग के बराबर है...।" मैंने पूछा—"तो क्या हमारे अफ्रीकी देश सोवियत शक्ति के बिना, केवल प्रोत्साहन के रूप में ही क्रांति नहीं कर सकते ?" क्या यह आवश्यक है कि हम सोवियत शासन प्रणाली का ही अनुकरण करें ?"

परिणाम यह हुआ कि डायरेक्टर के सामने अमर की पेशी हुई और उसे कहा गया—"तुमने एक ऐसा प्रश्न पूछा है जो तुम्हें पूछना नहीं चाहिए ! यदि तुम भविष्य में भी ऐसे ही प्रश्न पूछते रहे तो सोवियत

अधिकारी "विवश होकर यह समझ लेंगे कि तुम अब मास्को में और नहीं पढ़ना चाहते।"

अमर को स्मरण है कि एक अफ्रीकी छात्र ने जब सोवियत संघ में राकेट विज्ञान की प्रगति पर न्यूटन के तीसरे नियम के लागू होने के विषय में प्रश्न पूछा तो उसे उत्तर दिया गया कि यह तो राज्य का एक गोपनीय विषय है।

अनुत्तरित प्रश्नों के अतिरिक्त अध्ययन की सुविधाओं-सम्बन्धी प्रश्नों के उत्तर भी मौन से अथवा मुँहफट निषेध से दिये जाते हैं।

सात सोमालियाइयों ने मास्को युनिवर्सिटी द्वारा प्रदत्त सुविधाओं की कटु आलोचना की थी : "युनिवर्सिटी में उचित उपकरणों से सज्जित प्रयोगशालाएँ या तो हैं ही नहीं अथवा जो गिनी-चुनी हैं भी वे पहले ही घिरी हुई हैं : इसका परिणाम यह होता है कि अफ्रीकी छात्रों को अपने चुने हुए विषयों की सैद्धान्तिक जानकारी छिछली ही मिल पाती है, व्यावहारिक प्रयोग के कार्य का तो उन्हें अवसर ही नहीं मिलता।"

नोर्वे का एक छात्र फ्रांसिस सेजरस्तेद १९६० में पांच महीने के भाषायी पाठ्यक्रम को पूरा करने के लिए मास्को युनिवर्सिटी में प्रविष्ट हुआ था, उसकी भेंट एक डेन्मार्क के सिविल इंजीनियर से हुई—इसको "इलेक्ट्रॉनिक संगणकों" (Camputers) के अध्ययन के लिए सोवियत संघ में आमन्त्रित किया गया था और जब वह आ गया तो उसे कह दिया गया था कि उन्हें देखने की विदेशियों को अनुमति नहीं है। सेजरस्तेद ने स्वयं सेगाल तथा कांदिस्की के चित्रों की एक छोटी सी प्रदर्शनी को देखने की अनुमति मांगी; उसे पता लगा कि "साधारण जनता इसमें बिलकुल नहीं जा सकती, क्योंकि ऐसा लगता है कि सेगाल तथा कांदिस्की की कृतियों से 'बुर्जुआ' प्रभावों की गन्ध आती है...। हमको बताया गया कि 'सौन्दर्य विज्ञान' के छात्रों को तथा युनिवर्सिटी से यह लिखवाकर लाने वालों को कि उनके अध्ययन

के लिए इसका देखना उनके लिए आवश्यक है—प्रवेश की अनुमति मिलेगी।"

पाठ्य पुस्तकों में भी बहुत सी त्रुटियाँ हैं। बहुत से छात्रों ने गैर-साम्यवादी पुस्तकों के अभाव की आलोचना की है; उन्होंने जिन पुस्तकों को विदेशों से मंगाना आवश्यक समझा उन्हें भी मंगाने की अनुमति नहीं दी गई। उधर स्वतंत्र देशों में उन्हें साम्यवादी तथा गैर-साम्यवादी दोनों प्रकार की सामग्री खूब मिली।

बत्रा की शिकायत है कि "प्रचारात्मक" दावों के रहते भी जर्मनी के सोवियत क्षेत्र में वैज्ञानिक पुस्तकों की संख्या सर्वथा अपर्याप्त है—इनमें अधिकतर 'मिलिटरिस्टिक फैड्रल रिपब्लिक' से आयात की गई हैं। वे छात्रों को अध्ययन के लिए विशेषज्ञ साहित्य न देकर निर्देश-टिप्पणियाँ देने के उपाय का आश्रय लेते हैं।" बत्रा को यह भी पता लगा है कि "अल्पसाधन-सम्पन्न पुस्तकालयों के कारण छात्रों के लिए प्रायः यह असंभव हो जाता है कि वे अपने विषयों में हुई नई खोजों से परिचित रह सकें।" छात्रों के अध्ययन क्षेत्र को नियंत्रित रखने की ये सब प्रभावशाली विधियाँ हैं।

विश्वविद्यालय के बहुत से अध्यापकों की शिक्षा-योग्यताएँ गुप्त रखी गईं प्रतीत होती हैं, शेष तो निरे अयोग्य तथा वैधयोग्यता रहित ही हैं। विश्वविद्यालय के बहुत से अध्यक्ष तो स्पष्ट ही अपनी नियन्त्रण-क्षमता तथा विदेशी युवकों में सम्भावित गड़बड़ को भाँप लेने की योग्यता के कारण ही चुने गये हैं।

विद्रोह करके पश्चिम में चले आये, सोवियत गुप्तचर विभाग के एक भूतपूर्व कर्मचारी यूरी रास्त्वोरोव के कथनानुसार 'मास्को फ्रैंडशिप युनिवर्सिटी' का उपाध्यक्ष पावेल दिमित्रीविच एंजिन राज्य की सुरक्षार्थ नियुक्त समिति (K G B) में जनरल के गुप्त पद पर है। स्विट्जरलैंड के बास्लर नाचनिचटन (Basler Nachnichten) के २६ जनवरी

१९६२ के अंक में प्रकाशित एक भेंट में रास्तोरोव ने बलपूर्वक कहा था कि सोवियत अधिकारियों को आशा थी कि यह सूचना गुप्त रहेगी जिससे युनिवर्सिटी के सम्बन्ध में विदेशों में प्रकट की गई बढ़ती शंकाओं को महत्व न मिले।

महदी का कहना है कि 'फ्रेंडशिप-युनिवर्सिटी' की नकल में १९६१ में स्थापित प्रेग की '१७ नवम्बर युनिवर्सिटी' में नियुक्त प्रमुख व्यक्तियों की योग्यताएँ ऐसी ही हैं :

"यह संस्था विद्या का केन्द्र तो है ही नहीं, अपितु विदेशी छात्रों के लिए शिक्षा मन्त्रालय का, दूसरे नाम से, एक विभाग मात्र है। इसमें न कोई विद्या विभाग ही है, न कोई प्राध्यापक है अथवा प्रवक्ता है, न कक्षाएँ ही हैं। इसके छात्र प्रेग की विद्यमान युनिवर्सिटी तथा अन्य उच्च शिक्षा-संस्थाओं में ही पढ़ते हैं—परन्तु जब वे स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण करते हैं तो उन्हें "१७ नवम्बर-युनिवर्सिटी" के नाम तथा मुद्रा से अंकित डिप्लोमा मिल जाता है।

वस्तुतः तो, विदेशीछात्र-अनुभाग के कार्यालय ही इसके कार्यालय हैं और इन कार्यालयों के अतिरिक्त इसका कोई पृथक् अस्तित्व है ही नहीं। इसका अध्यक्ष है डा० जॉन मार्टिनिक, जो पहले गुप्तचर-विभाग का एक अधिकारी था। उसका प्रमुख सहायक 'प्राध्यापक' रुद्का भी गुप्तचर पुलिस का प्रशिक्षार्थी है और संस्था का सचिव, होसेक, अवैध साधनों द्वारा चेकोस्लोवाकिया में प्रविष्ट होने वाले मेरे सरीखे छात्रों के झूठे कागजों की तथा उनके यात्रा-मार्गों की व्यवस्था करने वाले विदेशी मामलों के मन्त्रालय में एक सम्पर्क अधिकारी है।"

पूर्वी जर्मनी के शिक्षकों के योग्यता-स्तर की वत्रा ने आलोचना की है :

"इस तथ्य के अतिरिक्त कि वहाँ प्राध्यापकों की प्रायः कमी है, वस्तुतः योग्य व्यक्तियों की गिनती भी अंगुलियों पर की जा सकती है। उनको

राजसी अनुदान देकर ही मुख्यतः जर्मन डेमोक्रेटिक रिपब्लिकमें रखा जाता है। दूसरी ओर युवक प्रवक्ताओं को कुछ उच्च पद केवल इसलिये मिले हुये हैं कि वे प्राध्यापकों से अधिक विश्वस्त हैं। सब मिलाकर स्थिति भयङ्कर होती चली जा रही है—एक अपेक्षित योग्यता सम्पन्न प्राध्यापक के पीछे औसतन कई सौ छात्र हैं।

साम्यवादी देशों द्वारा दी गई शिक्षा का यह चित्र था जो उच्च अध्ययन के स्वीकृत मानकों से और अधिक दूर तो, शायद हो ही नहीं सकता था। प्रवेश-मानक निम्न हैं। स्वतन्त्र वाद-विवाद निषिद्ध है, पाठ्य-क्रम सीमित हैं, ज्ञान के स्रोत (पुस्तकें आदि) विरल तथा सीमित हैं, बहुत से शिक्षक अपेक्षित योग्यता से रहित हैं अथवा गैर-शिक्षात्मक प्रयोजनों से ही अपने पदों पर हैं—और सबसे बढ़कर बात यह है कि सारी पद्धति ही उस मार्क्सवादी-लेनिनवादी दृष्टिकोण के सिद्धान्तशिक्षण के साथ जोड़ दी गई है जो अध्ययन की समग्र धारणा का गला घोंट कर उसको कुचले डाल रहा है।

गैर-साम्यवादी शिक्षा पद्धतियों के अनुभवी इने-गिने छात्रों द्वारा इनकी तुलना किया जाना अनिवार्य ही था।

महदी की घोषणा के अनुसार उसके अर्थशास्त्र के पाठ्यक्रम की कमी "यह तथ्य था कि द्वितीय वर्ष में हमने प्रति सप्ताह चार घंटे चेक कानून के पारंगत होने में लगाये और चतुर्थ वर्ष में प्रति सप्ताह दो घंटे 'क्राजे' (Karje) की—उन प्रादेशिक इकाइयों की, जिनमें कि चेकोस्लो-वाकिया विभक्त है, जटिलताओं के अध्ययन में लगाये। एक अफ्रीकी के लिये इन तथा कई अन्य विषयों का कोई मूल्य नहीं था।

'मास्को युनिवर्सिटी' में पढ़े सात सोमालियाइयों का कहना है कि उन्हें दी जाने वाली शिक्षा के मानक के सम्बन्ध में उन्हें जानबूझ कर धोखा दिया गया। उनके साम्यवादी दलालों ने उन्हें पक्का निश्चय दिलाया था कि वे "उस ज्ञान को अर्जित कर लेंगे जो हमारे लिये व्यक्ति-

गत रूप से अत्यन्त लाभदायक तथा हमारे देशों की प्रगति के लिये अनिवार्य होगा...। हम वैज्ञानिक तथा व्यावसायिक क्षेत्र में ही कुछ नहीं सीख पाये केवल इतना ही नहीं, और हमने केवल अपना समय ही व्यर्थ नहीं खोया, अपितु, हमने यह भी प्रत्यक्ष कर लिया कि यदि हमारे नवयुवकों को साम्यवादी प्रचार के प्रलोभन में फंसने से नहीं रोका गया तो हमारे देशों को क्या-क्या हानियाँ हो सकती हैं।"

डिग्रियों के मानकों के विषय में बत्रा कहता है कि "विदेशी छात्रों को महत्वपूर्ण रियायतें मिली हुई हैं; उदाहरण के लिये कोई अल्जीरियाई जब यह कह देता है कि वह राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के लिये लड़ा था तो वह कई बार परीक्षा दे सकता है। इसके अतिरिक्त ऐसे बहुत से भारतीय तथा मिश्रियों के उदाहरण विद्यमान हैं कि जिन्होंने पूर्वी जर्मनी में आकर ६ महीनों में ही डाक्टर की उपाधि लेने का काम पूरा कर लिया अन्यत्र इसी काम में लगभग तीन वर्ष लगते।"

एक अफ्रीकी के शब्दों में "यह एक कम मूल्य की शिक्षा है। परन्तु सस्ते के खरीददार को घटिया माल मिलने की सम्भावना रखनी ही पड़ेगी।"

# ३

# कक्षा के बाहर दबाव

अधिकतर विदेशी छात्र साम्यवादी शिक्षा की त्रुटियों को सहन करने के लिए तैयार हो जाते, यदि उन्हें अध्ययन-कक्ष के बाहर सामान्य जीवन बिताने दिया जाता ।

दुर्भाग्य की बात यह है कि सिद्धान्त-शिक्षण के दबाव में कमी नहीं ही होती, यद्यपि दबाव के रूप विविध हो सकते हैं, और छात्र को अपने गम्भीर अध्ययन के मार्ग में अन्य बहुत-सी बाधाओं का सामना करना पड़ता है । इनमें से अधिकतर बाधाएँ तो साम्यवादी समाज के तात्त्विक स्वरूप के कारण आती हैं : साम्यवादी समाज के लिए यह आवश्यक होता है कि अपरिचितों को यथाशक्ति दूर तथा अलग रखा जाए, कारण कि कहीं ऐसा न हो कि वे साम्यवादी-जीवन के कम आकर्षक पहलू का सीमा से अधिक भाग देख लें; उसके विपरीत, लोग विदेशी छात्रों से तथा उनके गैर-साम्यवादी अथवा कम अनुशासित दृष्टिकोण से बहुत अधिक

परिचित हो जाएँगे और अपनी निजी राजनैतिक, सामाजिक तथा आर्थिक स्वतन्त्रताओं के अभाव को अधिक स्पष्ट रूप से पहचान लेंगे—यह वह रहस्योद्‌घाटन होगा जिसका साम्यवाद तथा स्वतन्त्र संसार के (साम्यवादी) प्रशासन द्वारा निरूपित चित्रों से विरोध होगा।

लौटे हुए विदेशी छात्रों में से अधिकतर ने साम्यवादी शिक्षा की सैद्धान्तिक बातों तथा इसकी दूसरी कमियों की अपेक्षा गुट में दिन प्रति दिन के जीवन में डाले जाने वाले दबावों की चर्चा अधिक की है। शिक्षा को अधूरी छोड़ने के कारणों में ये दबाव अधिक प्रमुखता से दिखाए जाते हैं।

अपने विश्वविद्यालय के छात्रावास से बाहर कदम रखने से पहले, अपनी आशाओं से सर्वथा भिन्न साम्यवादी जीवन के संकीर्ण स्वरूप पर, अधिकतर विदेशी छात्रों का मन क्षोभ से भर उठता है। अमर ने दिखाया है कि मास्को युनिवर्सिटी में चालू अनुमति-पत्रों अथवा 'प्रोपुस्की' (propuski) की पद्धति द्वारा 'रशियन लैंग्वेज इंस्टिट्यूट' में रहने वाले सभी के साथ मुख्य भवन में रहने वालों से किस प्रकार भेदभाव रखा जाता है : "—विश्वविद्यालय का मुख्य भवन खण्डों में विभक्त है...प्रत्येक खंड को रूसी क्षेत्र (अथवा 'जोना') कहते हैं और एक खण्ड से दूसरे खण्ड में जाने से पहले आपको अपना अनुमतिपत्र एक महिला प्रशासिका को दिखाना पड़ेगा—इस महिला प्रशासिका की पूर्णकालिक नौकरी ही अनुमति-पत्रों की जांच करना है।"

परन्तु एक बार भाषा पाठ्य-क्रम के पूरा होते ही इन बातों में सुधार हो जाता है...अब "...आपके अनुमति पत्र पर एक विशेष लेख रहता है जिससे आपको दिन के किसी भी समय एक खण्ड से दूसरे खण्ड में निर्बाध चले जाने की अनुमति रहती है।"

मुलेकेजी का कहना है कि उसको कम से कम तीन अनुमतिपत्र रखने पड़ते थे; इनमें से एक उसको मास्को युनिवर्सिटी से एक मील पर स्थित

अपने शयनगार में पुनः प्रवेश से पूर्व दिखाना पड़ता था। बहुत से छात्र जिन्हें छात्रों की जीवन-दशाओं का आकर्षक चित्र दिखाया गया था, वास्तविकता देखकर बहुत ही अधिक निराश हुए।

बत्रा की शिकायत है कि पूर्वी जर्मनी में छात्रावासी जीवन की "तुलना अपराधी-जीवन से की जा सकती है।" सभी विदेशी छात्रों को, विवाहितों को भी, निजी आवासों में रहने की अनुमति नहीं दी गई। छात्रावास "बहुत सुखदायक नहीं थे। शुरू में दो के लिए बनाए गए एक छोटे कमरे में साधारणतया चार छात्र रहते हैं।"

अमर ने उन परिस्थितियों का उल्लेख किया है कि जिनमें अफ्रीकी छात्र मास्को में 'गेटो' (Ghetto यहूदी टोले का निवासी) की तरह रहे तथा मास्को में सात सोमालियाइयों को "पशु-शालाओं से भी 'बुरे' घर रहने को मिले; "ये आठ के साथ एक इतने छोटे कमरे में रहे जो (टट्टी की) कोठरी से बड़ा नहीं था।"

पेकिंग में पढ़े मिगोन को एक ऐसा कमरा दिया गया "जो पुरानी चाल का तथा गन्दा था, उसका फर्श सीमेंट का था, फौजी ढंग का शयन-कक्ष था और चटाई तिनकों की थी। छात्रावास में स्वास्थ्य-सफाई की व्यवस्था पुराने ढर्रे की, अविकसित, ही थी। बिजली अक्सर कट जाती थी और चीन की परले सिरे की कठोर सर्दी में भी कमरे गरम रखने की व्यवस्था निरन्तर नहीं रहती थी। भोजन, चीनियों को दिये गए भोजन से तो अच्छा था, पर अनुपयुक्त था...। मांस केवल कुछ त्यौहारों तथा छुट्टियों के दिन ही मिल सकता था।"

मिगोन की बहुत-सी शिकायतें सोवियत संघ तथा पूर्वी यूरोप के छात्रों ने दुहराई हैं। छात्रों के मुलाकातियों को निकाल कर छात्रावासी अधिकारियों द्वारा पैदा की गई परेशानी का उल्लेख वे लगभग सर्व-सम्मति से करते हैं। अमर ने यह बताया है कि जब 'रशियन लैंग्वेज इंस्टि-ट्यूट' में यह प्रतिबन्ध अस्थायी रूप से हटाया गया तब क्या हुआ :

"...जब एक गिनीग्राई छात्र ने एक रूसी लड़की को ग्रामन्त्रित किया—तो उसको ऐसा करने से रोका गया तथा बताया गया कि यह काम निषिद्ध है। हमने मिलकर इंस्टिट्यूट के संचालक से इस भेदभाव के विरुद्ध शिकायत की तो उसने हमको केवल इतना ही कहा—"हम यहाँ ऐसा कुछ नहीं होने देंगे !"

गुट में जाकर ग्रध्ययन करने वाले पहले ग्रफ्रीकियों में से एक ग्रजाग्रो ने सोचा था कि पूर्वी जर्मनी में विदेशी छात्रों की उनकी टोली को जो ग्रावास-स्थान दिया गया था उसके कारण "वे वर्गहीन समाज में विशेष सुविधा प्राप्त नागरिक" बन गये थे, परन्तु ग्रब तो यह बात दिखाई नहीं पड़ती।

शिकायत का एक दूसरा मुख्य कारण साम्यवादियों की यह हठ करने की पर्याप्त सार्वभौम यह ग्रादत है कि विदेशी छात्र ग्रपने कमरे में कम से कम एक विश्वस्त राष्ट्रीय छात्र को ग्रवश्य रखें। छात्रों द्वारा दिए गए सभी विवरणों में यह स्वीकार किया गया है कि वे वहाँ मुख्यतः भेद लेने के रखे गए थे।

महदी ने इस भेदिया-पद्धति का स्पष्टीकरण इस प्रकार किया है :

"यह एक प्रकार का ग्रात्म रक्षा का रूप था ग्रौर साथ ही पुलिस राज्यीय उपकरण का एक ग्रावश्यक ग्रंग भी था। यदि कोई इस प्रकार की गड़बड़ होती कि जिसका कारण किसी छात्र ग्रथवा छात्रों की किसी टोली के धर्मनिष्ठातिरिक्त रुखों को माना जा सकता तो सम्बद्ध ग्रधिकारियों को ग्रपनी ग्रसावधानी का स्पष्टीकरण देना पड़ता। परन्तु यदि उन्होंने प्रभावशाली गुप्तचर पद्धति की व्यवस्था की हुई होती तो छात्रों को पहले ही चेतावनी मिल जाती तथा वे (छात्र) फिर उसके ग्रनुसार चल सकते थे।"

यह भी लगता है कि जहाँ राष्ट्रीय छात्र नहीं मिल सकते वहाँ साम्यवादी ग्रपने गुप्तचरी जाल के लिए विदेशी छात्रों को भर्ती करने में भी नहीं

हिचकते । चेकोस्लोवाकिया-स्थित 'हाउस्तका' (Houstka) भाषा महाविद्यालय की परिस्थिति का महदी ने इस प्रकार वर्णन किया है :

"मैंने तथा वहुत से दूसरों ने देख लिया था कि कई विदेशी छात्र नियमित रूपसे रात को संचालक के घर जाकर उससे मिलते हैं। हमें शीघ्र ही यह बात सूझ गई कि ये लड़के अपने साथी देशीयों पर गुप्तदृष्टि रख रहे हैं और यह कि ये व्यक्तिशः जाकर अपनी सूचना संचालक को देते हैं (यही व्यक्ति स्थानीय कम्यूनिस्ट पार्टी का सभापति भी था)।"

आपसी वातचीत को घुमा-फिराकर सैद्धांतिक वातों की ओर मोड़ कर तथा इस वात का पक्का निश्चय करके कि वे ग़ैर-साम्यवादी रेडियो कार्यक्रम तो नहीं सुनते अथवा गैर-साम्यवादी साहित्य तो नहीं पढ़ते, इन पहरुओं के जिम्मे छात्रों में सिद्धान्त-शिक्षा के कार्य को सहायता पहुँचाना भी था। कई छात्रों की शिकायत है कि उनके कमरों से पुस्तकें उठा ली गई थीं।

प्रेग स्थित 'हाईस्कूल ऑव इकानॉमिक्स' में महदी को अपने कमरे में एक चेकोस्लोवाकियाई को ठहराने के लिए कहा गया—यदि वह अपने सौंपे हुए व्यक्ति का मात्रा से अधिक मित्र बन जाता तो उसे प्रति छठे महीने बदल दिया जाता था। इस व्यक्ति को वह चेक साम्यवादी युवक संस्था चुनती थी जिसका काम, चेकोस्लोवाकियाई शिक्षा तथा संस्कृति मन्त्रालय के डा० होलुवेक के कथनानुसार, विदेशी छात्रों को प्रभावित करने के प्रयत्न में उनकी खुले हाथों सब सम्भव देखभाल करना तथा पूरा-पूरा ध्यान रखना था।"

छात्रावास में अनुशासन बनाए रखने के लिए अधिक विश्वस्त कर्मण्य छात्र नियुक्त थे और ये अपने गुण्डेपन के कारण विदेशी छात्रों में सर्वथा अप्रिय हो उठे थे। अमर ने इसका एक पूरा नमूना इस प्रकार दिखाया है :

"मुख्य भवन के एक कमरे में हमारे कुछ अतिथि विद्यमान थे।

सब अतिथियों के अवश्य चले जाने का—११-३० रात का समय हो चुका था। शीघ्र ही द्वार पर थपकी लगी। एक 'कोम्सोमोल' रूसी युवक संघ के कार्यकर्ता ने पूछा, आप अतिथियों को अब तक क्यों रोके हुए हैं—उसने हमें पेय पीने दिए। परन्तु भवन से बाहर होते हुए हमारे अतिथियों को कार्यकर्ता ने टोका और फिर अतिथियों में से एक, रूसी कन्या, से नियमित पूछताछ शुरू कर दी। उसको अपना पारपत्र (जिसको उसने भवन में प्रविष्ट होते समय छात्रावास के कार्यालय में जमा करा दिया था) तब तक नहीं ले जाने दिया जब तक कि सवेरे फिर उससे पूछताछ नहीं कर ली गई। हमें पीछे पता लगा कि उसके गृह-अभिरक्षक (House-Warden) को युनिवर्सिटी 'कोम्सोमोल' का अश्लील भाषा में लिखा व्यंगभरा पत्र मिला जिसमें उस (लड़की) के व्यक्तिगत आचरण को कलंकित ठहराया गया था और यह मांग की गई थी कि उसको अफ्रीकी छात्रों से मिलने से रोका जाए। हमसे ऐसे-ऐसे अपमानजनक व्यवहार किए जाते थे।"

विदेशी तथा राष्ट्रीय छात्रों के आपसी सम्बन्धों का कटु होना तो फिर कोई नई बात थी ही नहीं।...तथा दूसरों ने जो घटनाएं बताई हैं उनके अनुसार विशेषकर रूसी छात्र अफ्रीकियों के खास दुश्मन रहे होंगे :

"तोगो के माइकेल आयीह को विश्वविद्यालय भवन में उसकी मंजिल पर लगे लिफ्ट से जाने से रोका गया। जब उसने प्रतिवाद किया तो एक रूसी उस पर चिल्लाया : 'तुम्हें बोलने का क्या अधिकार है ? तुम इन्सान नहीं, काले बन्दर हो।' एक बार जब मैं मास्को के बीचोंबीच सड़क पर चल रहा था तो एक गिरोह ने मुझे चिढ़ाते, धक्का-मुक्की करते तथा लड़ने-भिड़ने के लिए उकसाने की कोशिश करते हुए पीछा किया; यदि मैं लड़ पड़ता तो वे सब इकट्ठे मुझ पर टूट पड़ते। एक रात केन्याई बेंजामिन ओम्बुरो को सोवियत पुलिस ने घुना—उन्होंने

उसको एक बस स्टेशन पर एक रूसी लड़की से बातचीत करते पाया था। एक सहभोज में सोमालियाई उमर खलीफ़ उकसाया जाकर एक साम्यवादी से तू-तू मैं-मैं कर बैठा; उसको इतना पीटा गया कि वह बेहोश हो गया और दो सप्ताह तक अस्पताल में रहा।"

अमर को वह घटना याद है जबकि एक दूसरा सोमालियाई छात्र अपने छात्रावास में नशे से भी बुरी हालत में लौटा था। "रूसी छात्रों ने उसे पीटना शुरू कर दिया। दूसरे अफ्रीकी छात्रों ने उन्हें अलग करने की कोशिश की। तब रूसियों ने यह धमकी दी कि वे अफ्रीकियों से लड़ने के लिए ईराकियों को बुला लेंगे और उन्होंने वस्तुतः ऐसा ही किया भी।"

बहुत से विदेशी छात्रों को चिढ़ाने के यह एक दूसरे साम्यवादी व्यवहार का उदाहरण है: विचारधारात्मक (सैद्धांतिक) अथवा दैहिक नियन्त्रण को बनाए रखने के साधन के रूप में विदेशी छात्रों के एक राष्ट्रीय अथवा राजनीतिक समुदाय को दूसरे के विरुद्ध प्रयोग करने की धमकी देना अथवा उसका वस्तुतः प्रयुक्त करना।

महदी को इसका अनुभव चेकोस्लोवाकियास्थित हॉस्तका भाषाई कालेज में हुआ था: 'मुझे वहां रहते लगभग एक महीना हुआ था कि नासर-समर्थक राष्ट्रीय अरबों के समुदाय तथा कट्टरपंथी अरब साम्यवादी छात्रों में खुली लड़ाई छिड़ गई...। कालेज के संचालक तथा मन्त्रालय के अधिकारियों ने उपद्रवों के जिस-जिस मामले की जांच की, प्रत्येक में साम्यवादी तत्व का समर्थन किया।"

कठिनाई का एक दूसरा कारण धार्मिक निष्ठाओं के प्रति साम्यवादी छात्रों का अपमानजनक रुख था। मास्को में पढ़े सात सोमालियाइयों का संस्मरण इस प्रकार है:

"विश्वविद्यालय में हमारे रूसी सहयोगी हमारे धर्म के विषय में हमसे पूछते रहते थे...। वे हमारी निष्ठाओं तथा हमारे धार्मिक अनु-

ष्ठानों की हँसी उड़ाते थे तथा उन पर चोट करते थे। हमारी मंडली के एक नवयुवक पर 'कोम्सोमोल' मण्डली के कुछ मतान्धों ने इसलिए आक्रमण किया कि उन्होंने उसको अपने मुस्लिम धर्म के विषय में सार्वजनिक रूप से बातचीत करते हुए सुन लिया था—यद्यपि वह एक रूसी युवक के प्रश्नों का ही उत्तर दे रहा था। आक्रामकों के कार्य को न्यायोचित ठहराते हुए यह कहा गया कि उन्होंने जो कुछ किया वह "पश्चिमी पूंजीवाद की ओर से गन्दा धार्मिक प्रचार करके सोवियत राज्य के उदार आतिथ्य का अनुचित लाभ उठाने के प्रयत्न के उत्तर में किया। यद्यपि हमारे रीति-रिवाज़ उन्हें ज्ञात थे फिर भी हमें जब-तब सूअर का मांस खाने के लिए पेश किया गया...। यह स्पष्ट ही हमारी हँसी उड़ाने तथा हमें खिझाने के लिए की गई छेड़छाड़ थी।"

इस अवस्था में यह अनिवार्य ही था कि अपनी राष्ट्रीय तथा जातीय महत्वाकांक्षाओं को अभिव्यक्त करने के लिए तथा साथ ही सम्मिलन का एक साझा आधार बनाने तथा अपने हितों को उपस्थापित करने के लिए 'गुट' के विदेशी छात्र अपना कोई संगठन बनाने की चेष्टा करते। परंतु साम्यवादी अधिकारियों का सदा यह आग्रह रहता है कि ऐसे संगठनों का ढांचा तथा उनके लक्ष्य उनकी इच्छा के अनुसार रखे जाएं, जिससे कि वे संगठनों पर नियन्त्रण रख सकें।

जब मास्को-स्थित अफ्रीकियों ने 'ब्लैक अफ्रीकन स्टुडेण्ट्स युनियन' (BASU) की स्थापना कर ली तब क्या हुआ—इसका वर्णन अमर मुलेकेज़ी और औकोंको ने किया है।

उस समय अफ्रीकी छात्रों की केवलमात्र एक ही गोष्ठी—सोवियत-एफ्रो-एशियन सौलिडैरिटी कमेटी (Soviet Afro-Asian Solidarity Commitee) विद्यमान थी, इस पर औकोंक्वो के कथनानुसार सोवियत अधिकारियों का पूरा आधिपत्य था; उससे असन्तुष्ट होने पर ही इस नई युनियन (BASU) का जन्म हुआ था। औकोंक्वो कहता है कि :

"सदा हमारे आस-पास मंडराते रहने वाले सोवियत अधिकारियों की पूर्व स्वीकृति के बिना हम कभी एकत्र नहीं हो सकते थे। प्रत्येक सम्मेलन पर कई दृष्टिकोणों से विचार किया जाता था—विषय उचित है या नहीं, समय उचित है या नहीं—रूसके सर्वातिशायी हितों की पूर्ति होगी या नहीं...। रूसियों की पूर्व जानकारी तथा स्वीकृति के बिना कार्यकारिणी समिति अपनी बैठक नहीं कर सकती थी और प्रत्येक बैठक में कम से कम एक रूसी 'प्रेक्षक' उपस्थित होता था।"

'ब्लैक अफ्रीकी स्टुडेण्ट्स युनियन' के बनते ही रूसियों ने इसको भंग कराने की कोशिश में भेद डालने तथा डराने की कार्यवाही शुरू कर दी। अमर लिखता है :

"रूसियों ने सोमालियाई तथा सूडानी छात्रों को इससे अलग करने का पूरा यत्न किया...। (वे) अरबी भाषा-भाषी देशों से आये हैं—इस आधार पर ईराकियों से कहा गया कि वे उन्हें (सोमालियाइयों तथा सूडानियों को) मास्को स्थित 'अरब लीग एसोशिएशन' की सदस्यता पेश करें। परन्तु जब वे सोमालियाइयों तथा सूडानियों के अलग करने में सफल हो गए तो उन्होंने एक और शर्त्त माने बिना 'अरब लीग एसोशिएशन' का सदस्य बनाने से उन्हें इंकार कर दिया। वह शर्त्त यह थी कि सोमालियाई तथा सूडानी छात्रों को चाहिए कि वे 'ब्लैक अफ्रीकन स्टुडेंट्स यूनियन के शेष सदस्यों को पृथक्-पृथक् देशों के आधार पर अरब लीग एसोशिएशन में सम्मिलित होने की प्रेरणा करें और इसकी एक फेड्रेशन बना लें। हमने ऐसा करने से इंकार कर दिया कारण यह था कि हमें यह बात समझ में आ सकती थी कि यह सब 'ब्लैक अफ्रीकी स्टुडेन्ट्स यूनियन' की एकता को भंग करने की एक चाल है।"

साथ ही साथ अधिकारियों ने 'यूनियन' के एक-एक सदस्य के विरुद्ध कार्यवाही की। 'औकोंक्वो' को स्मरण है कि उसको तथा और बहुत-सों को घटिया तथा भीड़-भाड़ वाले छात्रावासों में भेज दिया गया, 'कोम्सो-

मोल' के सदस्यों ने बार-बार उन पर दबाव डाला कि वे 'यूनियन' से पृथक् हो जायें और कइयों को ऐसे झगड़ों में पीटा गया जो कि अधिकारियों द्वारा प्रोत्साहित प्रतीत होते थे।

मुलेकेज़ी कहता है कि 'जो अफ्रीकी 'सहयोगी' थे उनको बेहतर मकान दे दिए गए...। शेष हम सबको दण्ड दिया गया। हमारी छात्रवृत्ति की अंश रूप १५०० रूबल की जिस छुट्टी अदायगी को देने का वचन दिया गया था वह हमें नहीं दी गई।"

जब ये विधियाँ असफल हो गईं तो अधिकारियों ने सुझाव रखा कि 'रशियन लैंग्वेजेज़ इंस्टिट्यूट' की एक 'गैर-सरकारी' स्टुडेंट्स यूनियन होनी चाहिए, जिसमें 'ब्लैक अफ्रीकी स्टूडेण्ट्स यूनियन' के सदस्य तथा इंस्टिट्यूट के लैटिन अमरीकी, ईराकी तथा रूसी छात्रों के प्रतिनिधि हों—"जब यह संस्था कुछ दिन काम कर चुकी तो हमने पता लगाया कि इसकी बैठकों के सभी कार्यक्रम रूसी छात्रों की गुप्त बैठकों में बनाए गए थे और वहीं उनके विषय में निर्णय किया गया था—परिणामतः हमने इस संगठन में सम्मिलित होने से इन्कार कर दिया।"

१९६० की वसन्त ऋतु में तब दबाव सर्वथा असह्य हो उठा जबकि मुलेकेज़ी के अनुसार : "पतझड़ में यह बात फूट निकली कि मास्को स्टेट युनिवर्सिटी के छात्र, केवल विदेशियों के लिए स्थापित 'फ्रेंडशिप युनिवर्सिटी' में स्थान्तरित कर दिए जाने हैं। हमारी 'ब्लैक अफ्रीकी यूनियन' ने जिसमें कि उस समय १४ अफ्रीकी देशों के सदस्य उपस्थित थे, निश्चय किया कि युगांडा के चिकित्सा विज्ञान का द्वितीय वर्ष का छात्र स्टैनले उमर उच्च शिक्षा मन्त्रालय को लिखकर यह मांग करे कि भेद-भाव की नीति समाप्त की जाय, हमें संरक्षण तथा प्रतिष्ठा मिलनी चाहिए और फ्रेंडशिप युनिवर्सिटी को पृथक् नहीं रखना चाहिए।

"इसके उत्तर में स्टेनले को रूस से निकाल दिया गया। लन्दन पहुँच कर उसने सम्वाददाताओं को अपने अनुभव सुनाए। तब रूसियों

ने उस पर अनैतिकता, शराबीपन, 'साम्राज्यवादियों के जत्थे में सम्मिलित होने' के झूठे आरोप लगाए। इन आरोपों के समर्थन में दिए गए वक्तव्य पर हस्ताक्षर करने वालों को सरकारी प्रचारकों की तरफ से एक-एक हजार रूबल की पेशकश की जाने लगी।

"अब हम अफ्रीकियों को क्रोध आ गया। हमने बैठक करके उस साम्यवाद के प्रति प्रबल अभियोग-पत्र तैयार किया जो हमें कभी इतना आकर्षक लगा था। हमने इस अभियोग-पत्र को अपनी-अपनी अफ्रीकी सरकार को भेजना चाहा, परन्तु रूसियों ने इसका भेजा जाना रोक दिया। एक बैठक में हममें से प्रत्येक ने यथासम्भव शीघ्रातिशीघ्र सोवियत संघ से बाहर निकल जाने का संकल्प लिया।"

'ब्लैक अफ्रीकी युनियन'-विरोधी आंदोलन के परिणामस्वरूप सोवियत संघ छोड़ने वालों में अमर, मूलकेज़ी, औकोंक्वो थे; औकोंक्वो उस अभियोग-पत्र की प्रतिलिपि अपने साथ ले आया था जो कि उन्होंने तैयार किया था। यह अभियोग-पत्र 'सोवियत संघ स्थित अफ्रीकी तथा दूसरे विदेशी छात्रों के साथ सोवियत प्रशासन जिस प्रकार के छल-कपट, धमकियां, क्रूरता तथा भेदभाव से पेश आते थे' उनका एक महत्व-पूर्ण सूचीपत्र था। इस अभियोग-पत्र का अफ्रीकी तथा शेष स्वतन्त्र संसार में व्यापक प्रचार किया गया।

महदी को भी चेकोस्लोवाकिया में विदेशी छात्रों की राजनीतिक कार्यवाहियों में साम्यवादी हस्तक्षेप का प्रत्यक्ष अनुभव हुआ। चेक पार्टी सेण्ट्रल कमेटी के अफ्रीकी खण्ड तथा शिक्षा मन्त्रालय द्वारा भड़काए जाने पर—(ये दोनों ही प्रचुर धन प्रदान करते थे)—प्रेगस्थित अफ्रीकियों के लिए नवम्बर १९५९ में एक गोष्ठी इस उद्देश्य से स्थापित की गई कि "हम अफ्रीका की विशेष दशाओं के अनुसार वहाँ अपनी सैद्धान्तिक शिक्षा का प्रयोग कर सकें।"

यद्यपि यह गोष्ठी केवल साम्यवादियों के लिए ही थी—यहाँ तक

कि इसकी बैठकें इसलिए गुप्त रखी जाती थीं कि गैर-साम्यवादी इनको न जान सकें—परन्तु फिर भी "विचार विमर्श का परिणाम यह हुआ कि बहुमत ने चेक पद्धति को अस्वीकार कर दिया।"

"सब इस बात पर तो सहमत थे कि साम्यवाद अच्छा है और इसको अफ्रीका में लागू किया जा सकता है। परन्तु अधिकतर को यह बात समझ में आ गई कि उस चेक-पद्धति से बचना चाहिए जिसके परिणाम-स्वरूप लोग साम्यवाद के विरोधी हो गये हैं, एक साम्यवादी श्रीमन्त वर्ग की सृष्टि हो गई है तथा मूलभूत स्वतन्त्रताएँ जाती रही हैं। उदाहरण के लिए बहुतों ने यह तर्क उपस्थित किया कि, अफ्रीका में न तो अधिनायकतन्त्र है, न कोई सर्वहारा वर्ग ही है इसलिये वहां सर्वहारा वर्ग का अधिनायकतन्त्र हो ही नहीं सकता। फिर इस स्थिति में, साम्यवादी सिद्धान्तों के अधिकारी प्रतिपादक—मार्क्स, एंजल्स, लेनिन तथा स्तालिन—हमारी सहायता कैसे करते ? उन्होंने हमारी सहायता न तो की ही, न वे कर ही सकते थे।"

महदी को निश्चय है कि अधिकारियों की 'विस्तृत तथा सुसम्पादित गुप्तचर पद्धति' द्वारा ही उन्हें 'हमारी गोष्ठी के साम्यवादी सिद्धान्त से विचलित स्वरूप का पता लग गया।" चार महीने बाद पार्टी सेण्ट्रल कमेटी के एक प्रतिनिधि ने उन्हें बताया कि कमेटी की इच्छा है कि वे अध्यापकों की नियुक्ति करके तथा बैठकों के लिये कोई केन्द्रीय स्थान निश्चित करके अपनी गोष्ठी में 'सुधार' करें। इस प्रकार उनके लिए देखरेख करने तथा नियन्त्रण रखने का काम अधिक सरल हो गया और साम्यवादी सिद्धान्तों से विचलित होने की बातें, कम से कम खुले रूप में, होना बन्द हो गईं।

# ४

# गलियों में कटु अनुभव

साम्यवादी समाज में जीवन की जो कठिनाइयाँ विद्यमान हैं, उनका विदेशी छात्रों पर पर्याप्त प्रभाव है। अधिकतर छात्र ओकोंक्वो द्वारा निर्दिष्ट "अत्यधिक जोशीले साम्यवादी प्रचार" के पढ़ने से तथा शायद लौटे हुए यात्रियों (जिन्होंने उन 'दर्शनीय' स्थानों की यात्रा की थी जो कि सदा ऐसे यात्रियों के यात्राक्रम का एक अंश रहते हैं) के विवरणों से बने एक साम्यवादी देश के चित्र में तथा कक्षा के कमरे एवं छात्रावास के बाहर के जीवन की वास्तविकता में भेद देखकर स्तब्ध रह गये।

यह बात सदा तत्काल ही स्पष्ट नहीं होती—विशेषकर वहां तक जहाँ तक कि जीवन-स्तरों तथा मूलभूत स्वतन्त्रताओं का सम्बन्ध है। मास्को के प्रथम दर्शन से कोई भी विदेशी छात्र प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता, परन्तु, जैसा कि ओकोंक्वो ने बताया है, "वे कहते हैं कि

मास्को में भिखारी नहीं हैं। हाँ, उन विस्तृत खुली सड़कों पर भिखारी नहीं हैं जिनमें से कि यात्रियों को ले जाया जाता है। परन्तु गलियों में भिखारी हैं।"

वास्तविक सोवियत संघ के दर्शन करने के लिये विदेशी को राजधानी से बाहर निकलना पड़ता है, और यह करना सदा सरल नहीं होता। नोर्वे के फ्रांसिस सेज्रस्तेद ने किसी प्रकार तिगड़म से जारोस्लाव, वाल्दीमीर तथा इवानोवो की सैर करके आये एक दूसरे विदेशी छात्र से हुए वार्तालाप का विवरण इस प्रकार दिया है: "उसने हमें बताया कि इन नगरों में जीवन स्तर इतने निम्न स्तर का है कि उस पर सहसा विश्वास नहीं हो सकता। तथाकथित बौद्धिक-वर्ग तक में व्यापक गन्दगी तथा भयानक भीड़भाड़ थी। उसने बताया कि लगभग दो लाख जनसंख्या के एक नगर में मुख्य सड़क पर केवल एक ही बड़ी जलमोरी थी। यह यात्रा निराशाजनक परन्तु प्रकाश-प्रदायक रही। इसने मुझे सिखा दिया कि मास्को एक वस्तु है परन्तु रूस सर्वथा दूसरी वस्तु है।"

चेकोस्लोवाकिया में ब्राजीलियों पर भी ऐसी ही चोट पड़ी।... रोद्रिग्वेज लिखता है कि "हमारे सामने जो अद्भुत चित्र चेकोस्लोवाकियाई जीवन के चित्रित किए गए थे, घर लौटकर उनकी तुलना जब मैंने वहां के वास्तविक जीवन से की तो मुझे बार-बार चोट पहुँची। ब्राजील में सारा बल "तकनीकी लोगों की सेवा करती है" पर था। हम समझते थे कि वहां के लोग प्रसन्न होंगे। परन्तु वहाँ हमने लोगों को प्रतिदिन दस अथवा अधिक घंटे मेहनत करते पाया। बहुतसों को तो केवल जीवन-निर्वाह के योग्य कमाने के लिए दो-दो नौकरियाँ करनी पड़ती हैं।"

महदी को पता लगा कि "जिस 'समाजवादी' आर्थिक प्रगति की बहुत शेखी बघारी जाती है वह केवल एक ढोंग था। चेक क्राउन की क्रयशक्ति नहीं के बराबर थी—और जो उपभोक्ता-वस्तुएं उपलब्ध भी थीं वे

प्राय: घटिया तथा बनावट में भद्दी थीं। बाद में मैंने अनुभव किया कि... (चेकोस्लोवाकिया) की वास्तविक औद्योगिक प्रगति १९४८ के साम्यवादी विप्लव से पूर्व ही सम्पन्न हो चुकी थी और यह अनुभव किया कि अब तो देश पर केन्द्रीय सत्तावादी सरकार का कुशासन ही है।"

चीन में भी वही विषमताएँ दिखाई दीं। चाईल के मिगोन ने विश्वविद्यालयीय जीवन से हुए जिस भ्रमनिवारण को प्रकट किया था उसकी तुलना उससे की गई थी कि जो कुछ उसने चीनियों की दशाओं के संबंध में देखा था। पेकिंग के लोग अवर्णनीय गरीबी का जीवन बिता रहे थे और वे दीन-हीन, थके हुए तथा अधपेट भूखे थे। भोजन और वस्त्र की वहां कठोर राशन बन्दी (नियन्त्रित वितरण) थी।

बहुत से छात्र उत्तमता तथा व्यवहार के साम्यवादी मानकों से ऊब उठे थे। दुकानों में (जहाँ अब भी अंकगणक तख्ते का प्रयोग होता था) तथा सरकारी अनुभागों से काम कराने में समय बर्बाद होता था; रेस्तराँ में जीवन स्तर घटिया थे—लगता था कि यहां के कर्मचारी 'सेवा' तथा 'दासता' में कोई भेद नहीं समझते; घर के लिए पार्सल भेजने में अपार बाधाएँ थीं—ऐसी बहुत सी शिकायतें थीं—जिनका उपचार बहुत कम होता था।

एक नाइजीरियाई छात्र इस बात को विश्वस्त मानकर रूस गया था कि साम्यवाद के पास देने को बहुत कुछ है—इस छात्र की प्रतिक्रिया सेजरस्तेद ने इस प्रकार उद्धृत की है—"परन्तु उन दो वर्षों की अवधि में जबकि वह यहाँ रहा, उसके कई धक्के लगे। सच्चाई के अभाव का—जो सोवियत समाज का एक विशेषक गुण है इस तथ्य का —कि एक ओर तो वे सब प्रकार का गन्दा व्यापारिक लेन-देन कर लेते हैं तथा दूसरी ओर अपने आपको महान्, शक्तिशाली तथा पूरा साधु दिखलाने का यत्न करते हैं—उस पर बहुत ही बुरा प्रभाव पड़ा है।"

सोमालियाइयों के लेखानुसार, कभी-कभी रूसियों के फूहड़पन के

तथा व्यक्ति के लिए उनकी चिन्ता के अभाव के परिणाम बड़े गम्भीर हुए हैं—"यदि कोई रोगी हो गया तो उसे बहुत ही बुरे अस्पताल में पहुँचा दिया गया और कारण कि वह 'नीग्रो' था, उसको छज्जे के आखरीं सिरे पर छोड़ दिया गया जहाँ उस पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। हममें से एक को अपना एपेंडिक्स (उण्डुक) निकालने के लिये अस्पताल ले जाया गया; वहाँ उसकी चिकित्सा की व्यवस्था इतनी बुरी हुई कि उसको साधारणतया पर्याप्त दस दिन नहीं, अपितु पूरे दो महीने लगे।"

पेकिंग में मिगोन भोजन के विषाक्त होने से रोगी हो गया। वह २१ दिन के बाद भी निर्बल तथा दुर्बल रहा और किसी नोर्वे के छात्र के हस्तक्षेप के बाद ही स्वास्थ्य लाभ कर सका—इसने अपने दूतावास से दवाइयाँ लीं।

विदेशी छात्रों के भ्रान्ति निवारण का सम्भवतः सबसे अधिक भयानक पहलू इस बात की क्रमशः जानकारी है कि यहाँ मूलभूत स्वतन्त्रताएँ हैं ही नहीं।

महदी लिखता है कि "जो व्यक्ति किसी तथा कथित 'समाजवादी' देश में नहीं रहा है, वह तो पुलिस राज्य में विद्यमान शासन के पूरे प्रभाव को, सामान्य जन की इन दैनिक भीतियों को कि कहीं उनकी भुनभुनाहटों की सूचना पुलिस को न मिल जाए, मौलिक स्वतन्त्रताओं के अभाव में विचारों, सूचनाओं एवं समाचारों के गैर-साम्यवादी स्रोतों के न होने के कारण विचारधारा, संस्कृति तथा शिक्षा पर होने वाले गलघोंटू प्रभाव को और उस विधि को कि जिससे मनुष्यों के मन केन्द्रीय सत्तावादी प्रशासन के आदेशों के समर्थन की आवश्यकता के अनुसार तोड़े-मरोड़े जाते हैं—नहीं समझ सकता। चेकोस्लोवाकिया एक पुलिस राज्य है।"

औकोंक्वो भी ऐसे ही विचारों से परेशान रहा : "हममें से वे छात्र जिन्होंने दूसरे देशों का साहित्य पढ़ रखा था, धीरे-धीरे सोवियत-संघ

से बाहर की घटनाओं से अनभिज्ञ होते चले गये। प्रेस पर नियन्त्रण है, रेडियो पर रोक लगी हुई है...।"

सात सोमालियाइयों की निराशा का सतत स्रोत यह रहा कि रूसी उनके पत्र-व्यवहार में हस्तक्षेप करते थे : "बाहर से आने वाली हमारी डाक पर सोवियत अधिकारी इसलिए नियन्त्रण रखते थे कि उन व्यक्तियों का पता लगाया जा सके कि जिनको अधिक लाभदायक एजेण्ट बनाया जा सकता था...। जब हम सोमालिया लौटकर घर पहुँचे तो हमें पता लगा कि हमने अपने परिवार वालों तथा मित्रों को पत्र लिखे थे उनमें से अधिकतर...कभी बाँटे ही नहीं गए।"

आँख खोल देने वाली एक बात यह और थी कि साम्यवादी देशों के कुछ क्षेत्रों में यात्रा पर प्रतिबन्ध थे, कभी-कभी तो यात्रा का सर्वथा निषेध ही कर दिया जाता था। अमर लिखता है : "हमें मास्को के केंद्र से २० किलोमीटर (लगभग १२ मील) बाहर विशेष अनुज्ञा लिए बिना यात्रा की अनुमति नहीं थी। इसके अतिरिक्त बड़े-बड़े क्षेत्र—दूसरे सभी विदेशियों की भाँति...हमारे लिए भी सर्वथा निषिद्ध थे। व्यवहार में यह बात थी कि यदि कोई छात्र स्वतन्त्ररूप से मास्को से बाहर कितनी ही दूर की यात्रा करना चाहता तो उसको (लैंग्वेजेज इंस्टिट्यूट) के संचालक के नाम एक विशेष प्रार्थना-पत्र लिखना होता था—इस पर वह (संचालक) विदेशी मामलों के मन्त्रालय तथा आन्तरिक मामलों के मन्त्रालय को सूचना देता था।

"बेशक, अवकाश के दिनों में व्यवस्थित परिभ्रमण भी होते ही थे। परन्तु जैसा कि मेरे कई मित्रों ने मुझे बताया है, ये परिभ्रमण बहुत ही नीरस होते थे। छात्रों को नियमित पर्यटकों द्वारा दर्शनीय स्थानों पर ले जाया जाता था—वे स्वतन्त्रता से किसी भी दूर तक भटक नहीं सकते थे अथवा अपनी इच्छानुसार स्थानों की टोह नहीं ले सकते थे।"

पेकिंग में मिगोन के मन पर भी इन रुकावटों का भारी बोझ रहा। उसको अकेले तो अजायवघरों में भी जाने की अनुमति नहीं थी—उसे पहरेदार तथा सरकारी अनुज्ञापत्र दोनों लेने होते थे। कई रेस्तराँ तथा दूसरे सर्वजनिक स्थान, विशेषकर वे जिनमें पार्टी के अधिकारी तथा विदेशी प्रतिनिधिमण्डल प्रायः आते रहते थे, निर्धारित सीमा के बाहर ठहराए हुए थे। उदाहरण के लिए, 'वी दा हें' के सुन्दर समुद्र तट पर छात्रों तथा सामान्य चीनियों का प्रवेश निषिद्ध था—यह वही सुन्दर तट है जो विदेशों में जाने वाली चीनी प्रचार पत्रिकाओं में इतनी प्रमुखता से सामने दिखाई देता है। राजधानी के बाहर छोटी-से-छोटी यात्रा के लिए भी अनुज्ञापत्र की आवश्यकता रहती थी।

एक घटना के कारण जिसमें महदी तथा कई दूसरे अफ्रीकी छात्र आई० यू० एस० के आमन्त्रण पर प्रेग से चीन की यात्रा पर चल पड़ने पर फँस गये थे, लगभग बड़ी गम्भीर विपदा आ पड़ी थी। चेक-सोवियत सीमा पर सशस्त्र सिपाही ने आग्रह किया कि छात्रों को गाड़ी से उतर जाना चाहिए और राजधानी को वापस लौट जाना चाहिए—यद्यपि यह तथ्य था कि उन सबके वीसा नियमित थे और उन्होंने सब उपयुक्त अधिकारियों को सूचना दे रखी थी।

महदी को स्मरण है कि "मैंने तथा दो अन्यों ने गाड़ी से उतरने से इन्कार कर दिया; उस समय हमारी मनोवृत्ति पर्याप्त रणोद्यत थी। हमने पहरेदारों से कहा 'आवश्यक हुआ तो हम तुमसे लड़ बैठेंगे', 'हम एक दूसरे साम्यवादी देश में जा रहे हैं, तो फिर तुम हमें रोकने की कोशिश क्यों करते हो?' बन्दूक का डर दिखाने पर ही हम नीचे उतरने को सहमत हुए···।"

एक रात खुले में बिताने के बाद, छात्रों को पेकिंग जाने दिया गया। बलात् रोकने का कोई कारण नहीं बताया गया। "मैंने इसको भी अपने पुलिस राज्य की जानकारी के सर्वयोग में जोड़ लिया। उन्हें तुम्हारा

विश्वास नहीं है। व्यक्तिरूप में तुम्हारी कोई गिनती नहीं है। वे तुम्हें इधर-उधर धक्के देंगे और तुम्हें वे खाने पड़ेंगे।"

साम्यवादी देशों में सभी विदेशियों को सम्भाव्य गुप्तचर तथा झंझट खड़ा कर देने वाला समझा जाता है—परन्तु तो भी अधिकतर विदेशी छात्रों को यह जानकर परेशानी हुई कि साधारण जनता के साथ उनके सम्बन्धों की देखरेख रखी जा रही है और उसकी सूचना दी जाती है।

अमर लिखता है कि "विदेशियों का संग करने वाले अपने निजी नागरिकों के विषय में रूसी कई प्रकार से पता लगा लेते हैं; मकानों के प्रत्येक खण्ड में कम से कम एक कर्मचारी गुप्त पुलिस का नियुक्त है, जो उस खण्ड के किरायेदारों के अतिथियों की सूचना देता है। बहुत से पड़ौसी भी गुप्तचर हैं। हम अफ्रीकी जिस इंस्टिट्यूट में रहे उसके साथ के पड़ौस से तो कमरों और मकानों पर असाधारणतया कड़ी निगरानी रखी जाती प्रतीत हुई।"

प्रेग में महदी को एक विशेष आपत्तिजनक अनुभव हुआ जिससे यह सिद्ध होगा कि नागरिक के लिए विदेशियों से सम्पर्क रखना कितना भयङ्कर हो सकता था। एक रेस्तराँ में वह तथा तोगो का एक छात्र अपनी बात समझ नहीं पा रहे थे कि एक चेक वृद्ध महिला उनकी सहायता के लिए आ गई—यह एक कुशल भाषाविद् थी। वह उनकी मेज पर बैठकर अपने जीवन के विषय में कुछ बताती रही और राज्य द्वारा जनता के उत्पीड़न की आलोचना करने लगी। महदी उस समय सन्देह-निवृत्त (पक्का) साम्यवादी था; "उसने उसकी टिप्पणियों को किसी बुढ़ऊ की टिप्पणी समझ कर क्षमा कर दिया।"

"अगले दिन मेरी तथा उस तोगो-छात्र की, संचालक के सामने पेशी हुई। उसने कहा—"महदी, वृद्धाने रेस्तराँ में जो कुछ तुम्हें बताया था, मैं चाहता हूँ कि तुम उसे दुहराओ।"

"मैंने उत्तर दिया कि उसने कई ऐसी बातों का उल्लेख किया था

जो उसकी सम्मति के अनुसार चेक-पद्धति की गलतियाँ थीं, परन्तु वे कोई महत्वपूर्ण नहीं थीं। मैंने यह भी कह दिया—"कुछ भी हो, अपने मन की बात कहने के लिए वह स्वतन्त्र ही थी !"

एक सप्ताह बाद महदी को एक मित्र से पता लगा कि उक्त महिला को गिरफ्तार कर लिया गया था : "मुझे क्रोध आ गया। मेरे तोगो—मित्र को विश्वास ही नहीं हुआ—और एक सेनागाली लड़की तो, जो इस महिला को जानती थी, यह सुनकर चिल्ला उठी। वस्तुतः तो वह लड़की इतनी अधिक प्रभावित हुई कि कुछ ही महीनों में वह घर लौट गई।"

अन्त में तीनों संचालक तथा शिक्षा मन्त्रालय के अधिकारियों से मिले; उन्हें बताया कि वह महिला युद्ध के समय जर्मन गुप्तचर रही थी। जब उन्होंने पूछा कि उसको १३ वर्ष बाद अब क्यों गिरफ्तार किया जा रहा है तो इसका कोई सन्तोषजनक स्पष्टीकरण नहीं दिया गया। महदी बड़ी उदासी से टिप्पणी करता है :

"हम चकरा गए। यह तो यह चेकोस्लोवाकिया नहीं है जिसके कि विषय में हम पढ़कर आए थे : वह देश कि जिसके विषय में बताया गया था कि वहां बोलने की आजादी है तथा न्याय होता है। इस बार मेरी साम्यवादी सैद्धान्तिकता ने साथ नहीं दिया। मुझे याद आया कि अपनी मातृभूमि सोमालिया में हमने अंगरेजों को गलियों में उपनिवेश बसाने वाले तथा साम्राज्यवादी कह कर अपमानित किया था—परन्तु उन्होंने हमें जेल में नहीं डाला।

"मुझे उस वृद्ध महिला का क्या हुआ—कभी मालूम नहीं हुआ : उसको अपनी नासमझी का भारी दण्ड भुगतना पड़ा होगा।"

इस प्रकार के वातावरण में छात्रों तथा जनसाधारण के आपसी सम्बन्धों में प्रायः तनातनी का रहना अनिवार्य था। एक आदर्शभूत नमूना यह रहता था कि आरम्भ के सम्पर्क मित्रता के रहते थे; फिर अधिकारी यह अनुभव करके कि छात्रों के मौलिक दृष्टिकोण तथा

सम्मतियों का जनसाधरण पर पर्याप्त प्रभाव पड़ रहा है, आदेश देते : "भाई-चारा मत करो।"

महदी ने 'हाउस्तका' में पहुँचने पर घटना का वर्णन इस प्रकार किया है : "...अफ्रीकी छात्रों तथा स्थानीय लोगों के आपसी सम्पर्क बहुत मित्रतापूर्ण थे। बहुत से घरों में हमारा स्वागत हुआ और कुछ चेक लड़कियों के मित्र बन गए। फिर, वातावरण अचानक बदला। जिन लड़कियों से छात्रों ने समय निश्चित कर रखा था वे नहीं आईं। जब तक एक लड़की ने साहस करके स्पष्टीकरण नहीं किया, हमें कुछ भी समझ में नहीं आया। तीन सप्ताह पहले कालेज के संचालक ने सब स्थानीय स्कूलों तथा फैक्टरियों का दौरा किया था और लोगों को 'विदेशियों से' दूर रहने की चेतावनी दी थी। शेष नगर निवासियों के समान यह लड़की भी इस आदमी से भयभीत थी, कारण कि, वह कालेज का संचालक भी था और कम्यूनिस्ट पार्टी की स्थानीय शाखा का सभापति भी था।"

मास्को में अमर ने वही स्थिति देखी : "बहुत से भले रूसी परिवारों ने हमारा अपने बीच स्वागत किया और सहृदयता का व्यवहार किया परन्तु दुर्भाग्य से, बहुत-सों को सोवियत अधिकारियों ने केवल इस कारण कष्ट दिया कि उन्होंने हमें बहुत अच्छा मित्र बना लिया था।"

स्वभावत: अधिकतर छात्रों ने यह कल्पना कर रखी थी कि जातिगत भेदभाव के प्रमाण ढूंढ़ निकालने के लिए तो एक साम्यवादी देश का स्थान अन्तिम ही होगा। अफ्रीकी सरकारों को 'ब्लैक अफ्रीकी स्टुडेण्ट्स यूनियन' ने जो प्रतिवाद पत्र भेजा था उसमें बताया गया कि सोवियत पद्धति में भेदभाव के बहुत से तथा गहरे रूप विद्यमान हैं। विदेशी छात्रों को, विशेषकर एफ्रो-एशियाइयों को रोमांचकारी अपमान सहन करने पड़े हैं।"

इस लेख में ऐसे कई मामलों का भी वर्णन किया गया है कि जिनमें

रूसी लड़कियों से विवाह करने के इच्छुक काले छात्रों के मार्ग में प्रत्येक प्रकार की बाधाएं खड़ी कर दी गईं। यदि लड़की छात्रा हुई तो उसको स्नातक-प्रमाणपत्र नहीं दिया जाएगा अथवा काम नहीं मिलेगा; कइयों को यह कह कर डराया गया कि उनके सम्बन्धियों पर जुर्माना किया जाएगा तथा उन्हें देश छोड़ने की अनुज्ञा नहीं दी गई। और एक मामला इस प्रकार था : "एक अफ्रीकी छात्र तथा सोवियत लड़की ने, जिनका परस्पर प्रेम था, विवाह करने की अनुज्ञा के लिए प्रार्थना-पत्र दिया; उच्च शिक्षा-मन्त्रालय ने अफ्रीकी छात्र को तो तीन दिन के भीतर सोवियत संघ छोड़ देने का आदेश दिया और लड़की गायब हो गई।"

सात सोमालियाइयों को भेदभाव का ज्ञान बड़ी कटुता से हुआ : "रूसी हमें हीन-जाति मानते हैं, उन्होंने हमसे ऐसा ही व्यवहार किया। सोवियत संघ में रहते हुए हम प्रायः सुनते रहे कि वे हमें 'काले बन्दर' के नाम से पुकारते हैं।···जहां भी हम जाते थे लोग हमें आश्चर्य से ही नहीं अपितु जानी-बूझी चिढ़ की दृष्टि से देखते थे...। सार्वजनिक स्थानों तथा युवक क्लबों में...बहुत से लोग हमसे ऐसे बचते हैं कि मानों उन्हें हमसे किसी प्रकार की छूत लगने का डर हो।"

प्रेग की सड़कों पर महदी पर ताने कसे गए। दूसरे अफ्रीकियों के समान उसने भी वहाँ चेरनोक (Chernoch) अर्थात् 'काला' की पुकार प्रायः सुनी। "जब दूसरे छात्रों ने इस अशिष्ट आचरण की मुझसे शिकायत की तो मैंने चेकोस्लोवाकियों के व्यवहार को क्षमा के योग्य समझा... 'धीरज रखो—सम्भव है उन्होंने पहले कभी अफ्रीकी नहीं देखे हों। और फिर, यद्यपि यह एक 'समाजवादी' देश है, बहुत से लोगों को अभी तक बुर्जुआ जातिगत प्रवृत्तियों की छूत लगी हुई होगी।" परन्तु, साथ ही, जब उसको यह पता लगा कि चेक साम्यवादी राज्य भी जातिगत कुभावना को प्रोत्साहित करता है तब उसको यह कठिन प्रतीत हुआ कि वह इस समयोचित मार्क्सवादी स्पष्टीकरण को प्रशंसार्ह ढंग से प्रदर्शित कर सकता।

श्रौरों की भांति महदी ने भी यह पाया कि बहुत से लोग विदेशी छात्रों से केवल इस कारण घृणा करते हैं कि वे साम्यवादी हैं अथवा उनसे सहानुभूति रखते हैं : "...उन्हें पता था कि ये लोग इसी प्रयोजन से पढ़ाए जा रहे हैं कि ये अपने-अपने देशों में साम्यवादी क्रान्ति का नेतृत्व करें—श्रौर वे नहीं चाहते थे कि ऐसा हो, उन्हें पता था कि साम्यवाद के कारण चेकोस्लोवाकिया पर क्या कष्ट आए हैं।" (दूसरों से, उदाहरण के लिए मिश्रियों से, बहुत से साम्यवादियों को इस कारण घृणा है कि वे एक 'अधिनायकतंत्रवादी' (फासिस्ट) राज्य के प्रतिनिधि हैं।)

और बदले में महदी साम्यवादियों से, विशेषतया 'नये वर्ग' से—"उन पेशेवर साम्यवादियों"—से घृणा करने लगा पार्टी तथा राज्य के प्रति जिनकी भक्ति का आधार ही जनसाधारण को हानि पहुँचा कर अपने आप खूब धन कमाने के अवसर हैं। मेरा अनुमान है कि ९० से ९५ प्रतिशत लोग राज्य के विरोधी हैं और ऐसी अवस्था का कारण अधिकतर 'नया वर्ग' है।

जो नवयुवक स्वतन्त्र समाज में जीवन-यापन करने के अभ्यासी थे उन पर साम्यवादी जीवन का दबाव एक साथ इतना पड़ता था कि उसका हिसाब नहीं लगाया जा सकता। परन्तु कई बार तो इसके दु:खान्त परिणाम हो चुके हैं—मास्को-स्थित विदेशी छात्रों में कई आत्म-हत्याओं की घटनाएँ होने की सूचना मिली।

# ५

# प्रचारार्थ बुद्धू

रेडियो ने पश्चिमी अफ्रीका की कच्ची झोंपड़ियों तथा अनेक मंजिले आधुनिक भवनों में धूम मचा दी...वक्ता एक घानाई छात्र था जो मास्को की मई दिवस की सैनिक कवायद के अनुभव सुना रहा था। उसने उन विशाल अन्तर्महाद्वीपी प्रक्षेपणास्त्रों का वर्णन किया जो उस दिन ठेलों की एक लम्बी कतार पर लदे हुए 'लालचौक' (Red Square) में से लुढ़कते चले गए थे।..."वे युद्धाध्यक्षों को भी ले जा सकते हैं, परन्तु सोवियत संघ में उनका प्रयोग शान्तिमय प्रयोजनों में होता है।"

शैली निश्चय ही साम्यवादी थी, इसमें कोई भूल नहीं हो सकती। यह वस्तुतः एक मास्को रेडियो का नया भाषण था और घानाई छात्र उन बहुत-से विदेशी छात्रों में से केवल एक था जिन्हें बाधित करके, घूंस देकर अथवा मूर्ख बनाकर, घर तथा बाहर—विदेश में, साम्यवाद के समर्थन में सहायक बनाया जाता है।

माध्यम कुछ भी रहे, औकोंक्वो के कथनानुसार इन प्रचार-कार्यों का दुहरा उद्देश्य रहता है : 'रूसी न केवल अपनी पद्धति संसार से मनवाने की कोशिश कर रहे थे अपितु साम्यवाद के विषय में अपने निजी लोगों को विश्वास दिलाने का यत्न करते हुए भी कठोर संकट में पड़े हुए थे। और ४० वर्ष से अधिक समय तक साम्यवादी शासन रहने के बाद यह दशा थी।"

प्रचार-कार्य का उत्तरदायित्व लेने के दबाव को पर्याप्त मात्रा में बनाया रखा जाता है—और छात्रों की शिकायतों का यह एक अविच्छिन्न स्रोत रहता है। मास्को में हुए अपने अनुभवों के विषय में लिखते हुए सात सोमालियाइयों को याद आता है कि "छात्रों को अपना सारा समय अध्ययन तथा अपने तकनीकी ज्ञान की वृद्धि में लगाने के स्थान पर, उसके एक बड़े भाग को बलात्, राजनीतिक सभाओं तथा प्रदर्शनों में, प्रचार-भाषणों के सुनने में; लगाना पड़ता है।...विदेशी छात्रों से; विशेषकर अफ्रीकी छात्रों से लगातार यह अनुरोध किया जाता है कि वे साम्यवादी पद्धति की प्रशंसा करें, और इस पद्धति की, इसके नेताओं की, इसकी जीवन-प्रणाली की तथा दूसरे देशवासियों की स्वतंत्रता की रक्षार्थ की गई इसकी कार्यवाहियों की सराहना में अपने वक्तव्य जारी करें।..."

'जो कोई साथ देने को तैयार नहीं होता, अपितु, निष्ठा तथा स्वतंत्रता के अभिप्राय से देखे-सुने के विषय में निर्णय करने में अपनी तर्कशक्ति का आश्रय लेता है, उनको कृतघ्न समझ कर अपने साथियों से अलग कर दिया जाता है, उसको, अपने देश में लौट आने पर भी अपमानित तथा लांछित किया जाता है।"

एवरेस्ट मुलेकेज़ी ने मास्को-स्थित अपने छात्रावास के एक विशेष दृश्य का वर्णन इस प्रकार किया है—"सरकारी प्रचारक निर्यात के लिए हमारे फोटू मांगते हुए, हमारे देशों को प्रसारित करने के लिए फीते पर रिकार्ड किए गए हमारे वक्तव्य मांगते हुए, हमारे शयनागारों पर मंडराने

लगे। एक भटकर्ता ने सुझाया—"तुम यह क्यों नहीं बताते कि यहां सब कुछ पश्चिमी देशों के औपनिवेशिकवाद से कितना भिन्न है ?"

साम्यवादी कभी-कभी यह कह कर कि तुम्हारी बोली बोल सकने वाले व्यक्ति यहां कम हैं, छात्रों को अर्धस्थायी प्रचार कार्य—विशेषकर रेडियो पर—करने के लिए तैयार कर लेते हैं।

एंड्रयू अमर का कहना है कि मास्को रेडियो ने यही चाल चली थी : "परन्तु बहुत बार तो...(छात्र) असहमत हो जाता था और रूसियों द्वारा सौंपी गई सामग्री को प्रसारित करने से इंकार कर देता था। इनमें से बहुतेरे तो ईमानदार नवयुवक थे और मुझे एक वह विशेष उदाहरण याद आता है जबकि 'मास्को रेडियो' के नए 'स्वाहिली विभाग' में नियुक्त मेरा एक मित्र मेरे पास आया—वह इस कारण पर्याप्त घबराहट में था कि उसको सोवियत संघ में वह सामग्री प्रसारित करने के लिए कहा गया था—जिसके विषय में यह ज्ञात था कि वह असत्य है।"

पूर्वी जर्मनी में बत्रा से प्रार्थना की गई कि वह 'भारत में युवक आन्दोलन' विषय पर टेलीविजन से भाषण दे। "इस विषय का निरूपण मुझे कैसे करना चाहिए इस बात की तैयारियाँ तथा इसका अनुशीलन छः दिन तक चला। परन्तु प्रसारण से तीन घंटे पहले सम्पादक एक बिलकुल नया लेख लिए आ उपस्थित हो गया—इस लेख को मुझे कैमरे के सामने पढ़ना था। जब मैंने इस मांग को पूरा करने से इन्कार कर दिया तो घोर वाद-विवाद छिड़ गया और मेरे भाषण के स्थान पर भारत के सम्बन्ध में एक फिल्म दिखा दी गई।"

अमर ने पाया कि "रूसियों ने छात्रों को छाँट कर लेकर तथा उन्हें वेतन देकर और उन पर विशेष अनुग्रह दिखाकर उन छात्रों तथा दूसरे छात्रों के बीच सन्देह की दीवार खड़ी कर दी थी। और जब यह अनुभव किया गया कि रूसी बहुत से छात्रों को उनके अपने साथी अफ्रीकियों के विरुद्ध कुछ कहने के बदले रिश्वत देते हैं तब तो यह सन्देह की मात्रा और भी बढ़ गई।"

यह तो स्पष्ट ही प्रकट हो जाता है कि साम्यवादी इस बात के लिए विशेष उत्सुक रहते थे कि विदेशी छात्र, भ्रान्ति-निवारण के कारण गुट को छोड़ गए अपने सभी मित्रों को और उनको कि जिन्होंने अपनी नापसन्दगियों को स्वतन्त्र संसार में प्रकट कर दिया था, दूषित ठहरा दें।

अमर इस सम्बन्ध में ओकुलो के मामले का उदाहरण देता है—इस छात्र को मास्को-स्थित 'ब्लैक अफ्रीकी स्टूडेण्ट्स यूनियन' ने विदेशी छात्रों के विरुद्ध भेदभाव बरते जाने के विषय में सोवियत शिक्षा-मन्त्रालय से निवेदन करने के लिए प्रतिनिधि बनाया था और ऐसा निवेदन करने पर इसको सोवियत संघ से निकाल दिया गया था। इस सम्बन्ध में अमर ने एक कुछ अधिक छल-कपटपूर्ण घाघ चोट का वर्णन किया है।

"रूसी इतने चतुर थे कि वे ओकुलो अथवा कोपभाजन बने दूसरे छात्रों को प्रत्यक्ष रूप से अपमानित करने के लिए छात्रों को बाधित नहीं करते थे। रूसी अफ्रीकी छात्रों को प्रेरित करते थे कि वे अपने अनुभवों की कहानी बहुत ही अनुकूल तथा अतिशयोक्ति पूर्ण रूप में, ओकुलो सरीखे द्वारा चित्रित चित्र से बिलकुल विपरीत चित्र में, सुनाएँ। 'मास्को रेडियो' अथवा सोवियत समाचारपत्र इसका मूल्य चुकाते थे। फिर रूसी इन अनुकूल विवरणों को ओकुलो-सरीखों द्वारा दिए गए वक्तव्यों से भिड़ा देते थे। इस प्रकार 'मास्को रेडियो' आदि एक ऐसा कार्यक्रम गढ़ लेते थे कि जिसमें वे कहते कि दूसरे अफ्रीकी छात्रों ने ओकुलो द्वारा दिए गए विवरण की, उससे सर्वथा विपरीत विवरण से काट करके ओकुलो को झूठा सिद्ध कर दिया है।"

अमर ने सोवियत संघ छोड़ने के बाद अपने अफ्रीकी मित्रों से सुना कि रूसी "इस बात की कोशिश में थे कि ओकुलो को दूषित ठहराने के लिए प्रत्यक्ष रूप से धन प्रस्तुत करके अफ्रीकी छात्रों को घूस दी जाए।"

अफ्रीकी छात्रों के सुख एवं सन्तोषपूर्ण परिस्थितियों में खींचे गए फोटो-चित्रों का प्रचार भी रूसी पर्याप्त मेहनत से करते हैं। इन चित्रों

को साधारणतया गुट में तथा स्वतन्त्र संसार में प्रचलित प्रचार-पत्रिकाओं में प्रकाशित किया जाता है—इनके साथ बहुत ही अतिशयोक्तिपूर्ण वचन रहते हैं। परन्तु कभी-कभी तो और भी अधिक मिथ्या-वर्णन किए जाते हैं।

बत्रा बताता है कि "एक दिन (पूर्वी जर्मनी के) लीपज़िग मेले के सम्बन्ध में प्रकाशित एक प्रचार-पुस्तिका अचानक मेरे हाथ लग गई। जब मैंने उसको उलट-पुलटकर देखा—तो उसमें मुझे अपना वह चित्र मिला जो ड्रेस्डन के छात्रावास में एक पूर्वी जर्मनी के समाचार पत्र ने लिया था। मुझे यह जानकर बड़ा विस्मय हुआ कि इस पर दिए हुए शीर्षक के अनुसार मैं वह भारतीय व्यापारी हूँ जो पूर्वी जर्मनी में माल के निर्यात के लिए आया हूँ। मैंने इसके लिए प्रतिवादपत्र भेजा परन्तु उसका कोई उत्तर नहीं मिला—इस पर मुझे बिलकुल भी आश्चर्य नहीं हुआ। छात्रों के फोटुओं और चित्रों के दुष्प्रयोग के मामलों की संख्या तो अपार है।"

प्रचारार्थ की गई इस प्रकार की तोड़मरोड़ का शायद सबसे अधिक प्रसिद्ध उदाहरण वह रहा जिसका औंकोंक्वो से सम्बन्ध था। परिस्थितियों का विस्तृत विवरण 'ब्लैक अफ्रीकी स्टूडेण्ट्स यूनियन" की अफ्रीका सरकारों को भेजे गये उस प्रतिवाद पत्र में दिया गया है जिसको औंकोंक्वो सोवियत संघ से बाहर छिपाकर निकाल लाया था।

"साम्यवादी जिस प्रकार छल से अफ्रीकी छात्रों का शोषण उनकी जानकारी अथवा सहमति के बिना ही करते हैं—उसके कितने ही उदाहरण हम दे सकते हैं। हमने एक वह मामला चुना है जो थिओफिलस औंकोंक्वो के साथ अभी बीता है।

"जुलाई के शुरू में जब वह मास्को युनिवर्सिटी की व्यायामशाला में व्यायाम कर रहा था तब वहां एक रूसी छात्र ने घूंसेबाजी के अभ्यास की मुद्रा का उसका एक चित्र उतार लिया था। यहां तक तो सर्वथा निर्दोष बात थी ही।

"परन्तु फिर कुछ सप्ताह-पश्चात् एक मित्र ने 'न्यू टाइम्स' का अगस्त का अङ्क उसके सामने रखा...उसमें भी औकोंक्वो का घूंसेबाजी की मुद्रा का एक पूरे पृष्ठ का चित्र अङ्कित था। परन्तु अब सोवियत प्रचारकों ने शरारत से उसकी कलाइयों पर टूटी हुई सांकलें कांटछांट कर लगा दी थीं और श्वेतांग कोड़ा हाथ में लिए हुए, डर कर मैदान छोड़ रहा था।

श्री औकोंक्वो की जानकारी अथवा सहमति के बिना ही साम्यवादियों ने इस प्रचारार्थ रचना को संसारभर की कितनी ही प्रचार-पत्रिकाओं में फैला दिया था। श्री औकोंक्वो ने रूसी अधिकारियों को जो प्रतिवाद-पत्र भेजे उनका तो, कोई असर हुआ ही नहीं था।"

साम्यवादी प्रचार-विषयवस्तु के लिए छात्रों का समर्थन प्राप्त करने की एक दूसरी प्रचलित पद्धति सभाओं, सम्मेलनों, गोष्ठियों और रंग-रेलियों का आयोजन है। शंकारहित नवयुवक इनमें आकर सरलता से उच्च शक्तिशाली साम्यवादी नेतृत्व के शिकार हो जाते हैं।

औकोंक्वो ने एक उपलक्षक "मित्रता" आयोजन का वर्णन किया है :

"कार्य पद्धति सदा एक-सी रहती थी। पथ-प्रदर्शकों के रूप में वहाँ उपस्थित कूटकुशल हमारा परिचय अत्यन्त चापलूसी से देते (एक बार मुझे अफ्रीका का एक प्रसिद्ध स्वातन्त्र्य-योद्धा बना दिया गया था !)।

"तब हमारे श्रोताओं को बताया जाता था कि औपनिवेशिकवाद से ऊब कर तथा यह समझकर कि हमारी मुक्ति तो केवल साम्यवादी विचारधारा से ही सम्भव है, इन लोगों ने किसी चालबाज छलिया की प्रत्येक चालाकी का प्रयोग करते हुए सोवियत संघ में पहुँचने के लिए अपने जीवन को संकट में डाला था।

"इस प्रकार हमारी प्रशंसा करने के बाद लोगों को यह बताने के लिए हमें आमंत्रित किया जाता था कि हमारे अपने देशों में कौन-कौन से आतंकों का राज्य है।"

बहुत से छात्र तो, साम्यवादियों द्वारा उनकी सहायता प्राप्त करने की निर्विघ्न तथा अभ्यस्त चालों को देखकर मुग्ध हैं—मुलेकेजी ने युगांडा-दिवस पर मास्को में आयोजित एक विनोदगोष्ठी का वर्णन करते हुए इस बात को प्रकट किया है :

"युगांडा के चार दूसरे छात्र तथा मैं भीड़ के साथ-साथ वह गए तथा धक्के के साथ एक भवन के मंच तक पहुँच गए, यहाँ पर कुछ लोगों ने अंग्रेजों की निन्दा में भाषण करने आरंभ कर दिए। इनको हमने पहले कभी नहीं देखा था। हमारी ओर से एक अजनबी ने एक प्रस्ताव पर सम्मति लेना शुरू किया—इस प्रस्ताव में युगांडा के लिए तत्काल स्वतंत्रता, ग्रेट ब्रिटेन से सर्वथा सम्बन्ध-विच्छेद तथा सोवियत राज्यों से मैत्री सम्बन्धों की मांग की गई थी। हम अभी कुछ कह भी नहीं पाए थे कि समर्थन का घोष गूंज उठा। ज्योंही रूसी अभिनेताओं ने हमारी 'कार्यवाही' पर बधाई देने के लिए हमें घेरा कि कैमरे खटखटा उठे। इस गोष्ठी के कार्यक्रम को हमारे घरों पर रेडियो द्वारा प्रसारित करने के लिए टेप रिकार्ड भरे गए। सब कुछ अचानक समाप्त हो गया। हम युगांडाई हतबुद्धि तथा क्रुद्ध खड़े रह गए।

"यह तो केवल एक बानगी थी। नाइजीरिया-दिवस, गिनी-दिवस प्रत्येक अफ्रीकी देश के लिए एक-एक पृथक् दिवस—इसी प्रकार मनाया गया। साथ ही अखिल-अफ्रीकी दिवस भी मनाया गया। योजना, निस्सं-देह, स्पष्ट थी। हम अफ्रीकी तो युनिवर्सिटी में केवल पिछलग्गू ही थे।"

जब अंतर्राष्ट्रीय भावना से कुछ अधिक रंजित अधिक बड़ी घटनाओं का आयोजन किया जाता है तब सभी 'गुट देशों' के विदेशी छात्रों को एकत्र किया जाता है जिससे पूरे नहीं तो अधूरे 'राष्ट्रीय' प्रतिनिधि मंडल तो बन ही जाएंगे। महदी ने बताया है कि ऐसी सभाओं पर स्वतंत्र विचारकों द्वारा अपना कोई प्रभाव डाल सकना किस प्रकार अस-म्भव होता है। १९६० में वह एक वर्ष पश्चात् सोवियत राजधानी में

होने वाले 'मास्को यूथ फोरम' की तैयारी के लिए आयोजित 'इण्टरनेशनल प्रिपैरेटरी कमिशन' की बैठक में उपस्थित हुआ था। यह "एक खूब बनाकर ठीक की हुई घटना थी, सब प्रतिनिधि साम्यवादी अथवा साम्यवाद के समर्थक थे तथा सब प्रस्ताव साम्यवादी कार्यकर्त्ताओं में से बिलकुल आन्तरिक व्यक्तियों द्वारा बनाए गए थे।"

साम्राज्यवाद की निन्दा के एक प्रस्ताव पर हुए वाद-विवाद में एक सोमालियाई मित्र ने जो भाषण दिया था महदी ने उसमें विशेष दिलचस्पी दिखाई। परन्तु "सोमालिया के अनुभव की समीक्षा करते हुए उसने पश्चिमी उपनिवेशियों के साथ-साथ उस इथियोपियाई प्रशासन पर भी चोट की जिसने कि, उसके कथनानुसार, अभी हाल में इथियोपियाई सोमालीलैंड के एक नगर पर बम वर्षा की थी।"

आगे महदी लिखता है : "मैं हेडफोन पर उसके व्याख्यान का अंग्रेजी अनुवाद सुन रहा था और मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि इथियोपिया के सभी उल्लेख दबा दिए गए थे। वस्तुतः भूल हो जाने का तो कोई प्रश्न ही नहीं उठता था, क्योंकि मेरे सोमालियाई मित्र ने एक दिन पहले ही व्याख्यान की प्रतिलिपि अनुवादकों को पहुँचा दी थी।"

महदी ने व्याख्यान लिखने में सहायता दी थी—वह कुछ क्रुद्ध हुआ स्वयं ही भाषण-मंच पर पहुँच गया और उसने इथियोपिया पर "काला साम्राज्यवादी" होने का आरोप लगाया।" उसने प्रतिनिधियों को बताया कि अपनी स्वतन्त्रता के लिए संघर्षरत व्यक्तियों के लिए तो "एक साम्राज्यवादी, भले ही वह काला हो या गोरा, बड़ा हो या छोटा—साम्राज्यवादी ही है, और इसी कारण उसकी निन्दा की जानी चाहिए।"

इसके बाद महदी तथा उसके मित्र ने प्रस्ताव में "साम्राज्यवाद, काला हो या गोरा" शब्द जोड़ कर संशोधन करने का प्रस्ताव किया। परन्तु वे उस रूसी सभापति को छल रहित समझ कर निश्चिन्त रहे जो महदी के पूर्वाभ्यास न किए गये हस्तक्षेप से बहुत ही चिढ़ गया था :

उसने उन लोगों को हाथ उठाने के लिए कहा जो कि प्रस्ताव के पक्ष में थे। पाँच प्रतिनिधियों ने हाथ उठाए।...हमें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि इस बात का निश्चय किए बिना ही कि कितने व्यक्ति संशोधन के विपक्ष में हैं, संशोधन गिरा घोषित कर दिया। सारा मामला एक प्रहसन-सा ही रहा।"

नाइजीरिया का अजाओ १९५७ के मास्को युवक समारोह में भाग लेने गया। उसको तथा उसके साथी छात्रों को उनके काम पहले ही वता दिये गये : "सव पश्चिमी अफ्रीकी छात्रों को बर्लिन में एक स्थान पर एकत्र होना था और मास्को में हमें दुहरा अभिनय करना था, हमें राष्ट्रीय प्रतिनिधि मंडल का एक भाग भी बने रहना था और गैरसाम्यवादी देशों से आए पश्चिमी अफ्रीकियों से मिलकर उनके विषय में यह अनुमान लगाना था कि (साम्यवादी छात्रवृत्तियों के लिए) रंगरूटों के रूप में उनका क्या मूल्य है।"

अजाओ लिखता है कि ऐसे समारोहों का वायुमण्डल उत्साह तथा आवेग से परिपूर्ण होता था। "उत्साहपूर्ण भोजों में भाग लेने वाले नवयुवकों की दृष्टि से आमोद एवं प्रचार के सब साधनों की रूप-रेखा, खूब सोच समझकर "अंत में तो साम्यवादी ही केवल उनके सच्चे मित्र होते हैं"—इस दृष्टि कोण का समर्थन करने के लिए ही बनाई जाती थी।

उसने चेतावनी दी कि प्रेरक कारणों तथा इरादों को भली-भांति समझने के लिए "समारोह में पहुँचने वाले सामान्य व्यक्ति को जो कुछ दिखाई दे सकता है उससे कहीं अधिक जानना आवश्यक है। अपने व्यक्तिगत इतिहास के कारण मुझे इतना ज्ञान अवश्य था कि मैं समारोह के अग्रभाग को भेद कर इसकी भीतरी बातें जान लेता।" समारोह को यद्यपि 'शांत तथा मैत्री' के लिए समर्पित घोषित किया गया था परन्तु यह, "मास्को के राजनीतिक विरोधियों के विरुद्ध एक उपकरण था; जैसा कि बताया गया था, प्रीतिभोज नहीं था।"

अजाओ को स्मरण है कि "जिन देशों पर साम्यवादी प्रभाव डालना चाहते थे उनका कितना झूठा चित्र स्वयं उनके सन्मुख उपस्थित था" इस बात से उनको कितनी ही बार आघात लगे थे। यहाँ उसकी यह गलती प्रतीत होती है कि वह साम्यवादियों को यह श्रेय देता है कि साम्यवादी अपने प्रचार को सच्चा मानते हैं; जब कि सच्चाई यह है कि वे तोड़-मरोड़ तो प्रायः जान-बूझकर करते हैं। उसने भोज-समारोह के एक उस व्याख्यान की भावना का वर्णन किया है जिसमें वह उपस्थित था—क्या सचमुच ही इस प्रचारिका को अपने कथन पर विश्वास है ?

"मुझे ट्रेड यूनियनों पर भाषण देने वाली एक महिला याद है; यह बड़े हठवाद के साथ तथा तथ्य प्रतीत होने वाले प्रमाणों की भारी व्यूह रचना करती हुई यह बताकर कि नाइजीरिया में अंग्रेज अत्यन्त पाशविक ढंग से दास श्रमिकों से काम लेने के आदी हैं अपने श्रोताओं का खून (भय के कारण) जमाने का यत्न कर रही थी। लन्दन से मास्को में आए हुए एक नाइजीरियाई ने उसके कथन का स्पष्ट विरोध कर दिया। इससे सिद्धान्त-शिक्षण प्राप्त पश्चिमी अफ्रीकियों को बहुत परेशानी हुई... उन्होंने यह अनुभव किया कि यह भला आदमी उनकी प्रतिष्ठा नहीं बढ़ा रहा है और उच्चतर सच्चाई के लिए उसके मन में कोई आदर भावना नहीं है।"

अजाओ यह भी बताता है कि ठीक निष्कर्ष निकाले जाने अथवा सही प्रस्ताव पारित किये जाने की बात पक्की करने के लिए साम्यवादी ऐसी बैठकों के सूत्रधार कैसे बन जाते थे। "क्या भावी की भविष्यवाणी की जा सकती है ?" एक समारोह की गोष्ठी में इस प्रश्न पर विचार किया जा रहा था। इसमें "बोली का विशेषज्ञ एक नेता सदा होता था जो नर्मी से और प्रेरणापूर्वक अपने बहुत ही मिले-जुले श्रोताओं को इस परिणाम पर सहमत कर लेता था कि इस प्रश्न का केवल एक ही सम्भव उत्तर है : यह कि तर्कपूर्ण पद्धति तथा सोवियत संघ एवं चीन के अनुभव

द्वारा ही, साम्यवादी कार्य-प्रणाली पर, भविष्य का सही पूर्वानुमान किया जा सकता है।..."

अजाम्रो ने समारोह के समय सम्भाव्य छात्रों की भर्ती में तो नहीं के बराबर ही भाग लिया, परन्तु उसकी भेंट ऐसे कई नाइजीरियाइयों से अवश्य हुई जो चुन लिए गए थे। "मुझे निश्चय था कि प्रत्याशियों को सभी गलत कारणों—उनके कबायली सम्बन्धों, वैयक्तिक सम्बन्धों, पारिवारिक सम्बन्धों के आधार पर चुना जा रहा था—और यह कह कर तो मैं और भी अधिक अप्रिय हो उठा था।"

× × ×

कई छात्रों ने इस बात का स्पष्टीकरण करने का यत्न किया है कि साम्यवादी लेखों के प्रचार में तत्कालसहयोग करते वे क्यों प्रतीत हुए। अजाम्रो यह बात मानता है कि साम्यवादी पद्धतियाँ कभी-कभी बड़ी भद्दी होती थीं और जो छात्र अपना शोषण होने देते थे उन्हें मूर्ख, अर्ध-पक्व, किशोर अथवा दूषित मनोवृत्ति के अपराधी समझकर 'उपेक्षित', कर दिया जा सकता था। "वे युवकों के सन्दिग्ध तथा असन्दिग्ध, दोनों प्रकार के निश्चयों के आधार पर उनसे अनुरोध करते हैं। युवक की यह एक स्वाभाविक अन्तर्वृत्ति होती है कि वह अपने माता-पिताओं तथा और आगे बढ़कर कहें तो (अपनी) सरकार के विरुद्ध जाए। यदि कोई बाहरी अधिकारी व्यक्ति उसको यह मानने के लिए प्रोत्साहित करता है कि उसका विरोध सही तथा उचित है और अपने इस प्रोत्साहन का समर्थन वह सर्वग्राही 'वैज्ञानिक' राजनीतिक सिद्धान्त से कर देता है तो उसकी निष्ठा-प्राप्ति का यह तरीका निर्दोष ही माना जाएगा।..."

साम्यवादी प्रचार के चकमे के लिए दी हुई अपनी प्रारम्भिक सहायता के विषय में ओकोंक्वो को स्पष्ट ही शंकाएँ विद्यमान थीं। इस बात का कारण उसने सोवियत संघ के प्रति अपनी प्रथम अनुकूल धारणाओं को बताया है:

"उपनिवेशवाद के प्रति आपकी भावनाएं उग्र होती हैं; स्वतन्त्रता इतनी दूर परे प्रतीत होती है। फिर आप में एक नई आशा का संचार होता है। आपको खूब खुली सड़कें, मोटर गाड़ियाँ तथा देखने में वर्गहीन समाज दिखाई देता है। प्रत्येक व्यक्ति प्रसन्न प्रतीत होता है। कोई नहीं चाहेगा इस सारे दृश्य के बीच खड़ा रह कर अपने तथा उन लोगों के स्वप्न को भंग करे कि जिन्होंने उसके साथ वैसा ही व्यवहार किया है जैसा कि एक राजा के साथ कियाजाता है—अभी तक हमें सोवियत पद्धति को वस्तुतः समझ लेने का अवसर ही नहीं मिला था। हमने केवल वही कुछ देखा तथा सुना था जिसको कि उन्होंने हमें दिखाना और सुनाना चाहा था।"

कुछ तो केवल इसलिये भाग लेते हैं कि वे धन अथवा बेहतर अवस्थाओं की प्राप्ति के रूप में घूस लेते हैं। शेष दूसरों के सामने कोई दूसरा मार्ग नहीं : वे छात्र जो अवैध रूप से 'गुट' में पहुँचे हैं, जिनकी उपस्थिति का निषेध किया जा सकता है, जन्म-भूमि को वापसी के जिनके प्रार्थनापत्रों की उपेक्षा की जा सकती है, जैसा कि औकोंक्वो ने बताया है, उनके लिये अकेली यही सम्भावना रह जाती है कि वे अपनी उपयोगिता समाप्त हो जाने के बाद भी टिके रहें और फिर उपेक्षित हों।

# ६

# क्रान्ति की रूपरेखाएँ

सामान्यतः तो अधिकतर विदेशी छात्रों के साथ साम्यवादी देशों के अपने छात्रों सरीखा ही व्यवहार किया जाता था—इसमें अधिकतर परिवर्तन जातीय अथवा राष्ट्रीय भिन्नताओं के कारण होता था। परन्तु कुछ ऐसे छात्रों को, जिनपर साम्यवादियों का विश्वास कुछ अधिक रहता था, विशेष प्रशिक्षण तथा व्यवहार के लिए चुन लिया गया था।

यहाँ वर्णित तीन मामलों में, छात्र को विशेष पढ़ाई में लगाना ही, अन्त में साम्यवाद से उनके अलग होने का कारण बना।

नाइजीरियाई 'ओकोत्चा' को दो साम्यवादी नाइजीरियाई साम्यवादी मास्को जाते हुए लन्दन-स्थित सोवियत दूतावास में मिल गए। उसको उच्च उग्र कार्यवाही के लिए चुन लिया गया था और प्रशिक्षित कर दिया गया था और वह अपना पहला काम सम्भालने को ही था : "इन सज्जनों ने तब अपनी राजनीतिक रूपरेखा दिखाई—यह जान कर मैं स्तब्ध रह गया कि (नाइजीरिया के लिए) उनकी योजनाओं में

हत्या, आतंकवाद, अग्निकांड, डांटडपट तथा सब प्रकार की कल्पनीय गड़बड़ सम्मिलित थीं।"

औकोत्चा पर इसका प्रभाव तत्काल हुआ। "अचानक यह बात मेरी बुद्धि में बैठ गई कि रूस के सारे सोने के बदले भी मैं अपने देश को रक्त-स्नान कराना स्वीकार नहीं करूँगा—मैंने वापस नाइजीरिया लौटने का और अपने लोगों को चेतावनी देने का पूरा यत्न करने का निश्चय कर लिया।"

इस प्रकार "औकोत्चा" साम्यवाद से अलग हो गया। कुछ के लिए तो साम्यवादी जीवन की वास्तविकता ही मोहभंग के लिए पर्याप्त होती है; शेष इसलिए छोड़ बैठते हैं कि सिद्धान्तशिक्षण के अविच्छिन्न प्रवाह के विरुद्ध शिक्षा-उपार्जित करने के लिए किया गया संघर्ष सीमातीत सिद्ध होता है। फिर वे भी हैं, जो शायद बहुत कट्टर हैं, जिन्हें, इस्माइल महदी के दिए स्पष्टीकरण के अनुसार, "एक शक्तिशाली भावनात्मक शक्ति की—इस समझ की कि मेरे देश को साम्यवाद के नाम पर अवश्य ही बहुत हानि होती है और इस समझ की कि रूसी इस विषय में सर्वथा निश्चिन्त हैं तथा निश्चय ही, उथल-पुथल अथवा विनाश उत्पन्न करने की व्यवस्था करते प्रतीत होते हैं—आवश्यकता है।"

इस प्रकार के भ्रांतिनिवारण के विषय में कुछ कम इस कारण लिखा गया है कि साम्यवादी, स्वभावतः ही, आधुनिक साम्यवादी योजनाओं के विषय में प्रायः अधिक, तब तक नहीं बताते जब तक कि वे अपने आदमी के विषय में पूर्णतया यह पक्का निश्चय नहीं कर लेते कि इस व्यक्ति की विचारधारा पक्की है और इसमें एक क्रांतिकारी की प्रमाणित योग्यता विद्यमान है।

इस प्रकार, जो लोग साम्यवाद के इस पहलू पर वस्तुतः इसके अन्तिम लक्ष्यों पर—अधिक प्रकाश डाल सकते थे उनमें से अधिकतर अभी 'गुट' में ही हैं, वहां वे उस दिन के लिए प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे

हैं जिस दिन कि वे अपनी मतृ-भूमियों पर साम्यवादियों द्वारा अधिकार जमाने के कार्य में हाथ बँटाएंगे।

× × ×

अजाओ ने अभी पूर्वी जर्मनी में कुछ सप्ताह ही विताए थे कि उसको कुछ-कुछ बता दिया गया कि साम्यवादी उससे क्या कुछ चाहते हैं—सम्भवतः अधिकारी उसकी ओर से अपने आपको सुरक्षित मानते थे, उनको उसकी ओर से कोई खटका नहीं था। उसको उड़ा लिया गया था, वे उसको मुक्त करने के लिए सहमत नहीं थे और उन्होंने सोचा कि वे उसको यह विश्वास दिला सकेंगे कि यदि वह स्वतन्त्र संसार में लौटा तो वहाँ उसे दण्ड दिया जा सकेगा।

उस समय अजाओ अभी तक गुप्त रीति से गिरफ़्तार था : "मुझ से पूछ-ताछ करने आने वाले हाथों में संसार का एक बड़ा नक्शा लेकर आए···और उन्होंने मुझे वह भाग दिखाया जो दक्षिणी चीन सागर से लेकर पूर्वी जर्मनी लोकतन्त्र के पश्चिमी किनारे तक, सारे रास्तेभर फैला हुआ था। उनका प्रतिपाद्य विषय यह था—कि यह अनिवार्य है कि शेष सभी देश, कुछ शीघ्र तथा कुछ देर में, (परन्तु बहुत देरी में नहीं), अन्त में, एक ही वर्ग के हो जाएंगे। उन्होंने, विशेषतया अफ्रीका तथा दक्षिण अमरीका को दिखाते हुए कहा कि इनका साम्यवादी कक्षा में लगभग तत्काल आ पड़ना निश्चित ही है। सतर्कतापूर्वक विस्तृत वर्णन करते हुए उन्होंने इन दो प्रदेशों में विद्यमान श्रेष्ठ स्थिति की विस्तारपूर्वक व्याख्या की जिससे कि उनकी भविष्यवाणी अचूक प्रतीत होने लगी।

"इसलिए उन्होंने मेरे लिए एक भावी योजना बनाई। उन्होंने कहा—एक ऐसा अफ्रीकी होने के नाते कि जिसमें उनके दृष्टिकोण को समझने की बुद्धि तथा अनुभव-दोनों थे, मेरे लिए सर्वोत्तम बात यह होगी कि मैं उन सुविधाओं से लाभ उठाऊं जो पूर्वी जर्मनी में आ जाने से मुझे

उपलब्ध हो गई हैं—मैं अपने आपको उस समय के लिए तैयार कर लूं जबकि मैं अपने निजी देश में, एक समाजवादी (अर्थात् साम्यवादी) नाइजीरियाई सरकार के कार्यक्षम सदस्य के रूप में, लौट सकूंगा। मुझे सब प्रकार की वह विश्वविद्यालयीय तथा तकनीकी शिक्षा उपलब्ध करने की सुविधाएँ दी जाएँगी जो कि मुझे नाइजीरिया के विकास में एक कुशल राजनीतिक कर्मठ कार्यकर्ता के रूप में साधन सम्पन्न करने की प्रक्रिया के साथ चलती हैं।"

जब आजाम्रो अभी वाल्जन के इण्टरनैशनल सौलिडैरिटी स्कूल में अध्ययन कर रहा था कि पूर्वी जर्मनी के साम्यवादियों ने अजाम्रो को विध्वंसशील कार्यों का प्रशिक्षण देना शुरू कर दिया। सैनिक प्रशिक्षण रूप की यह पहली मंजिल प्रारम्भिक थी—यद्यपि यह 'ईस्ट जर्मन कम्यूनिस्ट यूथ' (एफ़० डी० जे०) के क्रीडा तथा तकनीकी समुदाय की कार्यवाहियों के एक अंश के रूप में छिपी हुई थी। "हमको आरम्भिक शस्त्रों के प्रयोग का तथा आदेश के शब्दों को समझने का अभ्यास कराया जा रहा था...प्रशिक्षण में ऐसी कोई बात नहीं थी जिससे कि यह पता लगता कि इस प्रशिक्षण का कैसे प्रयोग किया जा सकेगा। यह बाद में पता लगा।"

अजाम्रो लिखता है कि यद्यपि उसे प्रशिक्षण "कठिन तथा अरुचिकर लगा" तथापि उसने उस समय उसको 'कुछ तो' इसलिए स्वीकार कर लिया "कि मेरे दैनिक जीवन में विविधता का अभाव था और कुछ इसलिए कि मुझे अब भी यह पक्का विश्वास था कि साम्राज्यवादी विरोधी संघर्ष में एक कार्यक्षम नेता के रूप में सफलता ही मेरी सुरक्षा का सबसे बड़ा आधार है।"

और बाद में वह जब ड्रेस्डन में अध्ययनार्थ पहुँच गया तो "मैंने अपने आपको सैनिक-प्रशिक्षण-संगठन में अपने साथी छात्रों से अधिक ऊँचे आधार पर पाया।" शिक्षक "ड्रेस्डन मिलिटरी एकादमी के कर्मचारी

मण्डल के वास्तविक सदस्य थे परन्तु अधिकारियों ने उन्हें हमें केवल प्रविधिज्ञों (टेक्निशियनों) के रूप में प्रस्तुत करने का कष्ट उठाया। परन्तु प्रवक्ता सचमुच के प्रविधिज्ञ तथा तुलना में अधिक उन्नत थे। हमें प्राक्षेपिकी पर, विस्फोटकों के रसायन पर और छद्मावृत्त पदार्थों की व्याख्या समेत 'वैज्ञानिक' फोटोग्राफी पर व्याख्यान दिए गए।"

अजाओ की सैनिक शिक्षा की चरमसीमा सैक्सनी में नाम्बर्ग के समीप बैरकों में दिया गया ग्रीष्म ऋतु का पाठ्यक्रम था। "इसमें बहुत ही विविध प्रकार के लोगों ने जिनमें बहुत से विदेशी थे, भाग लिया था और पूर्वी जर्मन भर के विश्वविद्यालयों से आए बहुत से छात्र थे।

"पाठ्यक्रम चार से छः सप्ताहों तक रहा और ग्रीष्म ऋतु के महीनों में लगातार चलता रहा—प्रशिक्षण कठोर और उत्तम था— शस्त्र-शिक्षा में साम्राज्यवादी पश्चिम द्वारा प्रयुक्त शस्त्रास्त्रों के विस्तृत विवरण भी सम्मिलित थे। गोरिल्ला युद्ध-विद्या की शिक्षाभी दी गई तथा उसका अभ्यास भी कराया गया। हमने उन शिक्षकों के व्याख्यान सुने जो स्वयं गुरिल्ला युद्ध में हिस्सा ले चुके थे। दूसरे विश्व-युद्ध में जर्मन पंक्तियों के पीछे कार्यवाही करते रूसी गुरिल्लों की फिल्में दिखाई गई थीं। कम से कम तकनीकी रूप में तो यह वह क्षण था जबकि मेरा बचा-खुचा यह बहाना लुप्त हो गया कि हमें (पूर्वी जर्मनी में) तो तोड़-फोड़ करने वालों और गुप्तचरों के विरुद्ध कार्यवाही करने का अभ्यास कराया जा रहा है। इसके अतिरिक्त विदेशी छात्रों के रूप में हमें अब पूरा निश्चय हो गया कि हम जो ज्ञान अर्जित कर रहे हैं उसका उद्देश्य अपनी निजी मातृ-भूमियों में लौटने पर लाभदायक होना है।"

इसके अतिरिक्त अजाओ को राजनीतिक व्याख्यान भी दिए गए— इनमें यह बताया गया था कि "हमारा वर्तमान प्रशिक्षण उन वास्तविक अथवा कल्पनीय परिस्थितियों से जुड़ा हुआ है जिनमें कि साम्यवादियों का युद्ध में सम्मिलित होना उचित हो जाता है। प्रवक्ता ने परम्परागत

लेनिनवादी मार्ग पकड़ा और हमने 'न्यायोचित' तथा 'अन्याय परक युद्धों' के विषय में बहुत कुछ सुना।

"इन भाषणों के पश्चात् यह प्रथा थी कि प्रशिक्षार्थी औपचारिक भाषणों की जांच करने तथा उनका अभिप्राय जानने के लिए छोटी-छोटी टोलियों में बंट जाते थे। हमें विषय निर्दिष्ट कर दिए जाते थे…और प्रत्येक टोली का नेता या तो प्रशिक्षार्थियों में से कोई होता था अथवा प्रशिक्षकों में से कोई होता था। इस प्रकार के विचार-विमर्श के समय ही प्रशिक्षार्थियों ने साम्यवादी सिद्धान्त के आधार पर अपनी प्रशिक्षकों में अपनी-अपनी मातृ-भूमियों में विद्यमान परिस्थिति पर प्रयोग के विषय में कल्पना करनी आरम्भ की। मध्यपूर्व अथवा ब्रिटेन, फ्रांस अथवा वेल्जियम पर आश्रित अफ्रीकास्थित देशों से आए छात्रों ने विचारों का अध्ययन किया; फिर उन पर मनन किया…और हममें से कितनों ने सोचना शुरू किया कि अपनी मातृ-भूमियों में लौटकर हम क्या कुछ करेंगे।"

इस मंजिल पर पहुंच कर अजाओ के मन में शंकाएँ उठनी शुरू हुईं—उसको विचार-विमर्श की इन सभाओं में नाइजीरिया के सम्बन्ध में पूछा गया एक प्रश्न याद आया : "यदि गुरिल्ला युद्ध में प्रशिक्षित एक नाइजीरियाई छात्र का यह उचित कर्त्तव्य है कि वह अपने ज्ञान तथा योग्यता का उपयोग अपने देश में साम्यवाद को फैलाने में करे तो, जबकि नाइजीरिया की सीमा किसी साम्यवादी देश से तो मिली हुई है नहीं, फिर वह शस्त्रास्त्र कैसे प्राप्त करे ? इस प्रश्न का उत्तर बड़ा सीधा था : गुरिल्ला युद्धविद्या के विशेषज्ञ नाइजीरियाई साम्यवादी का यह कर्त्तव्य है कि वह बूर्जुआ प्रशासन की सशस्त्र सेना में भर्ती हो जाए और इसका विनाश भीतर से करने का प्रयत्न करे।"

महदी को सोमालियाई राजनीतिक तथा यूनियन-संगठनों में प्रचारक का काम सौंपा गया था। चेकोस्लोवाकिया में रहते हुए इस काम

के लिए उसको अपने साथी छात्रों के मध्य काम करने की प्रशिक्षा दी गई और 'कम्यूनिस्ट इंटरनेशनल यूनियन ऑव स्टूडेण्ड्स" द्वारा सौंपे हुए कार्यों का दायित्व सम्भाला गया। इसी समय उसने अपने देश के संबंध में मास्को की योजनाओं के टुकड़ों को आपस में जोड़ना आरम्भ किया था—यही वह प्रक्रिया थी जिसका परिणाम सोवियत साम्यवाद से उसका पूरा-पूरा सम्बन्ध-विच्छेद हुआ।

महदी अब अपनी मातृ-भूमि से उसके चले आने के बाद नए बने संगठन—'ग्रेटर सोमाली लीग' (G.S.L.) के उत्तरदायित्व पर आए अधिकाधिक सोमालियाई छात्रों से मेल-जोल बढ़ाने लगा। उसकी जानकारी के अनुसार तो यह मिश्रियों द्वारा स्थापित कबाइली संगठन था परन्तु इसके उत्तरदायित्व पर आए छात्रों ने वामपक्षी सम्मतियाँ प्रकट कीं और 'इटालियन कम्यूनिस्ट पार्टी (C.P.I.) से लीग को मिल रही पर्याप्त सहायता का उल्लेख किया।

अपने मन में अव्यक्त शंकाओं का भार उठाए हुए, महदी की मास्को में एक रूसी महिला मारिया रैत से भेंट हो गई—यह महिला 'अफ्रीकन इंस्टिट्यूट ऑव दि सोवियत अकादमी ऑव सायन्सेज़' की कार्यकर्त्री थी। महदी का उद्देश्य 'सोमालिया यूथ लीग' के लिए छात्रवृत्तियाँ प्राप्त करना था, परन्तु उसने तो 'ग्रेटर सोमाली लीग' के सम्बन्ध में मेरा रुख निश्चित रूप से जानने में अभिरुचि प्रकट की। मैंने कुछ बातें मन में ही रखते हुए, स्पष्ट किया कि यह बात तो बड़ी उत्साहवर्धक है कि अब साम्यवादी शिविरों में सोमालियाई युवकों को अधिक संख्या में शिक्षा दी जा रही है।

इस पर उसने उत्तर दिया : 'महदी तुम भी तो साम्यवादी हो, फिर भी 'सोमाली कम्यूनिस्ट पार्टी' के सम्बन्ध में तुम्हारी इतनी कम जानकारी क्यों है ?'

"परन्तु मेरे देश में तो कोई 'कम्यूनिस्ट पार्टी' है ही नहीं ?"
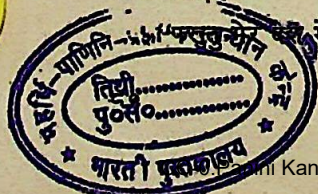
"प्रिय महदी ! ग्रेटर सोमाली लीग ही तो सोमालियों की 'कम्यूनिस्ट पार्टी' है ।"

"मैंने कहा, यह तो बकवास है । ग्रेटर सोमाली लीग एक विशुद्ध कवायली संगठन है, जो कि राष्ट्र के केवल एक भाग का प्रतिनिधित्व करती है । इसके अतिरिक्त इसकी स्थापना मिस्री सहायता द्वारा की गई है—इसको सम्भावित 'कम्यूनिस्ट पार्टी' क्यों कर समझा जा सकता है ?"

मारिया रैत ने उत्तर दिया कि "साम्यवादी शिविर ने अब तुम्हारी मातृभूमि में साम्यवादी क्रान्ति कराने का साधन 'ग्रेटर सोमाली लीग' को स्वीकृत कर लिया है और इसको वह सहायता दे रहा है । अफ्रीका में सोमालिया की बहुत ऊँची सामरिक महत्व की स्थिति है और यह पूर्वी अफ्रीका में अन्तर्राष्ट्रीय सामान्यवादी घुसपैंठ का केन्द्र बन जाएगा ।"

महदी की दृष्टि में अब सब बातें अधिक स्पष्ट हो गई थीं । साम्यवादियों ने एक पिछलग्गू दल स्थापित कर लिया था जिसको अन्तः-प्रविष्ट अथवा शुद्ध कर लिया गया था और वह उनके आदेशों का पालन करेगा । उसको स्मरण था कि चीन यात्रा के समय उसकी भेंट ग्रेटर सोमाली लीग के अध्यक्ष हाजी मुहम्मद हुसैन से हुई थी :

"उसने मुझे बता दिया था कि वह अब 'समाजवाद की ओर से काम कर रहा है और यह कि मुझे अब अपने दल 'सोमाली नेशनल लीग' को बदल कर उसको एक साम्यवादी संगठन बना डालना चाहिए । उसके दल को केवल एक आड़ की आवश्यकता थी—इसका अर्थ अब मैं 'संयुक्त-मोर्चा आन्दोलन' लेता हूँ । उसने विशेषकर मेरे अपने क्षेत्र 'उत्तर' में लोगों को 'ग्रेटर सोमाली लीग' के पक्ष में प्रेरित करने में मेरी सहायता मांगी । उसने कहा कि मैंने ग्रेटर सोमाली लीग को सोमाली नेशनल लीग से संयुक्त करने की भरसक चेष्टा की है, परन्तु इस बात का बहुत ही प्रबल विरोध हुआ ।"

हमारी इस भेंट के समय हाजी मुहम्मद हुसैन मुझे 'किसी कबायली

संगठन का केवल एक अवसरवादी नेता ही प्रतीत हुआ था···इस संगठन को मैं अब पहले से अधिक सुचारुरूप में जानता हूँ।"

"महदी लौटकर जब प्रातः पहुँचा तो उसने 'ग्रेटर सोमाली लीग' के उत्तरदायित्व पर नए-आए छात्रों का विश्वास प्राप्त करना शुरू किया और उसको निम्नलिखित तथ्यों की जानकारी मिली :

"इटालियन कम्यूनिस्ट पार्टी का एक अफ्रीकी अनुभाग था जिसका नेतृत्व इटालियनों और वेरदाग्राद (ग्रेटर सोमाली लीग के महामन्त्री) के हाथ में था; इसके दो सोमालियाई सहायक थे; 'इटालियन पार्टी' का (मास्को की प्रतिनिधिभूत) ग्रेटर सोमाली लीग पर पूरा-पूरा नियन्त्रण था—इटालियन पार्टी ने वेरदाग्राद को महामन्त्री, सहायता देने की एक शर्त्त के रूप में ही मनोनीत किया था; वेरदाग्राद, अपने लिए प्रधानमन्त्रित्व को तथा हाजी मुहम्मद के लिए १९६३ के चुनावों के बाद अध्यक्ष पद को तथा ग्रेटर सोमाली लीग के दूसरे सदस्यों के लिए दूसरे पदों को प्राप्त करने में असफल रहा तो, सोवियत शस्त्रास्त्रों की प्राप्ति का वचन लेकर, सोमाली रिपब्लिक में गृह-युद्ध करने को तैयार था। यदि गृह-युद्ध होता तो ग्रेटर सोमाली लीग को पूरा विश्वास है कि वहां की पुलिस उनका साथ देगी, कारण यह है कि पुलिस के अधिकतर अधिकारी ग्रेटर सोमाली लीग के दुर्ग 'मिजेर्टीन' के ही थे।"

महदी की अगली चेष्टा के कारण, उसकी मातृभूमि के लिए बनाई गई रूसी योजनाओं को लेकर, महदी तथा रूसियों में आमने-सामने की टक्कर हो गई। 'गुट' में वह जिस 'सोमाली ट्रेड्स यूनियन कॉनफिडरेशन' का प्रतिनिधि था—महदी उसके लिए छात्रवृत्तियां जुटाने के यत्न में था और इस विषय में उसको 'कम्यूनिस्ट वर्ल्ड फेडरेशन ऑव ट्रेड यूनियन्स' के एक रूसी अधिकारी की सहायता मिल गई थी; परिणामतः उसको मई १९६१ में, अपनी बात मास्को में प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया गया। इस विषय में महदी ने लिखा है :

"मास्को में हुए इन वार्तालापों के समय मुझे जिन लोगों के साथ घनिष्ठ बातचीत करने का अवसर मिला उनमें 'इण्टरनेशनल डिपार्टमेंट ऑव दि सोवियत ऑल-यूनियन सैण्ट्रल कौंन्सिल ऑव ट्रेड यूनियन्स' का सभापति तथा 'पार्टी सेण्ट्रल कमेटी' के एक प्रतिनिधि भी थे। मैंने ग्रेटर सोमाली लीग के कबायली स्वरूप पर फिर प्रकाश डाला और उन्हें पक्का विश्वास दिलाया कि यदि वे उसको सहायता देते रहे और इस दल का देश पर अधिकार हो गया तो एक आत्मघाती तथा हानिकारक गृह-युद्ध होकर रहेगा। ग्रेटर सोमाली लीग सोमालियाइयों के भ्रातृत्व सम्बन्ध को नहीं मानती; इसके सभी प्रयत्न एक पहले के इटालियन उपनिवेश—मिजेर्टीन तथा गाल्कायु क्षेत्रों के निवासियों—देश के एक खण्ड के निवासियों—के लाभार्थ ही हैं। सोमालियाइयों के साथ बेहतर व्यवहार होना उपयुक्त है। सभी क्षेत्रों का उचित प्रतिनिधित्व तो पक्का केवल तभी होगा जबकि परिवर्तन के लिए ट्रेड यूनियनों के माध्यम से काम किया जाए। मैंने उन्हें अपनी योजनाओं में परिवर्तन करने की मांग की और इस बात को स्वीकार कर लेने पर बल दिया कि मेरे देश में तब तक कोई 'साम्यवादी' क्रांति नहीं हो सकती जब तक कि उसकी अपनी एक प्रबल तथा प्रतिनिधित्व सम्पन्न क्रान्तिकारी टुकड़ी न हो।"

उत्तर में रूसियों ने विस्तार से यह बात स्पष्ट की कि वे भावी प्रगतियों को किस रूप में देखते हैं—इस स्पष्टीकरण में उन्होंने यह बात भी स्पष्ट कर दी कि सोमालिया तो, एक बहुत अधिक बड़ी गतिविधि की आड़ मात्र ही है। "सोमाली रिपब्लिक को पूर्वी तथा केन्द्रीय अफ्रीका, अदन, कुवैत, साउदी अरेबिया, यमन तथा बहरीन पहुँचने के लिए साम्यवादी सेतु-स्तम्भ मनोनीत किया गया है—पश्चिमी अफ्रीका में केन्द्र गिनी है। मुझे बताया गया कि हमारी सूची में विद्यमान बहुत से देशों में कम्यूनिस्ट पार्टियों की स्थापना करना अत्यन्त दुष्कर है। कुछ में जहां पार्टी है भी तो उसमें इतने कम सदस्य हैं कि बलात् अथवा समझा-बुझाकर वहाँ अधिकार-प्राप्ति का यत्न नहीं किया जा सकता।

"परन्तु सोमालिया में परिस्थिति भिन्न है : 'ग्रेटर सोमाली लीग' एक प्रबल कम्यूनिस्ट पार्टी बना दी गई है और वहां से यह आन्दोलन दूसरे पड़ोसी देशों में फैल जाएगा। सोमालिया की कबायली समस्या हल हो जाएगी—यद्यपि उन्होंने यह नहीं बताया कि कैसे हल होगी। उन्होंने मुझसे कहा—साम्यवादी होने के नाते तुम्हारा कर्त्तव्य (मास्को के) आदेशों का पालन करना है और घर लौटने पर प्रचारक के रूप में तुम्हें सौंपे हुए काम को करना है। तुम्हें चाहिए कि तुम 'सोमाली नेशनल लीग' तथा 'नेशनल युनाइटेड फ्रंट' में साम्यवादियों को घुसेड़ने का प्रयत्न करो जिससे 'ग्रेटर सोमाली लीग' के सदस्य बढ़ जायं, इसकी नई शाखाएँ स्थापित हो सकें और यह अपना आधार व्यापक कर सके। 'गुट' में अध्ययन के लिए यथासम्भव अधिक से अधिक छात्र भेजने चाहिए।"

अन्त में महदी तथा उन रूसी चालबाजों के मध्य कोई समझौता नहीं हो सका जो उसके भाग्य की योजनाएँ उपेक्षापूर्वक बना रहे थे।

प्रेग में लौटकर, इस विषय में पूरा संतोष करने के लिए कि परिस्थिति वस्तुतः उतनी ही बुरी है जितनी कि वह दिखाई देती है, उसने अन्तिम प्रयत्न किया। एक सोमालियाई छात्र सोमालिया की राजधानी मौगाडिशू को लौट रहा था; उसके द्वारा महदी ने बेरदाआद से सम्पर्क स्थापित किया; उसे जो कुछ पता लगा था उसके एक-एक अंश का समर्थन हो गया।

महदी को अब पूरा निश्चय हो गया कि साम्यवादियों, और विशेषकर रूसियों, के 'ग्रेटर सोमाली लीग' के प्रति रुख में कोई परिवर्तन नहीं कर सकेगा।

"स्पष्ट ही उन्हें होने वाली गड़बड़ की जानकारी थी...मैं केवल यही अनुमान लगा सका कि वस्तुतः वे चाहते हैं कि खूनी गृह-युद्ध हो। और विचार करने पर इसकी सम्भावना अत्यधिक लगती है : रूसी यह युक्ति

देंगे कि वे तो केवल थोड़े से विश्वस्त क्रांतिकारियों को जमा कर सकते हैं—स्पष्ट है कि एक साम्यवादी राज्य स्थापित करने के उनके अवसरों की संख्या तब और अधिक होगी जबकि अधिकार प्राप्ति की उनकी चेष्टा उस कवायली युद्ध का परिणाम होगी जिसमें कि उनके अत्यधिक कर्मठ विरोधी नष्ट हो चुके होंगे।

"मुझे यह बात भी समझ में आ गई कि मेरी स्थानापन्न विचार-धारा रूसियों को नहीं भाएगी; कारण कि मेरे विचारों का सार यही तो है कि सोमाली रिपब्लिक में साम्यवादी क्रांति का आधार अधिक व्यापक होना उचित है और यह कि इसमें सोमालियाई नेतृत्व करेंगे और क्रांतिकारी आन्दोलन के सम्बन्ध में वे स्वयं निर्णय करेंगे। इसका अनिवार्य परिणाम यह होगा कि एक स्वतन्त्र समाजवादी प्रशासन उदित हो जाएगा जो ग्रेटर सोमाली लीग द्वारा नियंत्रित प्रशासन के विपरीत, मास्को के प्रति निष्ठावान् नहीं होगा। रूसी साम्राज्यवादी इरादा तो यह नहीं ही था।"

महदी ने तब अपने अध्ययन का वेग तीव्र करने तथा शीघ्रातिशीघ्र घर लौट कर "साम्यवादी त्रास के वार को बचा लेने में" भाग लेने का निश्चय किया। वस्तुतः हुआ यह कि उसे अपना अध्ययन नहीं समाप्त करने दिया गया। चेक अधिकारियों ने साम्यवादियों के प्रति उसके बदले हुए रुख का तत्काल प्रतिकार किया और उसको 'प्रेग हाई स्कूल ऑव इकोनॉमिक्स' से निकाल दिया। बाद में उन्होंने उसको देश से बाहर फेंक दिया।

× × ×

साम्यवादी क्रांतिकारी चालबाजियों में एथोनी औकोत्चा का शिष्यत्व कठिनता से केवल आठ महीने चल पाया—और इस बात से यह प्रत्यक्ष हो गया कि साम्यवादी अभी तक रंगरूटों के चुनाव में गम्भीर गलतियाँ कर बैठते हैं; इससे इस बात का भी भलीभांति सिद्ध होना संभव है कि

साम्यवादी सिद्धांतों को मानने वालों समेत सभी विदेशी छात्रों में उनकी राष्ट्रीय स्वतंत्रता को पराजित करने के कार्यों का उत्तरदायित्व उठाने के विरुद्ध विरोध की भावना लगातार बढ़ रही है।

जब ओकोत्चा ने मास्को की "फ्रेंडशिप युनिवर्सिटी" में अध्ययन करना आरम्भ किया तो उसके मार्ग में सिद्धांत-शिक्षण तथा प्रचार की सामान्य रोक लगा दी गई। वह इस बात को स्वीकार करता है कि "यहाँ पहुँचने पर आठ सप्ताह के भीतर ही मैं और मेरी पत्नी पश्चिमी प्रजातन्त्र के विरुद्ध एक सर्व शक्ति एवं साधन सम्पन्न युद्ध की घोषणा करने के लिए तैयार हो गए थे। हमने मार्क्सवादी-लेनिनवादी मूल भूत सिद्धांत कण्ठस्थ कर लिये थे। रूसियों के घृणापात्र से घृणा करना तथा उनके पात्र से प्रेम करना हमने सीख लिया था।"

कार्यक्षम नाइजीरियाई छात्रों के चुनाव पर अपना परामर्श देने के बाद—इसमें उसने चुनाव के आधार की आलोचना की थी—उसको बिलकुल ही अचानक क्रांतिकारी प्रशिक्षण में जुटा दिया गया : "एक दिन मुझे अफ्रीकी मामलों के विशेषज्ञ, स्वाहिली को ठीक-ठीक बोल सकने वाले प्रोफेसर सोफ्रोन्चुक ने एक विशेष सभा में भाग लेने के लिए बुला भेजा। इस सभा में दो महिलाओं-समेत लगभग एक दर्जन व्यक्ति उपस्थित थे। मेरा परिचय एक बहुत ही समझदार तथा निष्ठावान् छात्र के रूप में दिया गया। एक व्यक्ति ने एक लम्बे भाषण में बताया कि अंत में तो अफ्रीका से अमरीकी तथा ब्रिटिश प्रभाव का लोप होना ही है। उसने मुझ से कहा कि छलबल तथा जासूसी देख भाल के विषय में तुम्हें सब आवश्यक प्रशिक्षण दिया जाएगा।"

ओकोत्चा को उस समय तो उसका अभिप्राय बिलकुल समझ नहीं पड़ा, परन्तु सभा के भंग हो जाने के बाद उसको मास्को के एक दूसरे भाग में ले जाया गया; यहाँ उसकी भेंट अफ्रीकी, सेंट्रल अमरीकी तथा

एशियाई देशों से ग्राए २०० छात्रों से कराई जानी थी—इन्होंने ग्रात्म-रक्षा की एक कक्षा लगा रखी थी :

"यह एक डरावना काम था। गम्भीर मुद्रा वाले, सैनिक वेषधारी व्यक्ति पिस्तौलों, राइफलों तथा सब-मशीनगनों से कक्षा को निशाना लगाने का ग्रभ्यास करवा रहे थे।

"मैंने इन २०० छात्रों को यह सिखाया जाता देखा कि पुल, रेल गाड़ी, मकान तथा ग्रौर बहुत से लक्ष्यों को बारूद कैसे लगाई जाती है। कक्षा को यह दिखाया गया कि भीड़ पर हथगोला कैसे फेंका जाता है; छुरे से ग्रादमी की हत्या शीघ्र कैसे करनी चाहिए ग्रौर रात को छापे कैसे मारे जाते हैं।"

यद्यपि ग्रौकोत्चा को तो कक्षा में सम्मिलित नहीं होना था (उसको कह दिया गया था कि "तुम तो ग्रधिकांश में योजनाकार रहोगे") तो भी उसकी इस यात्रा को प्रशिक्षण का एक ग्रंग माना गया था। वहाँ से चलने से पूर्व एक ग्रधिकारी ने उसे बताया था कि "जब ग्रौर सभी सम्भावनाएं निष्फल हो जाएं तो पीड़ित देशों के श्रमिकों के लिए शस्त्रों का ग्राश्रय लेना ग्रावश्यक होगा। यदि सोवियत सरकार ग्रपनी सीमातीत उदारता बरतती हुई शस्त्र देने की स्थिति में हो तो क्रांति के नेताग्रों को उनका प्रयोग करना ग्रवश्य ही ग्राना चाहिए।

ग्रौकोत्चा के प्रशिक्षण की ग्रगली मंजिल 'गुह्य विज्ञान' का एक भयानक तथा कठिनाई से विश्वासनीय पाठ्यक्रम था—एक 'जादूगरी-पंडित' की कक्षा एक मात्र ग्रफ्रीकी छात्रों के लिए लगाई गई थी। उसने प्रोफेसर 'सोफोंचुक' को..."प्लास्टिक की बनी मानव खोपड़ियों तथा कंकालों, प्लास्टिक के बने साँचों से" तथा दूसरी ग्रद्भुत वस्तुग्रों से "घिरा पाया।"

'सोफोंचुक' ने कक्षा को बताया तुम्हें मालूम ही है, ग्रफ्रीका के कतिपय ग्रल्पविकसित प्रदेशों के लोग बहुत ग्रंधविश्वासी हैं ग्रौर केवल उनके

अंधविश्वासों से अनुचित लाभ उठा कर ही उन्हें राजनीतिक लक्ष्यों के पक्ष में किया जा सकता है...आदिवासियों में कार्यरत एक जादूगर दर्जन भर प्रवक्ताओं से अधिक काम कर सकता है।

तब प्रोफेसर ने अपने कुछ प्रदर्शन किए : "उसने एक खोपड़ी मेज पर रख दी और उससे ऐसे आदेश जारी करवाए : 'मैं तुम्हारा पूर्वज बोल रहा हूँ। मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ कि आज रात को जाकर अंग्रेज गवर्नर की हत्या करो और उसका सिर तथा हाथ मेरे पास लाओ। यदि तुम यह नहीं कर पाए तो मैं तुम्हें तथा तुम्हारे परिवार को शाप दे दूंगा।"

"मैं गहरे समुद्र से शंगो बोल रहा हूँ। यदि तुमने कम्यूनिस्ट पार्टी में सम्मिलित होने और इसके नेताओं का कहना मानने से इंकार किया तो मैं तुम्हें ले आऊंगा।"

यह बताने के बाद कि रेडियो माइक्रोफोन द्वारा आवाजें कैसे पैदा की जाती हैं, प्रोफेसर ने कक्षा को सिखाया कि "प्रेतात्मा की आवाजों का स्वांग कैसे भरा जाता है, धुएं के बादल में भूत कैसे प्रकट किया जा सकता है, सन्दूकों में जादूगरी ध्वनियाँ कैसे उत्पन्न की जा सकती हैं, अंधेरे कमरे में कंकाल को चलता कैसे दिखाया जा सकता है, शत्रुओं के घरों में कैसे मंडराया जा सकता है और यह बहाना कैसे किया जा सकता है कि हम पर भूत आए हुए हैं।"

यद्यपि यह बात अविश्वसनीय तो प्रतीत होती है, परन्तु इन 'जादूगरी' उपकरणों के प्रयोग करने का रूसियों का इरादा बड़ा पक्का प्रतीत होता था—बाद में जब औकोत्चा को नाइजीरिया जाने का आदेश दिया गया तो उसे कह दिया गया कि वह उन्हें अपने पाठ्य-विषयों के लिए ले जा सकता है।

औकोत्चा अब अपना सारा समय राजनीतिक तथा प्रचार कार्य में दे रहा था। "मैं अन्तर्राष्ट्रीय कानून की तो बात ही भूल गया और मैंने रूसी भाषा में पारंगत होने का अपना प्रयत्न तक छोड़ दिया।" साम्य-

वादी शिक्षा को कितना अप्रधान समझते हैं यह बात ओकोत्चा की इस टिप्पणी से समझ में आ सकती है कि पढ़ना छोड़ देने पर भी "मैं विश्वविद्यालय का भला लड़का बन गया और अधिकारियों ने मुझे सर्व-श्रेष्ठ अफ्रीकी छात्र माना।"

शीघ्र ही मुझे और अधिक मान्यता मिल गई: "जनवरी १५ को हमें रैक्टर रूम्यांत्सेव ने बुलाया। उसने कहा—मुझे निर्देश दिया गया है कि मैं विश्वविद्यालय के लिए अफ्रीकी तथा ऐशियाई छात्रों की भर्ती के लिए किसी व्यक्ति को लन्दन भेजूं। मैंने देखा है कि तुम्हारा अपने लोगों पर कितना प्रभाव है। मुझे बहुत अधिक विश्वास है कि साम्य-वादी सिद्धांतों में तुम्हारी आस्था अचल है और यह कि इंगलैण्ड, जहाँ कि एफ्रो-एशियाई छात्र हजारों की संख्या में हैं, तुम्हारे लिए काम करने का बड़ा अच्छा क्षेत्र रहेगा।"

लन्दन के लिए चलने से पहले उसकी विदाई में ४ फरवरी १९६१ को दिए गए एक भोज में रुम्यांत्सेव ने ओकोत्चा तथा उसकी पत्नी से कहा मैंने तुम पर बड़ी-बड़ी आशाएं लगा रखी हैं। कुछ ही महीनों में तुम क्रमशः 'लड़ाकू साम्यवादी' बन गए हो, परन्तु उसने चेतावनी दी "भयानक आवश्यकता ने हमको यह करने के लिए विवश किया है। स्वप्न लेने का समय नहीं है केवल व्यावहारिक कार्यवाही का समय है। सुकुमारता अथवा प्रेम की बातें मत सोचो जब तक पश्चिमी साम्राज्य-वाद पर संघातक चोट न कर लो चैन की सांस मत लो।"

लन्दन में पहुँचते ही ओकोत्चा ने सोवियत दूतावास में जाकर उसके द्वितीय सचिव लियोनिद रोगोव को सब समाचार दिए; इसी ने शुरू में उसकी छात्रवृत्ति की व्यवस्था की थी।

"उसने मुझे मेरे लक्ष्य के लिए बधाई दी, मुझे कुछ धन दिया और मुझे चेतावनी दी कि मैं सावधान होकर अपनी गतिविधि को छिपाऊँ। यदि आवश्यक हो तो आड़ के लिए मैं पश्चिमी अमरीकियों के
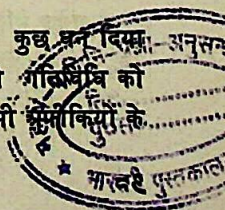
लिए अखबारों की एक दूकान फिन्सबरी पार्क में खोल लूं। विश्व-विद्यालय को भेजे जाने वाले मेरे लिखे विवरण दूतावास में पहुँचाए जाते थे और राजनयिक डाक थैले में मास्को भेजे जाते थे।"

औकोत्चा काले छात्रों के सम्पर्क में आने के काम में जुट गया। यद्यपि उसको अपनी आवश्यकतानुसार पूरा धन मिल जाता था और उसने छात्रों से तर्क-वितर्क करने में असंख्य घण्टे बिताए, वह केवल ३० छात्रों को छात्रवृत्ति की प्रार्थना करने के लिए प्रेरित कर पाया। परन्तु सोवियत एजेण्टों ने लगातार प्रोत्साहन दिया और कहा "छात्रों को भर्ती करते हुए तुम्हारा यह भी कर्तव्य है कि तुम काले लोगों में यथासम्भव अधिक से अधिक असन्तोष फैलाओ; उदाहरण के लिए, तुम्हें उन्हें 'बम पर पाबन्दी लगाओ' आंदोलन में भाग लेने के लिए उकसाना चाहिए।"

लगभग दो महीने से कुछ अधिक बाद औकोत्चा को नाइजीरिया जाने का आदेश मिला कि वह वहां जाकर दो प्रच्छन्न साम्यवादी आंदोलनों का—नाइजीरियाई यूथ कांग्रेस का तथा एक वामपक्षी ट्रेड यूनियन कांग्रेस का पुनः संगठन करे। "जिस सोवियत अधिकारी ने मुझे यह निर्देश दिया उसी ने मुझे कहा कि यह बहुत महत्वपूर्ण कार्य है। उसने कहा 'मास्को में तुमने जो कुछ सीखा है उसका इन आन्दोलनों में प्रयोग करना होगा और उन्हें छलबल तथा तोड़-फोड़ का पथ-प्रदर्शन करना होगा।' आड़ के लिए अपना सुझाव दिया कि तुम शराब की दुकान खोल लो।"

सोवियत एजेण्ट ने औकोत्चा को यह भी बताया कि दोनों आंदोलनों को सोवियत धन की 'भारी सहायता' मिलती है; यह धन उनको 'एक अंग्रेज महिला मित्र' के माध्यम से पहुँचता है और यह भी बताया कि जब नाइजीरिया की राजधानी, लाओस में सोवियत दूतावास उचित ढंग से स्थापित हो जाएगा तो प्रयोगोपयोगी सामग्री तथा साहित्य, साथ

ही जादूगरी छलकपट के लिए उपकरण राजनयिक डाक थैले में भेजे जा सकेंगे। यदि आवश्यक हुआ तो 'तुम जिस कार्यवाही में उन्हें लगाना उचित समझो उसमें नियुक्त करने के लिए' मास्को से नाइजीरियाई छात्र वायुयान से भेज दिये जाएंगे।"

३० मई को जब औकोत्चा रोगोव से अन्तिम निर्देश प्राप्त करने के लिए मिला तो उसका परिचय नाइजीरिया स्थित गुप्त साम्यवादी आंदोलनों के दो सदस्यों से कराया गया—ये मास्को जा रहे थे। "उन्होंने मुझे बताया कि सोवियत संघ की सहायता से वह केवल समय का ही प्रश्न रह जाता है कि नाइजीरिया कब तक साम्यवादी राज्य बन जाएगा। उन्हें मुझसे तथा मेरी पत्नी से बड़ी-बड़ी आशाएँ थीं। मेरी पत्नी, गवर्नर-जनरल की बहिन है, इस कारण वह सरकारी क्षेत्रों के भीतर प्रवेश कर सकेगी और कुछ रहस्य पता लगा लेगी। इस बीच यह मेरा उत्तरदायित्व होगा कि मैं साम्यवादी आंदोलनों से सम्बद्ध व्यक्तियों में से चुने हुए व्यक्तियों को जादूगरी-तरीके सिखा दूं।"

इसके बाद इस जोड़ी ने वह राजनीतिक रूपरेखा दिखाई जिसको देखकर औकोत्चा स्तब्ध रह गया :

"...मैंने देखा कि प्रच्छन्न साम्यवादी आंदोलन किस प्रकार अधिकारारूढ़ होंगे, उनके नेता किस प्रकार देश भर में आपातिक स्थिति की घोषणा कर देंगे, पार्लियामेंट को स्थगित कर देंगे और आवश्यक जान पड़ा तो रूसी सेनाओं की सहायता मांग लेंगे और वे मुखियाओं तथा अमीरों से (अधिकार का प्रतीक भूत) उनकी चौकियाँ छीन लेंगे और संविधान को नष्ट कर देंगे।"

रूपरेखा में यह भी दावा किया गया था कि १९६४ में होने वाले आम चुनावों में साम्यवादियों द्वारा जुजु-पद्धतियों का प्रयोग किया जाएगा तो वे एक लोकप्रिय मोर्चे के नेता बन जाएंगे और सर्वसाधारण जनता, देशी भाषाओं में छपी ('अफ्रीकी मनोभावनाओं के उपयुक्त चित्रों

से युक्त') सीधी-सादी विज्ञप्तियों के देश भर में वितरण द्वारा (सोवियत) समाजवाद के उद्देश्यों तथा लक्ष्यों के सम्बन्ध में 'समाजवादी ढंग से तर्क-वितर्क करने' के योग्य हो जाएगी।

इसी बीच, "विविध राजनीतिक दलों से चतुराई से काम निकालने के लिए" समय मिल जाएगा। सबसे पहले डा० एजिकिवे द्वारा स्थापित 'नेशनल कौंसिल ऑव नाइजीरिया तथा कैमरून' से निपटना होगा। रूपरेखा में दल के विविध खण्डों का वर्गीकरण, साम्यवादी अन्तः प्रवेश के उनके द्वारा किए गए सम्भावित विरोध की मात्रा के अनुसार किया गया था :

"हमारा सबसे अधिक कठिन काम नेशनल कौन्सिल ऑव नाइजीरिया तथा कैमरून' की मूल संस्था के नाम से प्रसिद्ध संस्था पर रहेगा। इसके अधिकतर सदस्य बड़ी आयु के तथा दृढ़ दृष्टिकोण वाले हैं; पश्चिमी प्रजातंत्र में इन की दृढ़ आस्था है। तीन व्यक्ति तो ऐसे हैं जिनके साथ समझौता प्रायः असम्भव है और जो बहुमत को अपने पक्ष में कर सकते हैं। उनके नाम हैं, वित्तमन्त्री चीफ ओकोटी एवो, दल का महामन्त्री श्री मैकवाइन और सूचनामंत्री श्री टी. ओ. एस. बेन्सन। ये लोग इतने लोकप्रिय हैं कि इन्हें बहिस्कृत नहीं किया जा सकता और ये इतने समृद्ध हैं कि सामान्य दबाव में नहीं आएंगे केवल एक ही बात संभव हो सकती है उनको शरीर से ही विलुप्त कर दिया जाए। रास्ते से वे जब दूर हो जाएंगे तो नाइजीरिया में समाजवाद निश्चय ही, तीव्र वेग से प्रगति करेगा।"

जो कुछ उसने पढ़ा उससे स्तब्ध हुए औकोत्चा ने दोनों नाइजीरिया-इयों से विस्तृत विवरण मांगा। आलैवैमी ने उसे खुशी-खुशी निश्चय दिलाया कि "बहुत से सिर बधिक के खाँडे के नीचे लोटते फिरेंगे।" औकोत्चा ने पूछा क्या उसके साले के साथ भी यही उपाय बरता जायेगा: ओलैवैमी ने उत्तर दिया। "ठीक है, सम्भव है, परन्तु इससे क्या ? मुझे

समझ में नहीं आता कि इससे तुम क्यों घबराते हो। तुम एक साम्यवादी हो जिसे गुप्त कार्यों के लिए प्रशिक्षित किया गया है। यदि सोवियत नक्षत्र अफ्रीका के गगन में उदित होना है तो वर्तमान शासन का विध्वंस करना ही होगा।"

औकौत्वा ने निश्चय कर लिया। वह लिखता है—"मैं यह कल्पना ही नहीं कर सका कि वे अपने आपको सच्चे नाइजीरियाई कैसे कहला सके और ऐसा भयानक षड़यंत्र रच सके। अचानक मैंने निश्चय किया कि रूस का सारा सोना लेकर भी में अपने देश को रक्तस्नान कराने पर सहमत नहीं होऊंगा।"

उसने सोवियत साम्यवाद की ओर से ओटा हुआ सारा काम एक दम छोड़ दिया और "इसको विजय मिलने का अवसर मिलने से पहले ही सोवियत विश्वासघात का भंडा फोड़ने तथा उससे संघर्ष करने के लिए" नाइजीरिया लौट आया।

क्रांतिकारी तथा आतंकवादी प्रशिक्षण के ये तीन विवरण किसी भी तरह इक्के-दुक्के नहीं हैं। जिन दूसरे छात्रों के अनुभवों का यहां वर्णन किया गया है उन्होंने भी विविधमात्राओं में यह देखा कि चीन समेत दूसरे सभी साम्यवादी देश कैसे इसका उत्तरदायित्व लेते हैं।

महदी ने ऐसा ही परिक्षण चेकोस्लोवाकिया में देखा। उसने इसको उस नये उपनिवेशवाद के एक अंश के रूप में देखा था "जो गड़बड़ पैदा करने के उद्देश्य से तथा साम्यवादी अल्पमत द्वारा अधिकार ग्रहण का मार्ग प्रशस्त करने के लिए जातीय, राष्ट्रीय, धार्मिक अथवा प्रतिद्वन्द्विताओं से अपना स्वार्थ सिद्ध करता है अथवा उन्हें उत्पन्न करता है।" और जबकि "पुराने उपनिवेशियों ने" राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन को अपने साम्राज्य भेंट कर दिए "युगोस्लाविया के अतिरिक्त कोई सा भी राष्ट्र सोवियत अभिभावकता से नहीं बच पाया है।"

वह निम्नलिखित विचार प्रस्तुत करता है: "उन लोगों को जो

निकिता ख्रुश्चेव की 'शांतिमय सहअस्तित्व की धारणा से उत्पन्न तथा-कथित अनुरक्ति से अपने आपको आश्वस्त अनुभव करते हैं, उन बातों पर विचार करना चाहिए जो कि मैंने अफ्रीका में अन्तःप्रवेश तथा परिणाम भूत साम्यवादीकरण की उसकी योजनाओं के विषय में सीखी हैं। सम्भव है कि वह—संकुचित सीमाओं में—सहअस्तित्व के लिए वस्तुतः तैयार हो, परन्तु, मेरा यह सुझाव है कि वह यह सह-अस्तित्व केवल उन्हीं देशों के साथ चाहेगा जो दृढ़ता से अपनी स्वतंत्रता को और अपने निजी भाग्य को बिना किसी बाहरी हस्तक्षेप के नियंत्रित करने के अधिकार को बनाए रखना चाहते हैं।"

# ७

# पलायन तथा चेतावनी

ये सभी छात्र अब घर लौट गए हैं—अथवा नष्ट हुए वर्षों की कमी को पूरा करने के लिए अन्यत्र अध्ययन कर रहे हैं। सैंकड़ों और भी, पहले की अपेक्षा अधिक वृद्ध, साथ ही अधिक बुद्धिमान् बन कर, साम्यवादी देशों को चुपचाप छोड़ आए हैं—जैसे केन्याई सोवियत संघ से, सूडानी पूर्वी जर्मनी से, यमनी तथा ईरानी चीन से, ब्राजीली चेकोस्लोवाकिया से।

उनके पीछे सैंकड़ों और बच गए हैं—वे भी यदि वहाँ से छोड़कर आ सकते तो अवश्य आते। एक नाइजीरियाई ने, जो औकोल्वा के चले आने के कुछ समय पश्चात् वहां से चला था, यह हिसाब लगाया था कि कम से कम आधे अफ्रीकियों का भ्रांति-निवारण हो चुका है और वे घर जाना चाहते हैं।

बहुत-सों के लिए तो स्वदेश लौटाए जाने के लिए किया गया संघर्ष

हौव्वा ही बना रहा—खून को जमा देने वाली कड़ी सर्दी की रातें प्रेग में बगीचे की बेंचों पर गुजारनी पड़ीं, दरवाजे भेड़ कर रहना पड़ा, सहमे-सहमे निष्क्रिय पड़े रहना पड़ा—फिर बलात् निकाल दिया गया। चेकोस्लोवाकिया-स्थित मैरियांस्के लाजने में पढ़े चार ब्राजीलियों को पश्चिमी जर्मनी जाने देने से पहले साम्यवादी विदेशी छात्रों ने—और उनके मुख्याध्यापक ने—पीटा। चाइल का मिगोन लगभग चार महीने तक लड़ा और वाद-विवाद करता रहा—तब कहीं वह पेकिंग से बाहर निकल पाया। औकोंक्वो को विवश होकर छल का प्रयोग करना पड़ा; उसके परिवार से यह पत्र भिजवाना पड़ा कि वह कई आवश्यक घरेलू समस्याओं को सुलझाने के लिए घर लौट आए। रूसियों ने उसे जाने दिया, परन्तु उसकी परीक्षा के प्रमाणपत्र इसलिए रोक लिए कि वह लौट आए—परन्तु औकोंक्वो ने यह दूरदर्शिता बरती कि रूस छोड़ने से पहले उन प्रमाणपत्रों की फोटोस्टैट (Photostat) प्रतिलिपियां करवालीं।

इन सभी छात्रों ने किसी-न-किसी मात्रा तक अपने साथी देश-वासियों को यह चेतावनी देने के वचन का पालन किया है कि वे वही गलतियां न करें जो उन्होंने की हैं, और उनकी मातृ-भूमियों पर जो साम्यवादी साम्राज्यवादी दांत है वह कितना भयानक है यह भी जता दिया है। उनके अनुभवों का इतना व्यावहारिक मूल्य तो है ही।

परन्तु कुछ दूसरे तथ्य भी हैं—विशेषकर 'गुट' में रह गए छात्रों से सम्बद्ध—उनसे सम्बद्ध जो जाने का विचार कर रहे हैं और उन देशों से सम्बद्ध जो उनको जाने देते हैं।

जब तक पृथक्-पृथक् राष्ट्रों की यह असामर्थ्य बनी रहेगी कि वे सभी शैक्षणिक मांगें पूरी नहीं कर सकते, तब तक साम्यवादी देश कुछ विदेशी छात्रों के सन्मुख आकर्षक भविष्य प्रस्तुत कर ही सकेंगे।

परन्तु सामान्यतः तो ऐसा लगता है कि एक नियत प्रकार के व्यक्ति ही इनको स्वीकार करेंगे।
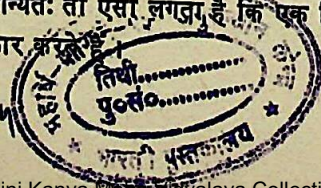
किसी साम्यवादी विश्वविद्यालय अथवा कालेज में जाने वाले प्रत्येक छात्र की तुलना में ग्यारह छात्र गैर-साम्यवादी देशों में अध्ययन करना पसन्द करते हैं। इस लक्ष्य से, साथ ही इस तथ्य से कि स्वतन्त्र संसार के विश्वविद्यालयों में उच्चतर मान्यताप्राप्त प्रवेश-योग्यताओं की मांग की जाती है, ध्वनित होता है कि साम्यवादियों के अतिरिक्त अयोग्य प्रायः अथवा सर्वथा योग्यताहीन युवक ही 'गुट' में जाता है।

यह तो निश्चित ही प्रतीत होता है कि साम्यवादियों को इस बात की चिन्ता नहीं है—और यह कोई नई बात नहीं होगी कि शायद छात्र-वृत्तियां प्रस्तुत करने का उनका मुख्य प्रयोजन उच्चस्तर की उदार अथवा तकनीकी शिक्षा की व्यवस्था करना न होकर यथासम्भव अधिक से अधिक युवकों को सिद्धान्त-शिक्षा देना ही हो।

छात्र जितना कम तीव्रबुद्धि होगा उतना ही अधिक इस प्रक्रिया के अधीन हो सकेगा। वह उस विचारधारा की ओर अधिक सफलता से आकर्षित हो सकेगा जो प्रत्यक्षतः तो सभी प्रश्नों का उत्तर देती है—जिस विचारधारा की स्थूल रूपरेखाओं को तोते की भांति रटा जा सकता है और आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक प्रगति के लिए छोटा मार्ग प्रस्तुत करने का दावा करके छात्र को राष्ट्रीयता की दृष्टि से आकर्षक लगती है। जिस शिक्षा के वास्तविक मूल्य को जांचने के लिए न तो उसको अनुभव है और न इतनी बुद्धि ही है, उसको प्रस्तुत किया जाने पर वह शीघ्र ही उसे स्वीकार कर लेगा।

साथ ही वह साम्यवादी जीवन की वास्तविकता से असन्तुष्ट भी अधिक सरलता से हो सकता है और फिर अध्ययन में अथवा सैद्धांतिक अथवा क्रान्तिकारी प्रशिक्षण में अपना मन लगाने की ओर भी उसका झुकाव कम होगा और 'गुट' को छोड़कर शिक्षा की समाप्ति कर देगा —एक दूसरे प्रकार का "भ्रान्तियुक्त" छात्र !

यह मान कर कि छोड़ कर जाने वाले एक के बदले सैंकड़ों

ऐसे भी होंगे जो बने रहेंगे, साम्यवादी यह संकट उठाने के लिए तैयार रहते प्रतीत होते हैं। इसके अतिरिक्त, साम्यवादी अपनी भूलों से शिक्षा ग्रहण करते हैं—हाल में लौटे हुए बहुत से छात्रों ने सूचना दी है कि साम्यवादी अधिकारी अपने अतिथियों से अब पहले की अपेक्षा अधिक शिष्ट व्यवहार करते हैं।

जहां तक अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवाद का सम्बन्ध है इस स्थिति को पर्याप्त सन्तोषजनक समझा जा सकता है, परन्तु छात्र के मूल देश को इससे आश्वासन नहीं मिल सकता।

अजाओ ने कुछ समय ब्रिटेन में अध्ययन करते हुए बताया था उसे यह देख कर आश्चर्य हुआ—तथा यह बात कुछ प्रशंसनीय भी लगी—कि ब्रिटेन अपनी उच्च शिक्षा संस्थाओं में पढ़ने वाले विदेशी छात्रों के राजनीतिक विकास के प्रति पूरी-पूरी उपेक्षावृत्ति रखता है।

किसी साम्यवादी विश्वविद्यालय से लौटा, ज्ञान के स्थान पर विचार-धारा में पगा, छात्र पर्याप्त भयानक हो सकता है। अधिक से अधिक अच्छी बात यह हो सकती है कि वह शायद किसी विदेशी आस्था का तर्क द्वारा मण्डन करने वाला हो; बुरी से बुरी बात सम्भवतः यह हो कि यदि उसे क्रांतिकारी कर्मण्य अथवा छलिया बनने का प्रशिक्षण दिया गया है। तो वह अपनी मातृभूमि की स्वतंत्रता, सुरक्षा तथा आत्म-निर्भता की दृष्टि से गम्भीर भयजनक सिद्ध हो।

सैद्धान्तिक तथ्यों को छोड़ भी दें तो भी देश की व्यावसायिक, वैज्ञानिक अथवा तकनीकी जनशक्तियों में वृद्धि की दृष्टि से साम्यवादी देश में शिक्षित छात्र का मूल्य स्वतंत्र-संसार में शिक्षित छात्र की अपेक्षा कम रहता है, कारण यह है कि साम्यवादी देशों की स्नातक परीक्षाओं का स्तर निम्न है और वहां जो शिक्षा मिलती है उसके अधिकांश का स्थानीय दशाओं से मेल नहीं खाता।

साम्यवादी शिक्षा के अन्धकूपों को बहुत से देशों ने विविध मात्राओं

में मान्यता दी है। भारत; बर्मा, इंडोनेशिया (ख्रुश्चेव ने 'मास्को फ्रेंडशिप युनिवर्सिटी' की स्थापना का समाचार पहले पहल यहीं दिया था) नेपाल तथा ईराक ने फ्रेंडशिप युनिवर्सिटी के लिए छात्रों को सीधा भर्ती करने की सोवियत नीति के उत्तर में यह आग्रह किया कि छात्रों का चुनाव वे करेंगे। औरों ने 'गुट' की छात्रवृत्तियों की स्वीकृति पर रोक लगा दी है।

बीसवीं सदी की यह एक दूसरी दुःखद घटना है कि आज शिक्षा—(एक सन्तति के उसके वंशजों को मिलने वाले उपहारों में से सबसे अधिक महत्व का उपहार) सैद्धान्तिक और अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ों का विषय बन गयी है। परन्तु दुर्भाग्य की बात यह है कि स्वतंत्र संसार को यह मान्यता देनी पड़ी है कि साम्यवादियों ने शिक्षा को 'शीत युद्ध' का विवादास्पद विषय बना दिया है।

और साम्यवादियों ने भले ही शिक्षा को भ्रष्ट कर दिया हो, यदि स्वतंत्र संसार ज्ञान के क्षितिज को खुला रखने के लिए किए गए अपने प्रयत्नों को नहीं बढ़ाता तो वह भी भावी पीढ़ी की दृष्टि में अपराधी ही जँचेगा।

## आगमें जले

त ऊदपुर गांवमें गत रहस्यमय ढंगसे लगी न पेड़ जलकर राख हो ूल और शीशमके थे।

उक्त गांवमें जब लोग क 'महाभारत' देख रहे ाके मंदिरसे सटे वनमें गयी। हवाके झोकोंके ली और ऊंची लपटोंके कुछ ग्रामीणोंने यह दृश्य जिसपर काफी संख्यामें ाये और काफी प्रयासके ा लिया।

डको लेकर क्षेत्रमें है।

## नहीं जोड़ा ज

वाराणसीके सांसद एवं नवनियुक्त के वित्त उपमंत्री श्री अनिल शास्त्रीने आश्वासन दिया है कि वाराणसीका प्रस्ता दूरदर्शन स्टूडियो चालू पंचवर्षीय योजना काम करने लगेगा। इसके साथ वाराणसीको लखनऊ दूरदर्शन केन्द्रसे जोड़ा जायगा।

शनिवारको केन्द्रीय .पमंत्री पदकी श लेनेके बाद नयी दिल्लीसे भेजे गये संदेशमें शास्त्रीने अपने संसदीय क्षेत्रकी जनत विश्वास दिलाया है कि मैं इस जिम्मेदारीका निर्वाह पूरी ईमानदारी अ सचाईके साथ करूंगा। उन्होंने यह भी कहा है कि राष्ट्रहितमें वाराणसीकी जनताकी भावनाओं और उनकी आशाओंके अनुरूप अपने कार्यक्रमों और चुनावके पूर्व एवं बादमें किये गये वायदोंको पूरा करनेकी कोशिश करूंगा। श्री शास्त्रीने बताया कि दूरदर्शन

कहा है कि उक्त कार्यालयमें घूसखो दबंगईके कारण नागरिकोंमें गहरा क्ष व्याप्त है।

नेता द्वयने कहा है कि २८ अप्रै मुख्यमंत्रीके काशी आगमन पर उन्हें संभी परिवहन कार्यालयके भ्र ...ारकी वि जानकारी दी जायगी।

## भोजनसे हालत बिगड़ी

(१ का शेष)

ोगोंमें से मात्र एक गीता भरती थी। अस्पतालके जरिये रोगियोंके पेटसे ांचके लिए सुरक्षित रख ाक्टर यह स्पष्ट बतानेमें पदार्थके कारण भोजन न उनका अनुमान है कि भोजन या मिटाईमें ामक बैक्टीरियासे

नसे लोगोंके बीमार घटनाएं सैयदराजा वैवाहिक समारोहोंके लोग विषाक्त ए। उक्त ा कस्बेमें व्यक्तिके घर र) के रामगढ़ ायी हुई थी। रात्रिमें ारोहके दौरान भोजन अधिक बारातियों और

घनश्याम गुप्तके यहां ले जाकर उपचार शुरू कराया गया। शेष गंभीर रोगियोंको चन्दौली स्थित कमलापति त्रिपाठी राजकीय चिकित्सालयमें भरती कराया गया जहां सोमवार तक उनकी दशामें सुधार हो गया था।

सैयदराजा क्षेत्रके बरंगा गांवमें रविवारकी ही रात श्री रामचन्द्र शर्माके यहां वैवाहिक समारोहके दौरान विषाक्त भोजन करनेसे लगभग ४० लोग बीमार हो गये। श्री शर्माके यहां दरवेशपुर ग्रामसे बारात आयी थी। ये बाराती छेनेकी मिटाई खानेके बाद ही उल्टी करने लगे। यहां से १० रोगियोंको ले जाकर कस्बेके ही डाक्टर घनश्याम गुप्तके यहां उपचार कराया गया जबकि लगभग ३० रोगियोंको चंदौली स्थित राजकीय अस्पताल भेजा गया।

## रहस्यमय स्थितिमें विवाहिता जली

## न्यायिक कार्यों से विरत रहेंगे

ज्ञानपुरको जिला बनानेकी लेकर ज्ञानपुर न्यायालयके अधिवक्ता अप्रैल न्यायिक कार्यसे विरत रहेंगे।

यह निर्णय गत दिनों ज्ञानपुर असोसियेशनकी हुई बैठकमें किया ग जिला निर्माणके सम्बन्धमें अधिवक्ताओं पुनः बैठक ५ अप्रैलको दिनमें डेढ़ पुस्तका कक्षमें होगा। इस बैठ आगेके कार्यक्रमके सम्बन्ध विचार-विमर्श किया जायगा।